नग़मा-ए-बुलबुल

डॉ. कुँवर वीरेन्द्र विक्रम सिंह
गौतम

नग़मा-ए-बुलबुल

ग़ज़ल संग्रह

डॉ. कुँवर वीरेन्द्र विक्रम सिंह गौतम

नग़्मा-ए-बुलबुल (ग़ज़ल संग्रह)

[ई-पुस्तक]

प्रथम संस्करण: जुलाई 2022

निवेदन

ई-पुस्तक के रूप में तैयार ग़ज़लों का यह संकलन ग़ज़ल के आशिक़ों को समर्पित है। इस संग्रह की ग़ज़लें लहभग 13 माह के विश्राम के बाद लिखी गई हैं। यह संग्रह मई 2021 में प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह **मील के पत्थर** (ई-पुस्तक) की 127 ग़ज़लों के अतिरिक्त हैं। ग़ज़लों के आकलन का काम ग़ज़ल के आशिक़ों का है।

डॉ. कुँवर वीरेन्द्र विक्रम सिंह गौतम
बी-607, सत्या एन्क्लेव, लेक एवेन्यू, कांके रोड, राँची – 834 008

दिनांक: 25 जुलाई 2022

अनुक्रम

ग़ज़लें

1: सुकून वस्ल में किसको नसीब होता है

सुकून वस्ल में किसको नसीब होता है,
ख़याल-ए-यार गर सू-ए-रक़ीब होता है।

मैं उसके सामने देता हूँ हाज़िरी हर दिन,
कभी-कभी सुना है वो मुजीब[1] होता है।

[1] ध्यानपूर्वक देखने वाला

मिले नासेह ख़ुश-दिली से कभी रिंदों से,
ख़याल ऐसा अजीब-ओ-ग़रीब होता है।

सामने ग़ैरों के अपनों से क्या गिला-शिकवा,
करने वाला तो कोई बे-तहज़ीब होता है।

हाल-ए-रोज़गार पर है नज़र ग़ैरों की,
हाले-दिल पूछता है जो हबीब[2] होता है।

[2] दोस्त

किसी को मौत की ख़्वाहिश नहीं करते देखा,
अगरचे आदमी **अजल-नसीब**[3] होता है।

[3] नश्वर

मानते लोग हैं पर मानता नहीं 'गौतम',
मय वो पीता है जो पक्का अदीब[4] होता है।

[4] साहित्यकार/शाइर

2: ज़िंदगी में कोई इस क़दर कामयाब न हो

ज़िंदगी में कोई इस क़दर कामयाब न हो,
आदमी ज़िंदा हो और **लुत्फ़-ए-इज़्तिराब**[1] न हो।

[1] व्याकुलता का आनंद

हमको मंज़िल से ज़ियादा रहेगी फ़िक्र-ए-सफ़र,
शरीक-ए-कारवाँ में गर कोई अहबाब[2] न हो।

[2] दोस्त

पैरहन[3] अतलस[4]-ओ-कमख़ाब[5] का फबता है मगर,
औज-ए-हुस्न[6] बे-मानी है गर हिजाब न हो।

[3] पोशाक [4] रेशमी [5] बूटी-दार कीमती कपड़ा [6] हुस्न की शान

सवाल का जवाब ही सुकून देगा उसे,
कोई ख़ामोशी से गर होता लाजवाब न हो।

ये बात और है आँखों में रात कटती है,
गैर मुमकिन है नज़र में सहर का ख़्वाब न हो।

बे-वजह मजमा लगाने से फ़ायदा क्या है,
पैदा तक़रीर से गर जोश-ए-इंक़िलाब न हो।

बज़्म में उसकी बुलाने पे क्यों जाए 'गौतम',
जाम तो पेश हो लेकिन अदब-आदाब न हो।

3: चलना क़दम मिलाके है दस्तूर-ए-कारवाँ

चलना क़दम मिलाके है दस्तूर-ए-कारवाँ,
मंज़िल से बे-ख़बर हों चाहे अहल-ए-कारवाँ।

माना सफ़र तवील[1] है बा-हौसला चलिए,
रखिए बनाए आबलों[2] में **ताब-ओ-तवाँ**[3]।

[1] लंबा [2] छाले [3] हिम्मत और सामर्थ्य

आते हैं पेश हर-क़दम पुर-ख़तर मसाइल[4],
करता है हक़-आगाह[5] सबको शोर-ए-कारवाँ।

[4] समस्याएँ [5] सत्य से परिचय

बा-ख़बरदार लोग भी पहचानते नहीं,
रहज़न है कौन साथ में है कौन हम-नवाँ।

आता नहीं है काम ज़ाइचा[6] भी सफ़र में,
ढक लेता हर सितारे को है गर्द-ए-कारवाँ।

[6] जन्म-कुण्डली

दिल मानता नहीं है मगर सच तो यही है,
हर दौर-ए-रवाँ में रहा वक़्त पहलवाँ।

क्यों तिश्नगी की हद्द न इसको कहें 'गौतम',
ढूँढा था **ख़ुद-सराबों**[7] में कल आब-ए-रवाँ।

[7] अपनी मृगतृष्णा

4: जब कभी मोहतरम बे-वजह मेहरबान हुए

जब कभी मोहतरम बे-वजह मेहरबान हुए ,
नक़्श-ए-हैरत[1] बने हम और परेशान हुए।

[1] हैरान सूरत

मेरी ग़ैरत ही मुझे शर्मसार करने लगी,
हमारे नाम दर्ज जब कभी एहसान हुए।

फ़क़ीर लगते हैं अंदाज़-से लिबास-से हम,
मगर मिज़ाज से हर-हाल हम सुल्तान हुए।

कूचा-ए-यार में दीदार-ए-तमन्ना लेकर,
गए दीवानावार जब बहुत हलकान हुए।

ज़ुबाँ पे हर्फ़-ए-तमन्ना कभी नहीं लाए
मरहले[2] इश्क़ के दुश्वार-तर आसान हुए।

[2] चरण

दफ़्न बे-नाम हो गए हैं हज़ारों 'गौतम',
कितने अफ़साने ज़माने में **बे-उन्वान**[3] हुए।

[3] बिना नाम/शीर्षक

5: जिस्म ढोना शिकस्ता-पाँव की लाचारी है

जिस्म ढोना **शिकस्ता-पाँव**[1] की लाचारी है,
सू-ए-मंज़िल चले जाते हैं सफ़र जारी है।
[1] थके पाँव

बदला-बदला हुआ **अंदाज़-ए-अयादत**[2] है,
लबों पे चारागर के **हर्फ़-ए-ग़म-गुसारी**[3] है।
[2] रोगी का हाल-चाल लेना [3] सांत्वना के शब्द

ठहर गए हैं घड़ी भर जो सांस लेने को,
ख़बर उन्हें भी है बाकी अभी रहदारी है।

लब-ए-ख़ामोश से इज़हार हो नहीं पाता,
नज़र में उसकी अगरचे **अहद-निगारी**[4] है।
[4] लम्बे समय की व्यथा

वक़्त पर वक़्त को हमने नज़र-अंदाज़ किया,
वक़्त अब कम है यही वज्ह-ए-बे-क़रारी है।

दरिया-ए-ज़ीस्त पार करना है तन्हा 'गौतम',
सुकून दे रहा गो **ख़्वाब-ए-हम-किनारी**[5] है।
[5] सबके साथ का सपना

6: अभी आँख में थोड़ा पानी बाक़ी है

अभी आँख में थोड़ा पानी बाक़ी है,
इस दिल में थोड़ी नादानी बाक़ी है।

माना सब किरदार लग रहे पहचाने,
सुनते रहिए अभी कहानी बाक़ी है।

संजीदा लग रहे सभी को अलबत्ता,
अभी शोख़ की शोख़-बयानी बाक़ी है।

मुझ पर ग़ौर नहीं करते हैं मक़्तल में,
क़ातिल में ख़ू-ए-नादानी बाक़ी है।

सफ़र मुकम्मल हो जाएगा सागर तक,
जिस दरिया में ज़ोर-ए-रवानी बाक़ी है।

कौन क़यामत तक अब यहाँ क़याम करे,
मगर दहर में दाना-पानी बाक़ी है।

बस सुकून के दो-पल ही चाहे हमने,
पर क़िस्मत की आना-कानी बाक़ी है।

मंसूबे नापाक नहीं पूरे होंगे,
जब तक कोई हिन्दुस्तानी बाक़ी है।

खिचे-खिचे वो रहे हमेशा 'गौतम' से,
और आज भी खींचा-तानी बाक़ी है।

7: तन्हा आई नहीं तन्हाई है

तन्हा आई नहीं तन्हाई है,
साथ बे-लफ़्ज़ सदा आई है।

सर-ब-ज़ानू मैं बैठ जाता हूँ,
बात जब गुज़री याद आई है।

ऐसे मौके सफ़र में आते हैं,
कुँआँ आगे है पीछे खाई है।

वस्ल-ओ-हिज्र के शैदाई को,
नीद जब आई क़ज़ा-आई है।

लुत्फ़-ए-दीदार के दीवाने को,
मस्लहत[1] किसकी काम आई है।

1 नसीहत

बात-बे-बात की जिसने तौबा,
ज़िन्दगी उनसे बाज़-आई है।

कोई शिकवा-गिला नहीं 'गौतम',
जो है वह जल्वा-ए-ख़ुदाई है।

8: किसलिए हमने उठाए मसअले

किसलिए हमने उठाए मसअले[1],
लोग तो आए थे सुनने चुटकुले।
[1] मुद्दे

वलवले[2] कुछ दिल में होने चाहिए,
दिल-लगी को हैं ज़रूरी मश्ग़ले [3]।
[2] जोश [3] शौख़

किसलिए हम ढूँढते बुनियाद को,
रू-ब-रू जो थे हवाई थे क़िले।

बरसर-ए-महफ़िल[4] **क़सीदा-गो**[5] जुटे,
आप क्यों करने गए शिकवे-गिले।
[4] एन सभा [5] चापलूस

करते हैं तस्दीक़ दीवाने सभी,
इश्क में मारे गए अच्छे-भले।

नापते हैं जो परिंदे आसमाँ,
लौटते हैं घोंसले में दिन-ढले।

रहमत-ए-दरिया रही तब तक रहे,
क़तरा-क़तरा हो गए फिर बुलबुले।

शेख़-ओ-बरहमन बैठे साथ फिर,
देखिए 'गौतम' नया क्या गुल खिले।

9: जिस्म बोझल है आँख बोझल है

जिस्म बोझल है आँख बोझल है,
यार दिलकश नज़र से ओझल है।

लबों को खोलकर बताए क्या,
उसका चेहरा ही बहुत वोकल है।

लुट गई इश्क की ज़मींदारी,
हुस्न के हाथ आई फ़ैसल[1] है।

[1] निर्णय (डिक्री)

कोई उम्मीद सवारी की नहीं,
सू-ए-मंज़िल वो गया पैदल है।

ख़्वाब जंगल का लिए आँखों में,
जिसको तोड़ा है एक कोंपल है।

नया दीवाना है वह सहरा का,
पास पानी की रखता बोतल है।

क़ुत्ब[2] की ओर किसलिए देखे,
पास में उसके मैप-ओ-गूगल है।

[2] सितारा

सारे चैनल हैं नावाक़िफ़ उससे,
नाम 'गौतम' है शख़्स लोकल है।

10: आदतन दीवाना ला-परवाह है

आदतन दीवाना ला-परवाह है,
फ़ितरतन वह शोख़ बे-परवाह है।

दावा मुंसिफ़ से किया मक़्तूल ने,
मेरा क़ातिल चश्म-दीद गवाह है।

हक़ से आशिक़ कहता कू-ए-यार को,
यह गली तो अपनी आरज़ू-गाह है।

इश्क में मुफ़लिस कोई होता नहीं,
असली सरमाया तो दर्द-ओ-आह है।

माना मैं काफ़िर हूँ मुझको है यकीं
ख़ुदा मेरा भी तरक़्क़ी-ख़्वाह है।

शर्त है उसकी वो बोले बज़्म में,
पास जिसके **क़िस्सा-ए-कोताह**[1] है।

[1] छोटा किस्सा

ज़ेब-ए-महफ़िल[2] उसे हैं मानते,
आता बे-नाग़ा है और चुप-शाह है।

[2] सभा की रौनक

चारागर देंगे दवा 'गौतम' जिसे,
भूख से ज़्यादा **ग़म-ए-जाँ-काह**[3] है।

[3] दुःख से मरणास्सन

11: गिला-गुज़ारी में भी पास-ओ-लिहाज़ रहे

गिला-गुज़ारी[1] में भी **पास-ओ-लिहाज़**[2] रहे,
मता-ए-दर्द-ए-जिगर[3] से **बे-नियाज़**[4] रहे।

[1] शिकायत करना [2] ध्यान और सम्मान [3] मूल्यवान दिल-दर्द [4] निस्पृह

ज़ौक़-ए-सज्दा[5] बदस्तूर बना कर रक्खा,
दुआ भी दी उसे वो **क़ाबिल-ए-एज़ाज़**[6] रहे।

[5] प्रणाम का मजा [6] सम्मान के लायक

हद्द-ए-तलब से मजबूर ही ज़िद करते हैं,
सारी महफ़िल में उसी पर निगाह-ए-नाज़ रहे।

शिकवा करता नहीं है वह ग़लत-अंदाज़ी का,
फ़िक्र है कितने आशिक़ाँ नज़र-अंदाज़ रहे।

गुफ़्तगू के लिए फ़ुर्सत नहीं मिल पाई कभी,
दिल-ए-ख़ामोश में **अफ़्कार-ओ-अल्फ़ाज़**[7] रहे।

[7] चिंताएं और शब्द

आरज़ू-ए-दिल-ए-'गौतम' है, भीड़ में कोई -
हमक़दम-हमसफ़र-हमदर्द-ओ-हमराज़ रहे।

12: हमें देखकर फिर उधर देखते हैं

हमें देखकर फिर उधर देखते हैं,
वो क्या है जो अहल-ए-नज़र देखते हैं।

ख़ुदा की ख़ुदाई की जल्वागरी है,
जिसे रोज़ **शम्स-ओ-क़मर**[1] देखते हैं।

[1] तारे और चाँद

फ़लक से परे कोई दुनिया हो शायद,
ज़मीं से जो **ज़ौक़-ए-नज़र**[2] देखते हैं।

[2] शौक़ीन नज़र

हमारे लिए कुछ तो है उसके दिल में,
हमें भी कभी इक-नज़र देखते हैं।

जो बीमार अच्छा हुआ है दुआ से,
उसे ग़ौर से चारागर देखते हैं।

बहुत दूर है वो पहुँच से किसी की,
क्यों पुर-आबला-पा शिखर देखते हैं।

जिसे हाशिए पर जगह दी नहीं थी,
कहानी में उसका ज़िकर देखते हैं।

बयाँ दर्द-ए-दिल करते तफ़सील से क्यों,
बयाँ होते जब बे-असर देखते हैं।

सिकन्दर समझता रहा जिसको 'गौतम',
उसे आजकल पुर-फ़िकर देखते हैं।

13: ख़ुशी ला-इंतिहा शदीद हुई

ख़ुशी **ला-इंतिहा**[1] शदीद[2] हुई,
हिलाल-ए-ईद[3] दिखा, ईद हुई।
[1] असीमित [2] अत्यधिक [3] ईद का चाँद

नूर उतरा सभी के चेहरे पर,
दीद **पुर-लुत्फ़-ए-मज़ीद**[4] हुई।
[4] अत्यधिक आनंद से भरपूर

सब से मिलकर गले क़रार मिला,
फिर नई **अज़्म-ओ-उमीद**[5] हुई।
[5] संकल्प और आशा

ज़बान चख के सेवई मीठी,
जश्न-ए-ईद की मुरीद हुई।

फ़रीद[7] दिन है ईद का 'गौतम',
रोज़ा-दारी बहुत मुफ़ीद[8] हुई।
[7] अतुलनीय [8] लाभकारी

14: नापना होगा फ़लक गर आब-ओ-दाना चाहिए

नापना होगा फ़लक गर आब-ओ-दाना चाहिए,
माना हर पंछी को शाख़-ए-आशियाना चाहिए।

वक़्त है टिकता नहीं, हालात भी टिकते नहीं,
मुफ़लिसी में भी **सुरूर-ए-जावेदाना**[1] चाहिए।
[1]अंतहीन मस्ती

इश्क़ में दीवाने की सुनिए ये हद्द-ए-इल्तिजा
जो सितम हो शोख़ का वो ज़ालिमाना चाहिए।

मुतमइन कैसे करें दैर-ओ-हरम, जिस शख़्स के
शौक़-ए-सज्दा को नाज़-ए-आस्ताना चाहिए।

दुश्मनों से करते हैं उम्मीद-ए-पास-ओ-लिहाज़,
यारों का याराना उनको आज़माना चाहिए।

अगरचे है तय नहीं रोज़ाना हो दीदार-ए-यार,
यार के कूचे में हर दिन आना-जाना चाहिए।

एक क़यामत जैसी हो जाती है तन्हाई तवील[2],
अजनबी लोगों से भी मिलना-मिलाना चाहिए।
[2]लम्बी

ज़िन्दगी पर माना 'गौतम' ज़ोर चलता है नहीं,
हक तो कम-से-कम अजल[3] पर मालिकाना चाहिए।
[3]मृत्यु

15: कल पूछ लिया उसने मेरा हाल बे-ग़रज़

कल पूछ लिया उसने मेरा हाल **बे-ग़रज़**[1],
उसकी है मेहरबानी कहा मैंने **अल-ग़रज़**[2]।

[1] अनिक्षा से [2] संक्षेप में

महफ़िल में कर रहे थे उसी को सलाम सब,
जिसको बनाया शोख़ ने आशिक़-ए-मुअज़्ज़ज़[3]।

[3] सम्मानित

हद्द-ए-निगाह में जो है उसकी तलब नहीं,
आख़िर में ज़रूरी ज़मीन होती है दो-गज़।

पैसों से नहीं मिलती है हर चीज दहर में,
मिलती है सबको मौत उसकी जान की एवज़।

परहेज़ ही बेहतर है दवा और दुआ से,
कहते सभी हैं इश्क़ को कमबख़्त बद-मरज़।

आना वो अयादत के लिए गाहे-ब-गाहे,
मुश्ताक़-ए-जाँ-नवाज़ी[4] का अंदाज़ है महज़।

[4] दिल खुश करने की इच्छा

महफ़िल में उसकी देखकर हैरान है 'गौतम',
बैठे क्यों ग़रज़-मंदों की सफ़ में हैं बे-ग़रज़।

16: सुनाए नग़्मा-ए-बुलबुल थे कल मौज-ए-तरन्नुम में

सुनाए नग़्मा-ए-बुलबुल थे कल मौज-ए-तरन्नुम में,
फ़रोज़ाँ सबने देखी थी शमा लब-ए-तबस्सुम में।

न खींचो नक़्शा-ए-जन्नत हमारी आँखों में ज़ाहिद,
यक़ीं है यारों के हम साथ पहुँचेंगे जहन्नुम में।

यक़ीनन सू-ए-ख़ुम देखा नहीं नासेह को जाते,
निशाँ उसके लबों के हमने पाए हैं लब-ए-ख़ुम में।

ख़ुदा-वंदों के क़ब्ज़े में है माना अहल-ए-दुनिया,
मगर मयख़ाना-ए-दुनिया है साक़ी के तहक्कुम[1] में।

[1]अधिकार में

गिला-शिकवा मुनासिब है नहीं हालात से करना,
निखरती ज़िन्दगी देखी गई अश्क-ओ-तबस्सुम में।

उठाकर कासा-ए-दस्त-ए-दुआ क्यों मांगता रहमत,
तलातुम[2] का गिला करता नहीं है जो तज़ल्लुम[3] में।

[2]उथल पुथल [3]कराह में

अगरचे बे-ज़बाँ रहता है 'गौतम' सामने सबके,
हमेशा हुस्न बे-पर्दा किया **तर्ज़-ए-तकल्लुम**[4] में।

[4]कलाम करना/बोलना

17: क्योंकर हुक्म-उदूली हो

क्योंकर हुक्म-उदूली हो,
आशिक़ अगर उसूली हो।

चांद-सितारे तोड़ेगा,
काम अगर मामूली हो।

क्यों ना जाएं कू-ए-यार
गर कुछ वक़्त फ़ुज़ूली हो।

ख़फ़ा नहीं मक़्तूल अगर,
क़ातिल की माज़ूली[1] हो।

[1] मनाही

सज्दे में सिर रख देंगे,
थकन ग़ैर-मामूली हो।

मरने पर महसूल न हो,
वहाँ लगी एक सूली हो।

सारी बातें रट लेगा,
गर बंदा स्कूली हो।

कौन कलाम सुने तेरा,
'गौतम' तुम मामूली हो।

18: आँख से बहता था दरिया खो गया

आँख से बहता था दरिया खो गया,
डूबने का था जो ज़रिया खो गया।

इस शहर में आया था कुछ ढूँढने,
ख़बर आई है कि हरिया खो गया।

दूर से पहचान लेते थे जिसे,
धूप में होकर वो करिया खो गया।

बाँह का तकिया बचा है पास में,
साथ जो लाया था बोरिया खो गया।

अजनबी भी लगते थे अपने हमें,
देखने का वह नज़रिया खो गया।

या-ख़ुदा 'गौतम' भी है कहने लगा,
जो दहर[1] में था दहरिया[2], खो गया।

1 संसार 2 नास्तिक

19: जन्नत-ओ-हूर की बातों का मज़ा लेते हैं

जन्नत-ओ-हूर की बातों का मज़ा लेते हैं,
रिंद नासेह की सोहबत का जज़ा[1] लेते हैं।

[1]ईनाम

ख़ुलूस[2]-ए-दोस्ती है वज्ह-ए-तर्क-ए-तौबा,
दोस्ती के लिए ही मय बे-मज़ा लेते हैं।

[2]सम्मान

पहले तो आदतन लेते हैं लुत्फ़-ए-गुस्ताख़ी,
फिर उसके बाद हँस-के लुत्फ़-ए-सज़ा लेते हैं।

उससे रहता है क्यों नाराज़ **रक़ीब-ए-बद-ख़ू**[2],
शुक्रिया बोलकर **दुआ-ए-क़ज़ा**[3] लेते हैं।

[2]बुरे स्वभाव वाला प्रतिद्वंद्वी [3]मौत की दुआ

यूँ तो एक क़िस्सा-ए-तवील पास है उसके,
लोग हँसते हैं जब वह **इज़्न-ओ-रज़ा**[4] लेते हैं।

[4]आज्ञा और सहमति

साथ करता नहीं 'गौतम' कभी हिस्सेदारी,
अपने हिस्से की हम सज़ा-ओ-जज़ा लेते हैं।

20: निकल गए हैं बहुत दूर तो बस याद करें

निकल गए हैं बहुत दूर तो बस याद करें,
लौट सकते नहीं मजबूर, न फ़रियाद करें।

हथकड़ी सांसों की जब तक नहीं खोली जाए,
जिस्म को क़ैद में रहने दें, दिल आज़ाद करें।

ये भी सोचें वो ले रहा हो अगर खोज-ख़बर,
अपने अश्कों से उसे किसलिए नाशाद करें।

सुआ तो हो गया आज़ाद क़ैद-ए-पिंजर से,
जकड़ के अपने-आप को न दिल सैय्याद करें।

एक आधार चाहिए सगुण को निर्गुण का,
कहा था कृष्ण ने अर्जुन से ये भी याद करें।

यही बेहतर है अपने कदमों पर दौड़ा जाए,
कोई बैसाखी चाहिए तो हमें याद करें।

बारिश-ए-अश्क को वर्षा नहीं कहता 'गौतम',
हँसी लबों पे हो वर्षा को अगर याद करें।

21: क़ुर्बत-ए-यार के बिना तस्कीन हो कैसे

क़ुर्बत-ए-यार[1] के बिना तस्कीन[2] हो कैसे,
तन्हाई है **ख़ामोश-तर**[3] तहसीन[4] हो कैसे।
[1]प्रिय की संगत, [2]चैन [3]कोलाहल हीन [4]प्रशंसा

आँखों को बंद करने से आती है माना नींद,
कटती है ग़म की रात भी यक़ीन हो कैसे।

नादीदा[5] हादसों को मिलेंगे कहाँ गवाह,
जो है शिकार वो तमाशबीन हो कैसे।
[5]अनदेखे

निकला है सरेराह वह मानिंद-ए-आफ़ताब,
वाजिब है यह सवाल मह-जबीन हो कैसे।

मय की सिफ़त बुरी है बताते हो रिंद को,
ला-तजरबात[6] हो तो फिर ज़हीन हो कैसे।
[6]अनुभव हीन

हल्का है दिल में दर्द तो मिलिए तबीब[7] से,
समझाएगा वो मामला संगीन हो कैसे।
[7]चिकित्सक

जुल्म-ओ-सितम की आशिक़ी करती है ये सवाल,
एक **बे-हज़ीन**[8] **ज़ार-ओ-हज़ीन**[9] हो कैसे।
[8]जिसे दुःख न हो [9]रुआसा और दुखी

माना उठाने के लिए सिर पर है आसमान,
यह फ़िक्र कर पैरों तले ज़मीन हो कैसे।

इसका जवाब तो नहीं 'गौतम' के पास भी,
यारों के बिना शाम ये रंगीन हो कैसे।

22: बहस तो होनी थी ख़ुदाई पर

बहस तो होनी थी ख़ुदाई[1] पर,
बहस होने लगी आक़ाई[2] पर।
[1]ईश्वर की सत्ता [2]स्वामित्व

सलाम-ओ-सज्दा कर रहा होगा,
खुश है जो इज़्ज़त-ए-रुस्वाई पर।

आशिक़ाँ कर रहे हैं हंगामा,
पस-ए-पर्दा हैं मुँह-दिखाई पर।

सु-ए-मक़्तल गए हैं दीवाने,
सिर के बल हौसला-अफ़ज़ाई पर।

कलाम कर रहे हैं ज़ख़्म-तलब,
शोख़ की हुस्न-ए-तुरपाई पर।

बयाँ था करना हमें दर्द-ए-दिल,
लोग रोते रहे महँगाई पर।

लोग आए थे अयादत के लिए,
बात ठहरी बुत-ए-हरजाई पर।

ख़याल-ए-क़ुर्बत-ए-महबूब रहा,
फ़ख़्र कर आलम-ए-तन्हाई पर।

हम भी क़ुर्बान हो गए 'गौतम',
उसकी तरकीब-ए-शनासाई[3] पर।
[3]परिचय / मित्रता

23: फ़ुर्सत नहीं है हमको ग़म-ए-रोज़गार से

फ़ुर्सत नहीं है हमको ग़म-ए-रोज़गार से,
फ़ुर्सत के ही पल मांगे हैं परवरदिगार से।

कुछ ख़ुशनसीब शख़्स भी होते हैं दहर[1] में,
आराम जिन्हें मिलता है दीदार-ए-यार से।
[1] संसार

हम **नीम-जाँ**[2] थे बेख़बर कल रात ख़्वाब में
क्या कहने कौन आया दिल-ए-बेक़रार से।
[2] आधे होश में

लूटी हुई पतंग से बहला लिए बच्चे,
गुब्बारा ख़रीदा नहीं अपनी पगार से।

गिर्दाब[3] में उम्मीद नाख़ुदा[4] से कुछ नहीं,
आवाज़ दे रहा है क्यों हमको कगार से।
[3] भंवर [4] मल्लाह

महफ़िल में उसकी इसलिए जाता नहीं 'गौतम',
देखे हैं **बा-वक़ार**[5] खड़े **बे-वक़ार**[6] से।
[5] आदरणीय [6] गए-गुज़रे

24: काश! एक दोस्त बा-वफ़ा होता

काश! एक दोस्त बा-वफ़ा होता,
साथ जो हँसता, **दम-ख़फ़ा**[1] होता।

[1]साथ झगड़ने वाला

दोस्ती का यही तक़ाज़ा है,
बैठकर साथ **वा-असफ़ा**[2] होता।

[2]साथ हाय हाय करना

रूठना और मनाना बाहम[3],
रोज़ होता और सौ-दफ़ा होता।

[3]परस्पर

दोस्ती होती गर **ब-सिद्क़-ओ-सफ़ा**[4],
दोस्त दिल से नहीं ख़फ़ा होता।

[4]सत्य और साफ़

शाम बे-बात गर बिगड़ जाते,
सुब्ह-दम सुल्ह-ओ-सफ़ा होता।

जान तो दोस्त की अमानत है,
दोस्ती का यह फ़ल्सफ़ा होता।

होता बीमार बा-ख़ुशी 'गौतम',
दोस्त गर **दस्त-ए-शिफ़ा**[5] होता।

[5]उपचार करने वाला हाथ

25: माँ के आँचल में तौलिया देखा

माँ के आँचल में तौलिया देखा,
उसकी सूरत में औलिया[1] देखा।

[1]संत जैसा

लोरी सुनते ही नींद आती थी,
माँ में उस्ताद गोइया[2] देखा।

[2]गाने वाला

माँ से फ़रमाइशें करने वाले,
बच्चे को बनता शौक़िया देखा।

सिर टिका लो तो चैन आ जाए,
हमने सीना नहीं तकिया देखा।

गर ख़तावार हुए अब्बा के,
माँ को बनते बिचौलिया देखा।

लबों पे उसके हमेशा सबने,
दुआ-ए-नूर-ओ-ज़िया[3] देखा।

[3]आभा

कर्ज़ माँ का चुका नहीं पाया,
बच्चा होता दीवालिया देखा।

जीस्त के सफ़्हों में माँ गुम है कहीं,
उसको पाया जब हाशिया देखा।

26: बात गर साफ़ बताई होती

बात गर साफ़ बताई होती,
किसलिए देनी सफ़ाई होती।

बात बन सकती थी रफ़्ता-रफ़्ता,
समझदारी तो दिखाई होती।

याद रखने के लिए एलबम में,
एक तस्वीर सजाई होती।

हम तो तैयार थे आने के लिए,
एक आवाज़ लगाई होती।

किसलिए करते तर्क-ए-उम्मीद,
कोई उम्मीद जगाई होती।

उसके कूचे में मुस्तक़र[1] होता,
दिल में गर उसके रसाई[2] होती।

[1]निवासी [2]रास्ता

मरहले[3] हमने सर किए होते,
आपने राह बताई होती।

[3]चरण (बाधाएं)

रब्त[4]-ए-बाहमी[5] बना रखते,
साथ फिर सारी ख़ुदाई होती।

[4]संबंध [5]परस्पर

आप गर हाथ बढ़ाते 'गौतम',
हमने दीवार गिराई होती।

27: मरीज़-ए-इश्क़ बे-फ़िकर देखे

मरीज़-ए-इश्क़ बे-फ़िकर देखे,
बहुत लाचार चारागर देखे।

काम नुस्ख़ा नहीं आया कोई,
दस्त-ए-शिफ़ा[1] बे-हुनर देखे।
[1] चिकित्सक का हाथ

साफ़-गोई पसंद है जिसको,
किसलिए वो इधर-उधर देखे।

हम हैं हालात से मायूस नहीं,
हमने हैं **दश्त-ए-पुर-ख़तर**[2] देखे।
[2] खतरों से भरा मरुथल

तेज़-रफ़्तार सफ़र तय करते,
आबला-पा हैं कारगर देखे।

आज़माइश के लिए हाज़िर हैं,
ज़ोर-ए-बाज़ू सितमगर देखे।

बयान आपका दिलचस्प सही,
मसअले हमने हैं दीगर देखे।

यहीं जन्नत-ओ-जहन्नुम देखा,
कौन अब अलहदा दहर देखे।

तौबा तौबा ये आलम-ए-ख़ुश्की,
हुई मुद्दत है चश्म-तर देखे।

दिन ढले लौटकर शब आएगी,
कौन उठकर नई सहर देखे।

अजल का खौफ़ क्या करे 'गौतम',
आए दिल देखे और जिगर देखे।

28: कूचा-ए-यार में रहते हैं ला-परवाह नहीं

कूचा-ए-यार में रहते हैं ला-परवाह नहीं,
रक़ीब होते हैं रक़ीब, ख़ैर-ख़्वाह नहीं।

ये ज़रूरी तो नहीं साथ हम-नज़र ही हो,
बस यक-निगाह जो आए हो बद-निगाह नहीं।

ये कू-ए-इश्क़ है न कर तलाश-ए-इशरत[1],
यहाँ तो गलियाँ ही गलियाँ हैं शाहराह नहीं।

[1] ख़ुशी/मज़ा

सनसनी-खेज़ ख़बर है हुआ है हंगामा,
मिला है चश्म-दीद एक भी गवाह नहीं।

तेज़-रफ़्तार शहर में किसे फ़ुर्सत होगी,
यहाँ कोई किसी से मिलता ख़्वाह-मख़ाह नहीं।

गए जो कू-ए-यार से हैं सू-ए-मयख़ाना,
मुरीद दैर[2]-ओ-हरम[3]-ओ-ख़ानक़ाह[4] नही।

[2] मंदिर [3] मस्जिद [4] मठ/आश्रम

किसलिए मान लें हम उसको आदमी 'गौतम',
जिसके सीने में एक **हंगामा-ए-कोताह**[5] नहीं।

[6] छोटा-सा विद्रोह/विरोध

29: गिला-गुज़ारी मशग़ला है ख़ास अपनों से

गिला-गुज़ारी[1] मशग़ला[2] है ख़ास अपनों से,
नवाज़ता[3] है आशिक़ों को वह उलहनों[4] से।
[1] शिकायत करना [2] शौख़ [3] पुरुस्कृत करना [4] शिकायत

वो रू-ब-रू रहे रोज़ाना सर-ए-बज़्म मगर,
बहल रहा है दिल हमारा उसके सपनों से।

लगाई हाज़िरी हमने भी आस्ताने पर,
निशान छोड़ा नहीं है जबीं-ओ-घुटनों से।

अगरचे मिलते थे रक़ीब दुश्मनों की तरह,
मिले कहीं अगर हमको लगे हम-वतनों से।

चलो अच्छा हुआ नासेह है खफ़ा हमसे,
सोहबत-ए-साक़ी ने बचाया **कोर-ज़ेहनों**[5] से।
[5] कमअक़्ल

कोई उम्मीद किसलिए करी जाए 'गौतम',
मिले जो वादा-ए-विसाल **अहद-शिकनों**[6] से।
[6] वादा तोड़ने वाले

30: वक़्त अपनी चाल से चलता रहा

वक़्त अपनी चाल से चलता रहा,
आदमी अपने को ही छलता रहा।

दौड़कर पाँवों में निकले आबले,
गिर के घुटना फूटता-छिलता रहा।

सबसे आगे भागने की चाह में,
रोज़ अपने-आप को दलता रहा।

ख़्वाब पर बीनाई की बंदिश न थी,
ख़्वाब-नोशी का हुनर खिलता रहा।

पैरहन ने था बचाया जिस्म को,
मौसमों की मार से गलता रहा।

वक़्त था तब वक़्त को समझा नहीं,
वक़्त गुज़रा दस्त फिर मलता रहा।

ज़र्द पत्ते शाख़ से झरते रहे,
शजर लेकिन फूलता-फलता रहा।

चश्म पर रंगीन चश्मा डालकर,
साया समझा धूप को, जलता रहा।

तोलने बैठा था हर रिश्ते को जब,
आप ही मीज़ान[1] पर तुलता रहा।

[1]तराजू

मांगते तारीख़ पर तारीख़ थे,
फ़ैसला होने को था, टलता रहा।

सफ़र में 'गौतम' मिले थे कारवाँ,
आदमी तन्हा मगर चलता रहा।

31: एक बद-हाल बे-ख़याल मिला

एक बद-हाल बे-ख़याल मिला,
एक दीवाना बे-मिसाल मिला।

फूटी-कौड़ी नहीं है पास मगर,
वो मसर्रत से माला-माल मिला।

धूप से **बे-सर-ओ-दस्तार**[1] आया,
हाथ में तर-ब-तर रूमाल मिला।

[1] सर पर बिना पगड़ी के

नींद बे-ख़्वाब मिलेगी उसको,
सफ़र का ये हसीं मआल[2] मिला।

[2] परिणाम

आज ख़ाली ही रहा दस्त-ए-दुआ,
जो मिला आज तंग-हाल मिला।

उसने दीदार की तमन्ना की,
फिर उसे वादा-ए-विसाल मिला।

पता पूछा था बादा-ख़ाने का,
उसे नासेह से अक़वाल[3] मिला।

[3] प्रवचन

जवाब देखें कुछ मिले शायद,
आज सीधा हमें सवाल मिला।

इश्क़-ए-बुत में सभी को 'गौतम',
दर्द-ए-दिल मिला वबाल मिला।

32: सोचता हूँ पहल करी जाए

सोचता हूँ पहल करी जाए,
आज अपने से गल[1] करी जाए।
[1]बात (पंजाबी शब्द)

कोई ऐसी जगह मिले पहले,
गुफ़्तगू बे-ख़लल करी जाए।

आज इंसान की तरह मिलिए,
बात **अल-हक़**[2] की कल करी जाए।
[2]सत्य की (ईश्वर की)

ज़िन्दगी गर ख़ुदा की नेमत है,
ज़ाया[3] क्यों **बे-शग़ल**[4] करी जाए।
[3]बर्बाद [4] अकारण

दैर-ओ-हरम में जुदा क्या है,
यह पहेली भी हल करी जाए।

मश्क़[5]-ए-शेर में उस्ताद हुए,
आज पूरी ग़ज़ल करी जाए।
[5]अभ्यास

दोस्ती को परख लिया हमने
दुश्मनी **हम-बग़ल**[6] करी जाए।
[6]साथ रखना

फ़िक्र में जीना गर हुई आदत,
फ़िक्र-ए-मुसलसल करी जाए।

जिसका सानी नहीं कोई 'गौतम',
चलिए उसकी नक़ल करी जाए।

33: जो बैठे अक्स-ए-सहरा हैं उन्हें सैराब कर देना

जो बैठे **अक्स-ए-सहरा**[1] हैं उन्हें सैराब[2] कर देना,
शजर-बे-बर्ग[3] को ऐ अब्र-तर[4] आदाब[5] कर देना।

[1] मरुथल सामान [2] भिगोना [3] बे-पत्ता [4] पानी वाले बादल [5] अभिवादन

हमारी आँख में बे-आब हैं कुछ ख़्वाब, चुभते हैं,
बरा-ए-मेहरबानी आँख को शादाब[6] कर देना।

[6] हरा

सराबों[7] ने किया **मायूस-कुन**[8] तिश्ना-लबों को है,
ऐ अब्र-ए-सियह फटकर सहरा में सैलाब कर देना।

[7] मृगतृष्णा [8] हताश

उम्मीद-ए-ख़ैर[9] से बेताब सब्ज़ा भी है बुलबुल भी,
अब हर मीज़ाब[10] को पायाब[11] से सर्याब[12] कर देना।

[9] आशावादी [10] जलधार [11] घुटने तक पानी [12] सर तक पानी

फ़लक हो **अब्र-आलूदा**[12] जिधर जाए नज़र 'गौतम',
दिखाकर रक़्स-ए-ताऊस दिन नायाब कर देना।

[12] बादलों से लदा

34: चर्चा-ए-ख़ुल्द से सब रिंद परेशान हुए

चर्चा-ए-ख़ुल्द[1] से सब रिंद परेशान हुए,
मियाँ नासेह जब मयख़ाने में मेहमान हुए।

[1] स्वर्ग की चर्चा

आज मुंसिफ़ से शिकायत करी है क़ातिल ने,
सिर्फ मक़्तूल क्यों मक़्तल के इज़्ज़-ओ-शान हुए।

सलाम पेशतर उसने किया सर-ए-महफ़िल,
हमारी जान पर ता-उम्र के एहसान हुए।

हमें ख़बर थी रहगुज़र की और मंज़िल की,
तलाश-ए-हमसफ़र में बे-वजह हलकान हुए।

हद्द-ए-वहम है या दौर-ए-आख़िरी-ए-जुनूँ,
मरहले इश्क़ के दुश्वार भी आसान हुए।

हमें अजल की आरज़ू बनी रही 'गौतम',
क़र्ज़-ए-ज़िन्दगी के किश्तों में भुगतान हुए।

35: उफ़क़ का रंग स्याह गहरा है

उफ़क़ का रंग स्याह गहरा है,
एक तूफ़ान का मज़हरा[1] है।
[1]लक्षण

ज़ेहन फ़िल-वक़्त बे-ख़याल सही,
क़ल्ब[2] में एक चेहरा-मोहरा है।
[2]ह्रदय

जज़्ब-ए-तलब[3] लिए साहिल पर,
बारहा सिर पटकता लहरा[4] है।
[3]इच्छा लिए [4]लहर

सहर का रंग ख़ुश-गवार नहीं,
चार-सू फैला हुआ कोहरा है।

ज़ख़्म-ए-इश्क़ ला-इलाज रहा,
पैकाँ[5] पैवस्त बहुत गहरा है।
[5]तीर का फल

और राहत की आरज़ू क्योंकर,
दर्द गर मीठा-मीठा ठहरा है।

नाला-गर[6] को ख़बर करो 'गौतम',
हुस्न है शोख़ नहीं बहरा है।
[6]चीख कर रोने वाला

36: वो अज़्म-ए-सफ़र है दिशा भाँपता होगा

वो **अज़्म-ए-सफ़र**[1] है दिशा भाँपता होगा,
वो सफ़रगीर[2] **नक्श-ए-पा**[3] तलाशता होगा।
[1]यात्रा के लिए प्रतिबद्ध [2]यात्री [3]पैर के निशान

आसानी से तय होता नहीं है सफ़र तवील[2],
वो तेज़ तेज़ चलते हुए हाँफता होगा।
[2]लम्बा

ठोकर का ख़ौफ़ लाज़मी होता है सफ़र में,
वो हर क़दम बढ़ाते हुए काँपता होगा।

माना है फ़लक-आश्ना मासूम परिंदा,
उड़ने से पहले हौसला वो नापता होगा।

सूरज के साथ साथ चल रहा है मुसाफ़िर,
वो एक मुहाजिर[3] या सज़ा-याफ़ता होगा।
[3]शरणार्थी

अंदाज़-ए-संजीदगी से लगता है 'गौतम',
इन रास्तों से ख़ास उसका वास्ता होगा।

37: आरज़ू है, कार-ए-ला-सानी करें

आरज़ू है, **कार-ए-ला-सानी**[1] करें,
मुफ़लिसी[2] में शौक़ सुल्तानी करें।
[1] बेमिसाल काम [2] दरिद्रता

ज़िन्दगी तो एक दिन देगी दगा,
फ़लसफ़ा-ए-मौत[2] **ला-फ़ानी**[3] करें।
[2] मृत्यु-दर्शन [3] अमर

फिर तबीयत में रवानी चाहिए,
आओ कोई काम तूफ़ानी करें।

मुख़्तसर[4] है क़िस्सा-ए-जज़्बात-ए-दिल,
किसलिए तम्हीद[5]-ए-तूलानी[6] करें।
[4] छोटा-सा [5] भमिका [6] लम्बी

आह को देखा है होते बे-असर,
ज़ब्त[7] से सोज़[8]-ए-जिगर[9] पानी करें।
[7] सब्र [8] आग/गर्मी [9] दिल

उम्र 'गौतम' जिस्म की कुल चार दिन,
इश्क़ करना है तो रूहानी करें।

38: जाने-पहचाने मिले अजनबी ज़बान लिए

जाने-पहचाने मिले अजनबी ज़बान लिए,
ख़ुद को दरपेश किया है दबी-ज़बान लिए।

देखने आए थे हालात-ए-जाँ आँखों से,
हमने ख़ुश होके दिल पे **बार-ए-एहसान**[1] लिए।

[1] आभार का भार

वही गली वही कूचा वही हैं दीवाने,
मिलेगा कौन वहाँ इल्म[2]-ओ-इरफ़ान[3] लिए।

[2] ज्ञान [3] विवेक

सफ़र-तलब लिए हैं साथ ख़्वाहिश-ए-बेजा,
आदमी चल रहा है साथ में ज़िंदान[4] लिए।

[4] जेल

किया क़ातिल ने था मक़्तूल को ग़र्क़-ए-हैरत,
रू-ब-रू था खड़ा मुंसिफ़ के इत्मिनान लिए।

कितने मसरूफ़-ओ-मशग़ूल लोग हैं 'गौतम',
बज़्म में बैठे हैं सब मेरी दास्तान लिए।

39: दिलम को देखा गड़बड़ी करते

दिलम[1] को देखा गड़बड़ी करते,
रह-ए-उल्फ़त में हड़बड़ी करते।

[1] मैं (स्वयं)

फ़क़ीर-आश्ना अगर होते,
पैरहन हम भी गूदड़ी करते।

शोख़ को रहना है पस-ए-पर्दा,
फिर हैं दीवार क्यों खड़ी करते।

दिल में पास-ओ-लिहाज़-ए-मेहर रहा,
इसलिए ज़िद नहीं कड़ी करते।

हम तो ज़ंजीर के दीवाने हैं,
अलहदा क्यों कड़ी-कड़ी करते।

होती उम्मीद गर सुनवाई की,
हम शिकायत घड़ी-घड़ी करते।

दूर हो सकता था गिला-शिकवा ,
बैठकर बात दो-घड़ी करते।

हमने सीखी नहीं है लफ्फ़ाज़ी,
बात वर्ना बड़ी-बड़ी करते।

कूचा-ए-यार को ज़िंदान[2] समझ,
ज़ुल्फ़-ए-यार हथकड़ी करते।

[2] जेल

हाज़िरी देते हैं सभी उसको,
आप क्योंकर हैं हेकड़ी करते।

शहर-ए-हुस्न से शिकायत है,
आप जंगल में झोपड़ी करते।

साफ़गोई तो ठीक है 'गौतम',
कभी-कभी चिकनी-चुपड़ी करते।

40: मानता हूँ, नहीं ज़रूरी है

मानता हूँ, नहीं ज़रूरी है,
सोचना आदत-ओ-मजबूरी है।

आज के दौर में सब कहते हैं,
काम तो आती जी-हुज़ूरी है।

तर्क-ए-गुफ़्त-ओ-गू करें वाइज़,
रिंद के हाथ में अंगूरी है।

वादा-ए-शिकनी एक अदा ठहरी,
पैदा करती मगर रंजूरी[1] है।

[1] दुःख

फ़ैसले मानते हैं महफ़िल के,
दोस्त! यह दौर-ए-जम्हूरी है।

सनम-परस्त रह के सजदे में,
लिए ख़याल-ए-ख़ौफ़-ए-दूरी है।

तिफ़्ल हैं सोचते नहीं 'गौतम',
जवाँ के दिल में ला-शुऊरी है।

41: लोग शातिर हैं ढील देंगे फिर लपेटेंगे

लोग शातिर हैं ढील देंगे फिर लपेटेंगे,
मौका-ए-गुफ़्त-ओ-गू मिले तो और फेटेंगे।

राख हो जाते हैं अंगारे छोड़ देने पर,
हवाएँ देंगे तो शोलों के साथ दहकेंगे।

गिला-ओ-शिकवा करना हुस्न की अदा माना,
इश्क़ पर इंहिसार[1] हैं तो नहीं रूठेंगे।

[1] भरोसा

ढूँढने निकले हैं ताबीर शब के ख़्वाबों की,
दिन ढले ख़्वाबों को दफ़ना के लोग लौटेंगे।

ये सबक़ तिफ़्लों[2] से है सीखने लायक 'गौतम',
झगड़ के पल में एक साथ फिर मिल-बैठेंगे।

[2] बच्चे

42: सिर्फ़ दो-गज़ के ज़मीं-दार हैं सब

सिर्फ़ दो-गज़ के ज़मीं-दार हैं सब,
ख़ाक-ज़ादे हैं ख़ाकसार हैं सब।

ख़ाक ही ओढ़ना बिछाना है,
इसी विर्से[1] के तो हक़दार हैं सब।
[1] विरासत

यार जो काम वक़्त पर आए,
वगरना साथ के बेकार हैं सब।

जिसको देखा, गया रोते रोते
बे-वजह कहते थे तैयार हैं सब।

चंद तामीरी[2] इरादे लेकर,
बंद आँखें किए बेदार[3] हैं सब।
[2] सोचे-समझे [3] होश में

जुदा है शौक़-ए-अदाकारी,
एक नाटक के गो किरदार हैं सब।

राहत-ए-जाँ किसे नसीब हुई,
दस्त-ए-ख़ाली अज़ादार[4] हैं सब।
[4] मातम करने वाले

लाख रू-पोश[5] सब करें 'गौतम',
दिल ख़ता-कार गुनहगार हैं सब।
[5] छिपा हुआ

43: आईना दिखता साफ़-सुथरा है

आईना दिखता साफ़-सुथरा है,
अक्स-ए-जात[1] नहीं निखरा है।

[1]अपना प्रतिबिम्ब

चांद पूरा नज़र नहीं आया,
किसी भूखे ने इसे कुतरा है।

कोई उम्मीद अभी बाक़ी है,
गौर से देख रहा पतरा[2] है।

[2]कुण्डली

ज़िन्दगी से बहुत शिकायत है,
मौत के साथ बड़ा नख़रा है।

रात भर होते हैं करवट करवट,
ज़ेहन में कोई भूला-बिसरा है।

साँस राहत की चारागर लेंगे,
बुख़ार-ए-इश्क़ अगर उतरा है

जाँच कर ख़ुर्दबीन से पाया,
ख़ून सबका ही लाल गहरा है।

ख़्वाब आकर पलट गए 'गौतम',
थकी पलकों का सख़्त पहरा है।

44: नाख़ुदा से ही सब भिड़े होंगे

नाख़ुदा[1] से ही सब भिड़े होंगे,
सूखे दरिया से क्यों लड़े होंगे।

[1] मल्लाह

हुस्न पर किसलिए लगे तोहमत,
आशिक़ों ने किए झगड़े होंगे।

चीख़ ही दर्द का पैमाना नहीं,
नापते ज़ोर-ए-फेफड़े होंगे।

हौसला नापने को सहरा का,
तिश्ना-लब लाए फावड़े होंगे।

अब कुआँ खोदने की सोची है,
घर में बे-आब सब घड़े होंगे।

एक अंदेशा-ए-बवाल लिए,
भीड़ में लोग कुछ खड़े होंगे।

ठंड का धूप में गुमाँ होगा,
तर पसीने से जब कपड़े होंगे।

दाग़ पेशानियों पे स्याह हुए,
आस्तानों पे फिर रगड़े होंगे।

चलिए तफ़्तीश कीजिए 'गौतम',
फ़ैसले लेने अब कड़े होंगे।

45: एक भी पत्ता सर-ए-शाख़ नहीं

एक भी पत्ता **सर-ए-शाख़**[1] नहीं,
टुकड़ा-ए-साया **तह-ए-शाख़**[2] नहीं।

[1] डाल के ऊपर [2] डाल के नीचे

हुए परदेसी साकिनान[3]-ए-शजर[4],
बा-परिंदा[5] **शाख़-दर-शाख़**[6] नहीं।

[3] निवासी [4] पेड़ [5] पंछी सहित [6] एक भी डाल

चांद-तारों को गिन रहे हैं अभी,
नींद रूठी है लगी आँख नहीं।

फाड़ डाले हैं सफ़हे[7] माज़ी[8] के,
भूलता पर **दिल-ए-गुस्ताख़**[9] नहीं।

[7] पृष्ठ [8] अतीत [9] शरारती दिल

दिल-जले दिल टटोल कर देखें,
सुना है होता है सब राख नहीं।

ज़र्द पत्ते समेट लेगी सब,
दिल तो आँधी का है फ़राख़ नहीं।

चारागर पूछते हैं बाइस-ए-दर्द,
दिल में क्यों करते हैं सुराख़ नहीं।

दिल में मीठी ख़लिश रही 'गौतम',
नज़र का तीर था सलाख नहीं।

46: मय-ख़ानों का देखा है रोज़ कार-ए-अजब

मय-ख़ानों का देखा है रोज़ **कार-ए-अजब**[1],
दिन ढलने पर होता है शुरू **दौर-ए-तरब**[2]।

[1] विचित्र कार्य [2] आनंद का समय

मसरूफ़[2]-ओ-बदहाल[3]-ओ-मजबूर-ओ-बेकस[4],
एक जाम के लिए करेंगे शोर-ओ-शग़ब[6]।

[2] व्यस्त [3] बुरी स्थिति में [4] असहाय [5] शोर और हल्ला करना

जन्नत का मज़ा जाम में लेने लगे हैं रिंद,
नासेह का बेकार हुआ **ग़ैज़-ओ-ग़ज़ब**[7]।

[7] गुस्सा/चिल्लाना

मुफ़लिस को लग रहा है वो सुल्तान हो गया,
माहौल ख़ुश-गवार है **अफ़्सून-ए-अजब**[8]।

[8] आश्चर्यजनक आकर्षण

दैर-ओ-हरम का फ़र्क़ ग़र्क़ जाम में हुआ,
साक़ी में रिंद को दिखा है **नूर-ए-हूरब**[9]।

[9] हूर की झलक

है कारोबार-ए-ज़िंदगी से रिंद बे-फ़िकर,
उसको कहोगे रिंद तो मानेगा **ख़ुश-लक़ब**[10]।

[10] उपाधि मिलना

अब होश किसे दीन-ओ-दुनिया का है 'गौतम',
लगने लगा ख़याल मौत का भी बुल-अजब।

47: कहाँ सहरा में आब-ओ-साया

कहाँ सहरा में आब-ओ-साया,
सराब ने है सिर्फ़ भटकाया।

अहद-ए-इश्क़ ने बर्बाद किया,
तल्ख़ी-ए-ग़म है बचा सरमाया।

यूँ तो मुद्दे कई थे ज़ेर-ए-बहस,
भूख का मुद्दा बहुत गर्माया।

मुद्दई के गवाह ने अक्सर,
मुद्दई को है बहुत चौंकाया।

बार-ए-एहसान है सितमगर का,
हाल-ए-दिल पूछने चला आया।

मरने वाले को दी गई राहत,
ख़्वाब जन्नत का गया दिखलाया।

बे-शुऊरों को किसलिए 'गौतम',
साफ़-गोई का शौक़ चर्राया।

48: इक शमा से रक्खा रौशन जिस्म-ए-फ़ानूस को

इक शमा से रक्खा रौशन जिस्म-ए-फ़ानूस को,
गोशा[1]-ए-दिल में सजाया चेहरा-ए-मानूस[2] को।

[1]कोना [2]परिचित

हम हिरासाँ[3] शिद्दत[4]-ए-आज़ार[5]-ए-उल्फ़त से हैं
किस तरह कोई संभालेगा दिल-ए-मायूस को।

[3]तबाह [4]तेजी [5]मुसीबत

ख़्वाब जन्नत के दिखाता रोज़ ही नासेह है,
रिंद सब देने लगे हैं बद्दुआ मनहूस को।

नज़रिया अहल-ए-दहर का इश्क़ में मख़्सूस[6] है,
दिल में पिन्हा[7] रखते आए राज़-ए-मख़्सूस को।

[6]विशेष/मुख्य [7]गुप्त

अगले दिन की कशमकश का बोझ सीने पर लिए,
सहर तक हमने संभाला आँखों में काबूस[8] को।

[8]दुःस्वप्न

बे-दिली यक-लख़्त ही 'गौतम' पे तारी हो गई,
बज़्म ने हैरत से जब देखा था **अहल-ए-ख़ुलूस**[9] को।

[9]निष्कपट लोग

49: ख़्वाब ला-हासिल सही

ख़्वाब **ला-हासिल**[1] सही,
ख़ुश-नज़र[2] बातिल[3] सही।
[1] अप्राप्य [2] आकर्षक [3] झूठे

जान-ओ-दिल को अज़ीज़,
वह मेरा क़ातिल सही।

दिल हवाले कर दिया,
हुस्न है ग़ाफ़िल सही।

याद कर लेते हैं हम,
दोस्त बे-क़ाबिल सही।

चुन लिया गिर्दाब को,
रू-ब-रू साहिल सही।

कारवाँ तो साथ है,
सफ़र बे-मंज़िल सही।

चलना है 'गौतम' चलो,
रास्ता मुश्किल सही।

50: सफ़र में की नहीं महसूस हमसफ़र की कमी

सफ़र में की नहीं महसूस हमसफ़र की कमी,
शिद्दत-ए-धूप[1] में खलती रही शजर[2] की कमी।

[1]धूप की तेजी [2]पेड़

नज़र उठा के सम्त[3]-ओ-सू[4] किसे तलाश करें,
सम्त-दर-सम्त है **हम-ज़ेहन**[5]-ओ-नज़र की कमी।

[3]दिशा [4] राह [5]एक सोच वाले

आरज़ू उसकी तवज्ज़ोह की थी सबके दिल में,
नहीं थी मेरे रक़ीबों में नामवर की कमी।

सुना है लम्हा-भर में बदलती हैं तक़दीरें,
रही है साथ में ता-उम्र लम्हा-भर की कमी।

शब-ए-दैजूर[6] है और दिल में है ग़म-ए-हिज्राँ,
झील में भी लगेगी **अक्स-ए-क़मर**[7] की कमी।

[6]बिना चाँद की रात (अमावस की रात) [7]चाँद का प्रतिबिम्ब

लोग दिलचस्पी से सुनते हैं दास्तान-ए-दिल,
क़िस्सा-गोई नहीं आती, है इस हुनर की कमी।

मैं कोसता क्यों दिल-ए-बद-नसीब को 'गौतम',
यक़ीं है हर्फ़-ए-दुआ में थी असर की कमी।

51: ख़ुश-फ़हम हैं बंद करते हर गली

ख़ुश-फ़हम हैं बंद करते हर गली,
मौत आती ढूँढकर संकरी गली।

नाकाबंदी सख़्त कर के देख लो,
बे-तमन्ना ज़िन्दगी की बेकली।

बे-सर-ओ-सामान आसाँ है सफ़र,
बांध लेते हैं मुसाफ़िर पोटली।

पास में कप भर नहीं पानी बचा,
ख़्वाहिशों की आँच पर है केतली।

रफ़्ता रफ़्ता हो गए हैं महीन-तर,
वक़्त ने रोकी नहीं पर ओखली।

ज़िन्दगी से लाख हो शिकवा-गिला,
ज़िन्दगी फिर भी लगी प्यारी-भली।

ख़्वाब हैं, मंसूबे हैं 'गौतम' कई,
ज़ेहन में रहती है हरदम खलबली।

52: फ़ुर्सत मिले तो आयें अयादत के वास्ते

फ़ुर्सत मिले तो आयें अयादत[1] के वास्ते,
नाराज़ अगर हों तो शिकायत के वास्ते।

[1] हाल-चाल लेने

हैराँ हूँ परेशाँ हूँ ग़म-ओ-दर्द से बे-हाल,
कुछ देर ठहर जाएँ तबीअत के वास्ते।

सजदा किए बगैर है मिलता नहीं सवाब,
लाज़िम है सनम एक अक़ीदत के वास्ते।

दिल-ओ-दिमाग़ रखना है **मसरूफ़-ए-अमल**[2],
लाएं रक़ीब साथ सियासत के वास्ते।

[2] काम में व्यस्त

साक़ी-ए-बज़्म जाम जल्द और अता कर,
आ जाये ना नासेह हिदायत के वास्ते।

कम-उम्र तो नहीं हैं मगर हैं **सबक़-आमोज़**[3],
करते हैं उसे याद नसीहत के वास्ते।

3अनुभव से सीखने को उत्सुक

ख़ल्वत[4] से ऊबकर गए थे बज़्म-ए-यार में,
निकले फिर उसकी बज़्म से ख़ल्वत के वास्ते।

[4] एकांत

'गौतम' करेंगे कितना इंतिज़ार-ए-क़यामत,
लिल्लाह चले आएँ क़यामत के वास्ते।

53: सवाल पर बवाल करते हैं

सवाल पर बवाल करते हैं,
इश्क़ को बे-सवाल करते हैं।

रू-ब-रू हैं जो तलबगार-ए-सितम,
ख़ास उनका ख़याल करते हैं।

ज़बाँ का काम नज़र से लेकर,
शोख़ जीना मुहाल करते हैं।

हद्द-ए-नज़र में जब आते हैं,
ख़ुश-नज़र मालामाल करते हैं।

हाल-ए-दिल पूछ के दीवानों को,
आसूदा[1]-ओ-**ख़ुश-हाल**[2] करते हैं।
[1]संतुष्ट [2]प्रसन्न

आशिक़ाँ में हैं जो महरूम-ए-सज़ा,
रात-दिन वो मलाल करते हैं।

रुख़ से थोड़ा नक़ाब सरका-कर,
शब-ए-दैजूर[3] में रौशन हिलाल[4] करते हैं।
[3]अमावस की रात [4]चाँद

बा-अदा होते हैं ख़फ़ा लेकिन,
सलाम बहर-हाल करते हैं।

बात यह आम हो गई 'गौतम',
कमाल बा-कमाल करते हैं।

54: मौत में राहत नज़र आने लगी

मौत में राहत नज़र आने लगी,
शान-ए-रहमत नज़र आने लगी।

शुक्रिया नासेह तेरा शुक्रिया,
फ़ज़ा-ए-जन्नत नज़र आने लगी।

बे-इरादा थे गए कू-ए-हरम,
शेख़ की शोहरत नज़र आने लगी।

दर्द-ए-दिल, रंज-ओ-ग़म, बेकली,
इश्क़ की अज़्मत[1] नज़र आने लगी।

[1] श्रेष्ठता

ज़ीस्त का हर पैरहन बदरंग है,
कफ़न में ख़िलअत नज़र आने लगी।

गर्मी-ए-मजलिस बढ़ाने के लिए,
चर्चा-ए-ग़ैबत नज़र आने लगी।

बैठे बैठे ऊबने 'गौतम' लगा,
सफ़र की चाहत नज़र आने लगी।

55: कभी आईने में हुआ ख़ुद-नुमा

कभी आईने में हुआ **ख़ुद-नुमा**[1],
मिला अक्स मेरा बहुत **बद-नुमा**[2]।
[1]प्रतिबिम्बित [2]बदसूरत

हिसार[3]-ए-ख़ुदी[4] से निकलकर कभी,
मुलम्मा हटाया, गया तमतमा।
[3]परिधि/सीमा [4]अभिमान

वो मेरी कहानी का औज[5]-ए-बयाँ,
था मेरा ख़ुदी का ग़लत तर्जुमा।
[5]श्रेष्ठ

रहा **ख़ुद-निगर**[6], **ख़ुद-बीं**[7]-ओ-**ख़ुद-फ़हम**[8],
समझता रहा ख़ुद को **औज-ए-समा**[9]।
[6]स्वार्थी [7]आत्म-मुग्ध [8]अपना आकलन (गलत) [9]आसमान से भी ऊपर

गिला किससे करते सफ़र का कभी,
मेरी रह-गुज़र थी, मैं था रह-नुमा।

ख़बर देता रफ़्तार-ओ-रुख़-ए-सबा,
मुझे ज़र्द पत्ता दिखा ख़त-नुमा।

हुए रू-ब-रू वो सितमगर कभी,
सितम कुछ नए कर दिए रूनुमा[10]।
[10]प्रस्तुत

यही होगा बेहतर न छेड़ें उसे,
वो सूरत से लगता नहीं ख़ुशनुमा।

करी बुत-परस्तों ने कसरत बहुत,
मिले आस्ताँ पर पड़े बुत-नुमा।

कहें **बद-अहद**[11], लोग कहते रहें,
उसे छुप के देखेंगे **चश्म-ए-तमा**[12]।

[11]वादा न निभाने वाला [12]लालची आँखें

गया बज़्म में उसकी 'गौतम' नहीं,
सुना नाम-ओ-इज़्ज़त नहीं **बा-हमा**[13]।

[13]परस्पर

56: ख़्वाहिशें बे-दिल को उकसाने लगीं

ख़्वाहिशें बे-दिल को उकसाने लगीं,
हक़-हक़ीक़त को हैं झुठलाने लगीं।

आँखें ख़्वाबों से थकी ऊबी हुई,
दफ़अ'तन[1] फिर ख़्वाब दिखलाने लगीं।

[1] अचानक

ख़ुद-फ़रेबी है दिल-ए-ग़म-आशना,
मुश्किलें हर-सू नज़र आने लगीं।

राहत-ए-ख़ल्वत[2] हुई हासिल नहीं,
घर की छत-दीवारें याद आने लगीं।

[2] एकांत का मजा

पेच-ओ-ख़म ज़ुल्फ़ के सुलझे नहीं,
हसरतें हर गांठ खुलवाने लगीं।

रंज-ए-तन्हाईयाँ 'गौतम' को फिर,
शाम होते होते क़ब्ज़ाने लगीं।

57: करिए आली-जनाब की बातें

करिए आली-जनाब की बातें,
छोड़ें दिल-ए-ख़राब की बातें।

तिश्ना-लब लोग बताएं शायद,
ख़ुश्क होते मीज़ाब[1] की बातें।

[1] जलधार

साक़ी-ए-बादा-ख़ाना ग़ौर करे,
रिंद ने **पुर-इताब**[2] की बातें।

[2] क्रोध/नाराजी भरी

हमने हर शब करी सितारों से,
माह[3]-ओ-**मेहर-ताब**[4] की बातें।

[3] चाँद [4] चमकता सूरज

ज़ीस्त के साथ गुफ़्त-ओ-गू में हो,
कुछ **असीर-ए-अज़ाब**[5] की बातें।

[5] सजा का बंधन/बाध्यता

आज मक़्तल में होगी क़ातिल से,
आपसी मुस्तजाब[6] की बातें।

[6] सहमति

अपने बारे में पता है 'गौतम',
हल्क़ा-ए-अहबाब[7] की बातें।

[7] मित्र-मंडली

58: तिश्ना-लब कह रहे खुल जा सिम-सिम

तिश्ना-लब[1] कह रहे खुल जा सिम-सिम,
अब्र[2] दिखलाओ तिलिस्म[3]-ए-रिम-झिम।

[1] सूखे/प्यासे होंठ [2] बादल [3] जादू

ज़र्रा-ज़र्रा है तलबगार-ए-करम,
सबको कर आब-ज़दा[4] ऐ क़ासिम[5]।

[4] तृप्त [5] वितरण करने वाला

मौसम-ए-गर्मी है **आतिश-अंदोज़**[6],
कर ले क़ब्ज़े में चर्ख़[7]-ए-ज़ालिम।

[6] आग लगाने को तत्पर [7] आसमान

हर-नफ़स[8] छोड़ने लगा है धुआँ,
बचेगा कौन **साबित-ओ-सालिम**[9]।

8 प्रत्येक साँस/चीज 9 अखंडित और यथावत

धूप मजबूरी है मजदूरों की,
शजर के साये में बैठे आलिम[10]।

[10] विद्वान/समझदार

मौसम-ए-अब्र है तो याद रहे,
अब बरसना है **जुज़्व-ए-लाज़िम**[11]।

[11] थोड़ा आवश्यक

मैं नहीं अहल-ए-दहर कहते हैं,
जो रहम-दिल है वही है हाकिम।

बाँट दे आज आब-ए-गौहर,
खोल दे आज तिजोरी हातिम।

दुश्मनी सहरा से होगी 'गौतम',

सुखा रहे हो क्यों दरिया ज़ालिम।

59: चलो फ़ुर्सत में नेक काम करें

चलो फ़ुर्सत में नेक काम करें,
कूचा-ए-नाज़ में आराम करें।

दिमाग़ खा रहा है रोज़ाना,
चलो नासेह को हम-जाम करें।

पास है पास-ओ-लिहाज़ अगर,
इश्क़ का नाम न बदनाम करें।

लोग मसरूफ़ कारोबारी हैं,
आप बे-वजह न सलाम करें।

राय ली मेरी, शुक्रिया, लेकिन,
आप हुक्काम हैं अहकाम[1] करें।

[1] आदेश

क्या पता काम किसी के आएँ,
दुआएँ रोज़ सुब्ह-ओ-शाम करें।

कोई वादा वफ़ा करे 'गौतम',
और हम दिल से एहतिराम[2] करें।

[2] सम्मान

60: नमाज़-ए-कैफ़ से मख़मूर है क्यों

नमाज़-ए-कैफ़[1] से मख़मूर[2] है क्यों,
नमाज़ी बंदा-ए-मग़रूर[3] है क्यों।
[1]नशा [2]उन्मत्त [3]घमंडी

अपनी मंज़िल से बा-ख़बर है तो,
अपनी मंज़िल से इतनी दूर है क्यों।

वक़्त के हाथ का मोहरा है बशर,
सुर्ख़-रू[4] जो हुआ मशहूर है क्यों।
[4]सफल

दीन[4] की बात है करता वाइज़,
लबों पर चस्पाँ ज़िक्र-ए-हूर है क्यों।
[4]धर्म

कुव्वत-ए-जज़्ब-ए-दिल[5] शान है तो
हवस-ए-वस्ल से मजबूर है क्यों।
[5]दिल में सब्र करने की सामर्थ्य [6]मिलन की अतीव इच्छा

काम आएगी **दीदा-ए-बातिन**[7],
चाहता **चश्म बहर-ए-नूर**[8] है क्यों।
[7]अंतर्दृष्टि [8]सागर जैसी विस्तृत दृष्टि

मुँह लगाता नहीं किसी को भी
हुज़ूर इतना बे-हुज़ूर[9] है क्यों।
[9]निर्लिप्त

यार से शिकवा-शिकायत कैसी,
तू है आशिक़ तो बे-शुऊर है क्यों।

सुकून-ओ-अमन चाहिए 'गौतम',

हा-ओ-हू[10] **हस्ब-ए-दस्तूर**[11] है क्यों।

[10]शोरगुल [11]प्रचालन में

61: हस्ब-ए-वादा बात की जाए

हस्ब-ए-वादा[1] बात की जाए,
आज फिर मुलाक़ात की जाए।
[1]वादे के अनुसार

कुछ तो देखा था आपने मुझमें,
बात-ए-ख़ुश-निकात[2] की जाए।
[2]अच्छे गुणों की बात

फ़कीर-ए-इश्क़ पुर-उम्मीद खड़े,
आज खुलकर ज़कात की जाए।

सितमगरी के हैं क़ाइल आशिक़,
मेहर **बाज़-औक़ात**[3] की जाए।
[3]कभी-कभी

आज दीदार-ए-बे-नक़ाबी हो,
और रौशन हयात की जाए।

जिस पे हो जाए भरोसा सबको,
आज उतनी ही बात की जाए।

रू-ब-रू आईना लेकर एक दिन,
जाँच फिर **अक्स-ए-ज़ात**[4] की जाए।
[4]अपना प्रतिबिम्ब

अब तो अपने भी हमसे कहने लगे,
ग़ैर से इख़्तिलात[5] की जाए।
[5]मेल-जोल/परिचय

ख़ैर-मक़्दम[6] का शुक्रिया 'गौतम',
चर्चा-ए-मौज़ूआत[7] की जाए।
[6]स्वागत [7]विषय पर बात

62: दर बे-दस्तक, घर बे-आहट

दर बे-दस्तक, घर बे-आहट,
रात गुज़रती करवट-करवट।

घर कर बैठी एक आरज़ू,
जबीं हमारी, उसकी चौखट।

मंज़िल बुला रही है, लेकिन
पा[1] लाचार, रास्ता ओघट[2]।

1पाँव 2कठिन

इम्तिहान जाने कब होगा,
बैठ गया हूँ हर आयत रट।

मौसम से मायूस नहीं मैं,
रिश्तों में कुछ हो गरमाहट।

उलट लिए सफ़हे माज़ी के,
पढ़ कर अब होती उकताहट।

घर का सूनापन कहता है,
एक दिन होगा अंतिम जमघट।

कहाँ रौशनी दे पाता है,
बिना तेल का जलता जीवट[3]।

3बाती

संजीदा करती है ख़ुद को,
मेरे माथे की हर सिलवट।

ख़ैर-ख़्वाह भी हैं अज़ीज़ भी,
माना यार बहुत हैं मुँह-फट।

उमर-दराज़ हो गया 'गौतम',
बे-जुम्बिश है पर दिल नटखट।

63: फिर मुलाक़ात हो गई है, इत्तिफ़ाक़ है ये

फिर मुलाक़ात हो गई है, इत्तिफ़ाक़ है ये,
आज फिर बात हो गई है, इत्तिफ़ाक़ है ये।

गुफ़्त-ओ-ग़ू करते हमें देखिए ना हैरत से,
अजीब बात हो गई है, इत्तिफ़ाक़ है ये।

हमारे हाल पर रोता किसी को देखा नहीं,
आज बरसात हो गई है, इत्तिफ़ाक़ है ये।

सलाम अजनबी करते थे बे-गिला-शिकवा,
तनाज़ेआत[1] हो गई है, इत्तिफ़ाक़ है ये।
[1] बहस

अक्स-ए-ज़ात[2] से होना था ज़िन्दगी को ख़फ़ा,
वो **महव-ए-ज़ात**[3] हो गई है, इत्तिफ़ाक़ है ये।
[2] अपना प्रतिबिम्ब [3] अपने पर मुग्ध

यूँ तो रखते नहीं उम्मीद किसी से कोई,
बाज़-औक़ात[4] हो गई है, इत्तिफ़ाक़ है ये।
[4] कभी-कभी

मेहर के नाम पर कर देते हैं सितम कोई,
आज बोहतात[5] हो गई है, इत्तिफ़ाक़ है ये।
[5] अधिकता

मौत से रू-ब-रू करवाया हमको यारों ने,
एक मुराआत[6] हो गई है, इत्तिफ़ाक़ है ये।
[6] मदद

कल भरी बज़्म में दीवाना कह दिया उसने,
ख़ास सौगात हो गई है, इत्तिफ़ाक़ है ये।

दर्द-ए-दिल-ओ-आरज़ू से ज़िन्दगी 'गौतम',
तर्क-ए-लज़्ज़ात[7] हो गई है, इत्तिफ़ाक़ है ये।

7 खुशियों से दूर

64: मेरा क़ातिल है वो, उसको मेरा क़ातिल ही रहने दो

मेरा क़ातिल है वो, उसको मेरा क़ातिल ही रहने दो,
मैं उसके प्यार में ग़ाफ़िल हुआ, ग़ाफ़िल ही रहने दो।

अज़ल[1] से अजल[2] तक बहता रहेगा वक़्त का दरिया,
बहा कर ले गया हर लम्हा, ये साहिल ही रहने दो।

[1] आदि [2] अनादि

सबब-ए-कारोबार-ए-दहर[2] हर रिश्ता नहीं होता,
ख़ुदा के वास्ते कुछ रिश्ते **ला-हासिल**[3] ही रहने दो।

[2] दुनिया के व्यापार का कारण [2] अप्राप्य

ये माना होता है हर एक लम्हे का जुदा क़िस्सा,
किया माज़ी में जो फ़ाइल, उसे फ़ाइल ही रहने दो।

ज़ुबाँ ख़ामोश है और जुरअत-ए-कोशिश नहीं कोई,
नवाज़िश[4] होती रहती है, मुझे साइल ही रहने दो।

[4] कृपा

नहीं दैर-ओ-हरम से कोई भी झगड़ा मेरा 'गौतम',
सनम-ख़ाना ज़ेहन में है ज़ेहन माइल ही रहने दो।

65: ख़ुदा से कम कहें उसको तो दीवाना ख़फ़ा होगा

ख़ुदा से कम कहें उसको तो दीवाना ख़फ़ा होगा,
ख़ुदा उसको कहेंगे हम तो मौलाना ख़फ़ा होगा।

सनम की बात करने से ख़फ़ा हो जाता है वाइज़,
ख़ुदा की बात से साक़ी-ओ-मय-ख़ाना ख़फ़ा होगा।

बता दें गर नहीं कोई दवा है दर्द-ए-उल्फ़त की,
तो चारागर से बढ़कर हर दवा-ख़ाना ख़फ़ा होगा।

हक़ीक़त में शमा भी रात-भर जलती पिघलती है,
शमा का ज़िक्र कर देने से परवाना ख़फ़ा होगा।

पस-ए-पर्दा अगर है हुस्न तो पर्दे में रहने दें,
वगरना आशिक़ों में ही कोई दाना[1] ख़फ़ा होगा।

[1] विद्वान

हक़ीक़त गर बता देंगे कभी मजलिस में हम 'गौतम',
यक़ीनन हमसे अपना और बेगाना ख़फ़ा होगा।

66: हालात-ए-पेश-ओ-पस से परेशान हो गया

हालात-ए-पेश-ओ-पस[1] से परेशान हो गया,
पहले से बहुत ज़्यादा दिल हैरान हो गया।
[1]अभी और पीछे की परिस्थितयाँ

आँधी से शिकायत का नतीजा बुरा हुआ,
अब रू-ब-रू आकर खड़ा तूफ़ान हो गया।

वह आस्ताँ[2] पे चाहता था छोड़ना निशान,
उसकी जबीं[3] पर ही सियह निशान हो गया।
[2]चौखट [3]मस्तक

बेनाम-ओ-गुमनाम हैं अबयात[4] बे-शुमार,
जो नामवर[5] का है वो सद-ज़बान[6] हो गया।
[4]शेर [5]प्रतिष्ठित [6]आम लोगोनो को कंठस्थ

एक **संग-ए-बे-हिस**[7] बना है मील का पत्थर,
हर रहनुमा का काम कुछ आसान हो गया।
[7]बेजान पत्थर

मायूस चारागर गया देकर उसे दुआ,
बेहाल पर फ़िलहाल तो एहसान हो गया।

एक बे-ज़बान ने सवाल पूछा है 'गौतम',
चर्चा उसी के नाम का हर-आन हो गया।

67: रोज़ बस एक काम करते हैं

रोज़ बस एक काम करते हैं,
दिन को यूँही तमाम करते हैं।

दर्द-ए-दिल मेरा मुसलसल[1] है,
नाला[2] बस बा-आराम[3] करते हैं।

[1] स्थायी [2] विलाप [3] आराम से

ख़त-ओ-क़ासिद[4] की ज़रूरत ही नही,
मेल या इंस्टाग्राम करते हैं।

[4] पत्रवाहक

सलाम **पास-ए-अदब**[5] है तो,
उदू को अस्सलाम[6] करते हैं।

[5] स-सम्मान [6] सलाम का जवाब

हैं फ़िक्रमंद, कभी फ़िक्र-ए-अवाम[7],
कभी फ़िक्र-ए-दवाम[8] करते हैं।

[7] जनता (आम आदमी) की चिंता [8] अनंत की चिंता

बज़्म में पूछे-ना-पूछे कोई,
अब नहीं कोहराम करते हैं।

सफ़र थोड़ा है, पास है मंज़िल,
अब तो घर में क़याम करते हैं।

चश्म में तो अमर उजाला है,
इसलिए शब-ए-फ़ाम[9] करते हैं।

[9] रात रंगीन

दिल को बहलाने का दिल होने पर,
यूँही कुछ काम-वाम करते हैं।

अब तो यारों का साथ होने पर,
ज़बान बे-लगाम करते हैं।

लोग सुनकर कलाम-ए-'गौतम',
आजकल एहतिराम करते हैं।

68: अगरचे इश्क़ तो है इश्क़, हो बाहम तो अच्छा है

अगरचे इश्क़ तो है इश्क़, हो बाहम[1] तो अच्छा है,
कफ़न भी पैरहन होता है, हो रेशम तो अच्छा है।

[1]परस्पर

हटाना यार का रुख़ से नक़ाब आहिस्ता आहिस्ता,
अदा दिलकश तो है लेकिन न हो हर-दम तो अच्छा है।

बुराई तो नहीं कुछ, शर्म से नज़रें झुकाने में,
उठाकर सिर मिलाकर नज़र, हो मक़्दम[2] तो अच्छा है।

[2]स्वागत

किसी के चश्म-तर हों रू-ब-रू तो रंज होता है,
करीने से गिरी दामन पे हो शबनम तो अच्छा है।

किसी को याद तन्हाई में करना शौक़-ए-दिल है,
ज़रूरी तो नहीं पर पास हो एल्बम तो अच्छा है।

नहीं मंज़ूर होना सर-ब-सज्दा[3] और रुस्वा-कुन[4],
सनम के सामने सज्दे में हो 'गौतम' तो अच्छा है।

[3]झुका हुआ सर[2]अपमानित

69: न तुम छोड़ो, न हम छोड़ें

न तुम छोड़ो, न हम छोड़ें,
पकड़ लो हाथ, ग़म छोड़ें।

ख़ुदा को पास रख वाइज़,
भला हम क्यों सनम छोड़ें।

करम भी मेहरबाँ करिए,
नहीं कहते सितम छोड़ें।

मेरी क़ुव्वत परखने को,
नहीं कोई क़सम छोड़ें।

खुली हम दो किताबें हैं,
चलो, पास-ओ-शरम छोड़ें।

इरम[1] घर में ही देखेंगे,
अगर दैर-ओ-हरम छोड़ें।
[1]जन्नत

मुकर्रर कह रहे हैं सब,
अभी हम क्यों क़लम छोड़ें।

हैं जब तक साथ हम दोनो,
चलो **यम-ए-अलम**[2] छोडें।
[2]दुःख

बहुत अब पास है मंज़िल,
सफ़र न हम-क़दम छोड़ें।

इसी से हैं बँधा 'गौतम',
भला दामन क्यों हम छोड़ें।

70: ख़बर किसी को नहीं है कहाँ ले जाएँगे

ख़बर किसी को नहीं है कहाँ ले जाएँगे,
यह कारवाँ तो **मीर-ए-गुमरहाँ**[1] ले जाएँगे।
[1]भटके लोगों का सरदार

इस एतिबार-ओ-यक़ीन का जवाब नहीं,
ज़मीं-ओ-आसमाँ भी सफ़ीहाँ[2] ले जाएँगे।
[2]बेवकूफ

वाक़िफ़-ए-दो-जहाँ[3] लगते हैं **हम-रहाँ**[4] मेरे,
पुर-इत्मीनान है सारा जहाँ ले जाएँगे।
[3]लोक-परलोक से परिचित [4]सह-यात्री

सभी हैं चाक़-ओ-चौबंद रहते रहज़न[5] से,
देखिए साथ क्या **अज़्म-ए-निहाँ**[6] ले जाएँगे।
[5]राह के लुटेरे [6]गुप्त इच्छाएं रखने वाला

वो बात कर रहा था सबसे हूर-ओ-जन्नत की,
साथ नासेह को **तिश्ना-दहाँ**[7] ले जाएँगे।
[7]प्यासे लोग

एक बा-ख़बर ख़बरदार कर गया 'गौतम',
मुंतज़िर[8] इज़राईल[9] ना-गहाँ[10] ले जाएँगे।
[8]प्रतीक्षारत [9]यमदूत [10]अचानक

71: हस्ब-ए-मामूल हैं सरकार, ख़ुदा ख़ैर करे

हस्ब-ए-मामूल[1] हैं सरकार, ख़ुदा ख़ैर करे,
चार-सू हो रहा अज़कार[2], ख़ुदा ख़ैर करे।
[1]सामान्यतः [2]चर्चा

दिल तो पहली ही मुलाक़ात में दे बैठे हम,
हिज्र-ओ-क़ुर्बत[3] **बे-इख़्तियार**[4], ख़ुदा ख़ैर करे।
[3]जुदाई और सोहबत [2]नियंत्रण के बाहर

अब्र हैं ख़ास मेहरबान सूखे दरिया पर,
आज ख़तरे में हैं कगार, ख़ुदा ख़ैर करे।

कूचा-ए-यार में होने लगी जगह की कमी,
आशिक़ाँ मे न हो यलग़ार[3], ख़ुदा ख़ैर करे।
[3]युद्ध

अब तो रहज़न को हमसफ़र बनाना पड़ता है,
हर मुसाफ़िर हुआ लाचार, ख़ुदा ख़ैर करे।

अब तो बे-लाग बोलने लगा है चारागर,
दर्द-ए-दिल है ला-उपचार, ख़ुदा ख़ैर करे।

साथ फिर आज गए बैठे पंडित-ओ-मोमिन,
जबीं पे गहरे हैं अफ़्कार[4], ख़ुदा ख़ैर करे।
[4]चिंता की रेखाएँ

राख में दिल-जला न जाने ढूँढता क्या है,
राख में पिन्हा हैं अंगार, ख़ुदा ख़ैर करे।

उदू हैं रू-ब-रू कुछ ख़ौफ़ है लाज़िम 'गौतम',
साथ में यार हैं दो-चार, ख़ुदा ख़ैर करे।

72: शाम आएगी तो घर जायेंगे

शाम आएगी तो घर जायेंगे,
सच कहें और किधर जायेंगे।

दर-ओ-दीवार याद आयेंगे,
हम कहीं और अगर जायेंगे।

जड़ें मिट्टी में दफ़्न रहने दो,
शजर[1] मिट्टी बिना मर जायेंगे।

[1] पेड़

खेलने दो गली में बच्चों को,
इन्हें डाँटोगे तो डर जायेंगे।

फिर गए रिंद सू-ए-मयख़ाना,
बोला वाइज़ था सुधर जायेंगे।

एन-फ़ितरत कहाँ बदलती है,
दरिया हैं, सू-ए-बहर जायेंगे।

हमने देखा है ज़माना 'गौतम'
काम पर दोस्त मुकर जायेंगे।

73: हर एक रिश्ता इसके अंदर है

हर एक रिश्ता इसके अंदर है,
मेरा मोबाइल एक समंदर है।

आज गोता लगा के देखेंगे,
हाथ में आता किसका नंबर है।

यार की मिलती है ख़बर हर दिन,
वाट्सऐप ग्रुप का वो भी मेंबर है।

बात भी होगी, नया साल लगे,
अभी बाकी बहुत कैलेंडर है।

इसके सज्दे में बेख़बर हैं सब,
रू-ब-रू हरम है या मंदर है।

कार-ए-इश्क़ हो या कार-ए-दहर,
वही बे-फ़िक्र है जो ख़ूगर[1] है।

[1] *अभ्यस्त*

गुमशुदा रिश्ता हो गया 'गौतम',
पता कर किसके पास नंबर है।

74: कुछ ग़ौर-तलब आज-का मंज़र है देखिए

कुछ ग़ौर-तलब आज-का मंज़र है देखिए,
क्यों **सोज़-ओ-इज़्तिराब**[1] समन्दर है देखिए।

[1] उग्र और बेचैन

आँखों से इमारत की बुलंदी को हटा दें,
बुनियाद में दबा हुआ खंडर है देखिए।

आबादी-ए-शहर का है अंदाज़ा ज़रूरी,
फ़ुटपाथ पर ये कौन मुस्तक़र[2] है देखिए।

[2] निवासी

उड़ने के लिए मानते माक़ूल है फ़लक,
लेकिन ज़मीं में दफ़्न सिकन्दर है देखिए।

मिलिए न यूँ तपाक से सबसे बढ़ाके हाथ,
पोशीदा आस्तीनों में ख़ंजर है देखिए।

बाहर से है दुरुस्त घर का रंग-ओ-रोगन,
हालात-ए-मकीन[3] क्या बेहतर है देखिए।

[3] रहने वालों की स्थिति

माना है म्यान-ओ-मूठ बेहतरीन-ओ-लाजवाब,
आलूदा-लहू[4] **आब-ए-ख़ंजर**[5] है देखिए।

[4] खून में डूबा [5] चाकू की धार

बे-वजह बदल देते हो चैनल को क्यों 'गौतम',
संजीदा हर मुद्दे पे हर ऐंकर है देखिए।

75: सफ़्हों में एक हाशिया छोड़ें

सफ़्हों में एक हाशिया छोड़ें,
नाम लिख दें मेरा, हया छोड़ें।

बात माज़ी की कर रहा हूँ मैं,
आप भी बात हालिया छोड़ें।

दिल है अदना सी चीज़ दे बैठे,
हुज़ूर इसका शुक्रिया छोड़ें।

रोज़ ही आना है तसव्वुर में,
वादा-ए-वस्ल माहिया[1] छोड़ें।

1 प्रिय

आपकी बातों का गिला-शिकवा,
जो करें उनको शर्तिया छोड़ें।

हाल-ए-दिल कौन पूछता है अब,
जवाब सब ख़यालिया छोड़ें।

हमारे बाद याद करके मेरी,
ग़ज़ल सुनाएं मर्सिया छोड़ें।

आपको ख़ूब जानते हैं हम,
बयान दोस्त फ़ख़्रिया[2] छोड़ें।

2 घमंडपूर्ण

रू-ब-रू बे-ज़बान है 'गौतम',
निगाह अब सवालिया छोड़ें।

76: चार-सू फैला है कोहरा कितना

चार-सू फैला है कोहरा कितना,
नहीं मालूम है गहरा कितना।

उसके चेहरे से समझ जाते हैं,
आज वो बन रहा बहरा कितना।

है ख़ुदा-वंद की फ़िकर उसको,
है ख़ुदा-फ़हम[1] का पहरा कितना।
[1] अल्लाह को जानने वाला

शोर सन्नाटे का बताता है,
आज सन्नाटा है पसरा कितना।

एक नुक़्ता है आज ज़ेर-ए-बहस,
पैदा कर देगा मज़हरा[2] कितना।
[2] कितने मुद्दे

आसमाँ सिर पे ज़मीं पैरों तले,
चाहिए और आसरा कितना।

दर्ज करते हैं सफ़र राही का,
रास्ते में वो था ठहरा कितना।

ज़िक्र-ए-मेहर-ए-सहाब[3] करें,
सब्ज़ा[4] सब्ज़ा हुआ हरा कितना।
[3] बादल की कृपा का वर्णन

यूँ परखता है बंदगी 'गौतम',
सज्दे में है बशर दोहरा कितना।

77: आरज़ू दिल में हो इबादत की

आरज़ू दिल में हो इबादत की,
यही तो शर्त है मोहब्बत की।

सनम-परस्ती पे हक़ है, जिसने-
दीन-ओ-दुनिया से बग़ावत की।

इश्क़ में होती नहीं गुंजाइश,
दख़्ल-अंदाज़ी-ओ-नसीहत की।

रंग-ए-आशिक़ी हैं रंज-ओ-ग़म,
फ़िक्र होती नही क़यामत की।

कूचा-ए-यार के दीवानों से,
क्यों करें बात हूर-ओ-जन्नत की।

इश्क़ में हो न मुक़फ़्फ़ल[1] 'गौतम',
जिद्द क्या रस्म-ओ-रिवायत की।

[1] जकड़

78: दीवाना-वार है सर-ए-एहसास ही तो है

दीवाना-वार[1] है **सर-ए-एहसास**[2] ही तो है,
दीवाना-सिफ़त[3] **क़ैद-ए-हवास**[4] ही तो है।

[1]दीवानगी के साथ [2]संवेद्र्ना के साथ [3]दीवानगी का गुण [4]भावनाओं के प्रभाव में

हैरान नहीं करती है तारीख़-पर-तारीख़,
इंसाफ़-तलब **कार-ए-इजलास**[5] ही तो है।

[5]अदालती कार्रवाही

क्यों दावा-ए-दीदार पर है हुस्न परेशाँ,
दीदा-ए-आशिक़ाँ[6] में इल्तिमास[7] ही तो है।

[6]आशिकों की निगाहें [7]विनती

हुक्काम इत्मिनान से सुन लेंगे शिकायत,
बे-हाल वो नहीं है, बद-हवास ही तो है।

उससे नहीं है कोई भी उम्मीद-ए-वहम,
बे-फ़िक्र की ज़बान में मिठास ही तो है।

परवा-ए-शेख़-ए-हरम[8] किसलिए करे 'गौतम'
गर **कू-ब-कू**[9] ख़ुदा है, आस-पास ही तो है।

[8]मस्जिद के शेख़ की परवाह [9]सब जगह

79: ख़बर ली नहीं, न कोई भेजा नामा

ख़बर ली नहीं, न कोई भेजा नामा,
गए तेज वो, हम खरामा[1] खरामा।

[1]धीरे

भला कोई उम्मीद क्यों पालते हम,
नहीं कृष्ण है वो, नहीं हम सुदामा।

मुक़ाबिल नहीं आज कोई किसी से,
नहीं काम आएगी **शमशीर-ए-ख़ामा**[2]।

[2]कलम की तलवार

शब-ए-हिज्र में साथ दर्द-ए-तन्हाई,
न तारे हमारे, न है चंदा-मामा।

यूँही ज़िन्दगी सर्फ़ करते रहे हम,
ख़यालों में लिखते रहे **अमल-नामा**[3]।

[3]योजना की रूपरेखा

अगर बोलते कुछ सर-ए-बज़्म 'गौतम',
ख़फ़ा हमसे होंते उस्ताद-ओ-अल्लामा[4]।

[4]बहुत बड़ा विद्वान्

80: गली में यार की मिलते हैं अफ़लातून कई

गली में यार की मिलते हैं अफ़लातून[1] कई,
कई हैं **ख़ाक-बसर**[2], मिलते हैं मदफ़ून[3] कई।
[1]बड़बोला [2]मिटटी में पड़े [3]दफन

तजरबा-कार जो दीवाना है बतलाता है,
दीदार-ए-यार के हैं क़ायदे-क़ानून कई।

उसको आशिक़ अज़ीज़ बे-ज़बान लगते हैं,
गिला-पसंद नाम के मिले मलऊन[4] कई।
[4]आरोपी

उदू से ज़्यादा रक़ीबों का ख़ौफ़ रहता है,
मुक़ाबले में हो चुके हैं कत्ल-ओ-ख़ून कई।

उसके दीवाने सुनाते हैं उसके अफ़साने,
बयान करते है उस शोख़ के अफ़सून[5] कई।
[5]जादू

जब से महफ़िल में हाज़िरी लगाई 'गौतम' ने,
रिसालों में हैं उसके नाम के मज़मून[6] कई।
[6]वर्णन

81: ख़याल बे-सर-ओ-पाई सही बेकार नहीं

ख़याल **बे-सर-ओ-पाई**[1] सही बेकार नहीं,
वज्द-ए-ज़िन्दगी[2] है, रखता सोगवार[3] नहीं।
[1]बिना सर-पैर का [2]जीवन का नृत्य [3]दुखी

मुक़ाबला हमारे साथ करने आए हैं,
उसे ख़बर है मेरे पास है हथियार नहीं।

लकड़ी के घोड़े से सीधे हवाई घोड़े पर,
हमने देखे थे पहले ऐसे **शह-सवार**[4] नहीं।
[4]कुशल घुड़सवार

साथ **गुंजाइश-ए-अदावत-ए-उदू**[5] क्यों हो,
हम अपने दोस्तों से रहते ख़बरदार नहीं।
[5]दुश्मनों से दुश्मनी की संभावना

कान उस्ताद के रोज़ाना कतरते देखा,
मान लें कैसे ये शागिर्द हैं होशियार नहीं।

यार के कूचे में जाता हूँ ख़बर लेने को,
कौन दीदार का **मतलूब-ओ-तलबगार**[6] नहीं।
[6]चाहने वाला/ इच्छुक

हमको भी शिकवा-शिकायत तमाम है लेकिन,
कह नहीं सकते हैं हम ये मेरी सरकार नहीं।

सफेद बालों को है सज्दा-ओ-सलाम मेरा,
ग़ौर करता नहीं किस सिर पे है दस्तार[7] नहीं।
[7]पगड़ी

साथ में कारवाँ तो है मगर सफ़र तन्हा,
किसी के साथ कोई **यार-ओ-अग़्यार**[8] नहीं।
[8]मित्र और अजनबी

उखड़ ही जाना था उनको ज़मीन से 'गौतम',
शजर[9] जो आँधी में झुकने को थे तैयार नहीं।

[9] पेड़

82: तजरबा-कार नहीं कहते हैं दीवानों को

तजरबा-कार[1] नहीं कहते हैं दीवानों को,
है देखा यार के कूचे में **ख़ुफ़्ता-जानों**[2] को।
[1]अनुभवी [2]उनींदे

उठाते रोज़ परिंदे हैं **ख़ुश-इलहान**[3] हमें,
ख़ुदा-तलब हैं सुनते ग़ौर से अज़ानों को।
[3]सुरीले

गुलों के पहरेदार ख़ार हैं पसंद नहीं,
सजाते काग़ज़ी फूलों से हैं गुल-दानों को।

फ़क़ीर-ए-बे-ग़रज़[4] है दे गया दुआ सबको,
उठाए फिरते हैं सब शेख़ के एहसानों को।
[4]निस्वार्थ भिखारी

वस्ल की रात पुर-सुकून नींद आयेगी,
ये शब-ए-हिज्र में ख़याल है बहलाने को।

मैं ज़ख़्म-ए-दिल की नुमाइश नहीं करता 'गौतम',
संभालकर ही रखना चाहिए ख़ज़ानों को।

83: सूरत ने फ़ाश कर दिया पोशीदा दिल का राज़

सूरत ने फ़ाश[1] कर दिया पोशीदा[2] दिल का राज़,
हालाँकि हम थे बैठे बे-अल्फ़ाज़-ओ-आवाज़।

[1]उजागर [2]छुपा हुआ

ये जानते हुए भी ना-वाक़िफ़ नहीं ख़ुदा,
देखे गए सनम-परस्त फिर सफ़-ए-नमाज़।

कल पूछ लिया मेरा तआरुफ़ रक़ीब से,
महफ़िल में अपनी उसने बुलाया था बा-एज़ाज़।

अब ऐसी गुफ़्त-ओ-गू का क्या आग़ाज़-ओ-अंजाम
हो सूरत-ए-अल्फ़ाज़ कुछ, हो कुछ पस-ए-अल्फ़ाज़।

कर पाए नहीं **जुरअत-ए-अर्ज़-ए-नियाज़-ए-दिल**[3],
कुछ थे तकल्लुफ़ात भी कुछ थे दख़्ल-अंदाज़।

[3]दिल की बात कहने की हिम्मत

लौट आए कू-ए-यार से बे-कस-ओ-बे-मुराद,
मय-ख़ाना न होता तो कहाँ ढूँढते मआज़[4]।

[4]शरण

आदाब-ए-महफ़िल[5] **असर-अंदाज़**[6] भी होंगे,
हाज़िर रहें हुज़ूर में करते रहें रियाज़[7]।

[5]सभा का शिष्टाचार [6]प्रभावी [7]अभ्यास

हमने फ़क़ीर-ओ-औलिया को परखा है 'गौतम',
अहल-ए-दहर[8] में मिलता नहीं कोई **अहल-ए-राज़**[9]।

[8]दुनिया वालों में [9]दुनिया के रहस्य

84: क़दर सुरूद-ए-ज़िंदगानी हो

क़दर **सुरूद-ए-ज़िंदगानी**[1] हो,
मगर **शुऊर-ए-ज़िंदगानी**[2] हो।
[1]जीवन का सूए-संगीत [2]जीवन जीने की शिष्टता

कैफ़-ओ-इम्बिसात-ए-नौ[3] हो,
तभी **मआल-ए-ज़िंदगानी**[4] हो।
[3]नया उत्साह औए उल्लास [4]जीवन का उद्देश्य

वाक़िआत-ए-अज़ाब[5] होने दो,
पुर-तजरबात[6] ज़िंदगानी हो।
[5]आपदाएं [6]अनुभव भरी

क़िस्सा-ए-मुख़्तसर[7] मक़बूल[8] रहे,
किसलिए **तूल-ए-ज़िंदगानी**[9] हो।
[7]संक्षेप में किस्सा [8]स्वीकार्य [9]लम्बा जीवन

कामयाबी ना-कामयाबी में,
क़ुबूल **कार-ए-ज़िंदगानी**[10] हो।
[10]जीवन का हर रूप

ख़ार-ओ-गुल सजे हों दामन में,
बा-रंग बाग़-ए-ज़िंदगानी हो।

ख़ाक-ज़ादे[11] रहेंगे **ख़ाक-बसर**[12],
ख़ाक में **ख़ाक-ए-ज़िंदगानी**[13] हो।
[11]मिटटी से पैदा [12]मिटटी में जीना [13]मिटटी सा जीवन

अजल-नसीब[14] है बशर 'गौतम',
बा-वक़र[15] मौत-ओ-ज़िंदगानी हो।
[14]नश्वर [15]सम्मान-युत

85: बहुत ख़ूगर हैं, आज़मा लीजे

बहुत ख़ूगर[1] हैं, आज़मा लीजे,
थोड़ा दीगर[2] हैं, आज़मा लीजे।

[1]अभ्यस्त [2]भिन्न

चांद हमसे भी मिलने आता है,
माना पोखर हैं, आज़मा लीजे।

गुदगुदाते भी हैं, हँसाते भी,
अच्छे जोकर हैं, आज़मा लीजे।

हम नहीं वो जो बहक जाते हैं,
गहरा साग़र[3] हैं, आज़मा लीजे।

[3]प्याला

संग-दिल[4] को सनम[5] बनाते हैं
अच्छे **बुत-गर**[6] हैं, आज़मा लीजे।

[4]पत्थर दिल [5]पूजने योग्य [6]मूर्तिकार

एक गोशे[7] में सिमट जाते हैं,
हम तो असग़र[8] हैं, आज़मा लीजे।

[7]कोना [8]सूक्षम

तेरे कूचे से कौन जाता है,
सभी अजगर हैं, आज़मा लीजे।

नक़्श हम छोड़ते नहीं कोई,
हम इरेज़र हैं, आज़मा लीजे।

क्यों परेशाँ हो सितमगर 'गौतम',
हम तो हाज़िर हैं, आज़मा लीजे।

86: इश्क़ न करते वो रंजिश करते

इश्क़ न करते वो रंजिश[1] करते,
राब्ता[2] रहता गर कोशिश करते।

[1] शत्रुता [2] संबंध

हाय! एहसान से मर जाते हम,
शोख़ गर **रस्म-ए-पुर्सिश**[3] करते।

[3] हाल-चाल पूछने की औपचारिकता

है अगर इश्क़ में जुनूँ लाज़िम,
चाक-दामन की नुमाइश करते।

दर्द-ए-दिल ने बनाया ख़ूगर[4],
अब नहीं **फ़िक्र-ओ-ख़लिश**[5] करते।

[4] अभ्यस्त [5] चिंता और बेचैनी

बज़्म में उसकी हैं रक़ीब सभी,
किसलिए मेरी सिफ़ारिश करते।

हम हैं सादा-निगाह सादा-मिज़ाज,
इश्क़ में किसलिए साज़िश करते।

असीर-ए-वक़्त[6] न होते 'गौतम',
दिल को हम **क़ैद-ए-ख़्वाहिश**[7] करते।

[6] समय के बंदी [7] तृष्णाओं के बंदी

87: बापू ले आया हाट से मिट्टी के खिलौने

बापू ले आया हाट से मिट्टी के खिलौने,
बच्चों की ख़ुशी पर लगाए माँ ने दिठौने[1]।

[1]बुरी नज़र से बचाने के लिए लगाया गया टीका

मिट्टी के हाथी घोड़ा पालकी सजा लिए,
बारातियों के हौसले लगते नहीं बौने।

पैरों की थकन छीन ली बच्चों के खेल ने,
हँस के दुआ दी दिल से एक राह-रौ[2] ने।

[2]मुसाफ़िर

बे-ख़्वाब सो रहे हैं अब थकान ओढ़कर,
रोटी में मिला स्वाद, लगे नर्म बिछौने।

घर लौटकर आते हैं बदन तोड़कर बापू,
दो जून की रोटी की फ़िक्र में हुए पौने।

मंदिर में चढ़ाने को टटोले तो थे सिक्के,
हाथों का बाँधकर था रक्खा **रौ-म-रौ**[3] ने।

[3]उहापोह

घर है नहीं सराय, है जन्नत यहाँ 'गौतम',
मिलती कहीं नहीं ऐसी ख़ुशियाँ औने-पौने।

88: जहाँ काई है वहाँ लोग फिसल सकते हैं

जहाँ काई है वहाँ लोग फिसल सकते हैं,
जमा के पाँव चलेंगे तो निकल सकते हैं।

सुब्ह-दम आए हैं मयख़ाने से करके तौबा,
दिन ढले तिश्ना-लब साग़र[1] को मचल सकते हैं।

[1] शराब का प्याला

खड़े फ़ुटपाथ पर हैं भींच कर मुट्ठी अपनी,
पा-ए-सौदाई[2] हैं सड़कों को कुचल सकते हैं।

[2] बावले पैरों वाले

राज़दार-ए-दिल-ए-बेताब[3] पाएदार[4] नहीं,
ज़िरह हो सख़्त तो हर राज़ उगल सकते हैं।

[3] बावले दिल का राज़ जानने वाला [4] भरोसा करने लायक

शुकर मना के नज़र नीची है दीवानों की,
नज़र उठा के ये माहौल बदल सकते हैं।

सुर्ख़-रू[5] **दौर-ए-रवाँ**[6] में वो बशर होते हैं,
वक़्त पर जो नए क़िरदार में ढल सकते हैं।

[5] सफल [6] आज के दौर में

तिलिस्म-ए-आह-ओ-फ़ुग़ाँ[7] अजीब है 'गौतम',
मोम की तरह संगदिल[8] भी पिघल सकते हैं।

[7] आह और विलाप का जादू [8] पत्थर दिल वाले

89: बाज़ार-ए-दहर है खुला चार-सू हर-आन

बाज़ार-ए-दहर[1] है खुला चार-सू हर-आन,
कुछ बेचना-ख़रीदना हो, आइये श्रीमान।

[1] दुनिया का बाज़ार

वाजिब लगाओ दाम तो पट जायेगा सौदा
बिकता है यहाँ थोक में इंसान-ओ-ईमान।

यह **उज्रत-ए-वक़ील**[2] है इंसाफ़ की क़ीमत
मिलता कहाँ है मुफ़्त में दूकान में सामान।

[2] वकील की फीस

जन्नत-ओ-हूर के लिए अब देगा जान कौन,
फेरा लगाता रोज़ है नासेह बदगुमान।

ये कू-ए-इश्क़ है कोई जा-ए-रहम नहीं,
मिलते याँ बेशुमार परेशान पशेमान।

अल्लाह की मेहर रहे बीमार-ए-इश्क़ पर
कोई दवा ईजाद नहीं कर सका लुकमान।

नायाब कुर्सियाँ हैं ये देतीं **हुकूक़-ए-ख़ास**[3],
बे-वजह नहीं करते खींचतान लीडरान।

[3] विशेष शक्ति

सच तो ये है जमूरे भी अब ऊब गए हैं,
फ़रमान मदारी का है 'शो मस्ट गो ऑन'।

नुक़्सान-ओ-नफ़ा का किया जायेगा हिसाब,
'गौतम' फ़रिश्ते हश्र के दिन लाएँगे मीज़ान[4]।

[4] तराजू

90: फिर दर-ए-जानाँ पे हाज़िर हो गए

फिर **दर-ए-जानाँ**[1] पे हाज़िर हो गए,
सर-ब-सज्दा[2] रोज़ काफ़िर हो गए।
[1]प्रिय की ड्योढ़ी [2]सर झुकाकर

आख़िरी मंज़िल समझ बैठे थे हम,
मरहला[3] था फिर मुसाफ़िर हो गए।
[3]पड़ाव/सोपान

एतिबार-ए-वादा अब क्योंकर करें,
राज़ हम पर सबके ज़ाहिर हो गए।

मेरी सोहबत ने उन्हें कामिल[4] किया,
वो मेरी दुनिया के क़ाहिर[5] हो गए।
[4]पूर्ण [5]सर्वेसर्वा (ईश्वर)

हाल-ए-अबतर[5] छिपाते किस तरह,
बज़्म से हम ग़ैर-हाज़िर हो गए।
[5]दयनीय स्थिति

आह भरके दास्ताँ अपनी कही,
और सब समझे के शाइर हो गए।

अपने दीवानों में हमको गिन लिया,
पहले भी थे और शाकिर[6] हो गए।
[6]आभारी

अब गिला 'गौतम' किसी से क्या करे,
सब गिला करने में माहिर हो गए।

91: इश्क़-ए-बुत कर अगर ज़ी-हौसला है

इश्क़-ए-बुत[1] कर अगर **ज़ी-हौसला**[2] है,
कू-ए-जानाँ[3] आशिक़ों का कर्बला[4] है।
[1]बुत (प्रिय) से प्यार [2]दिल में हिम्मत [3]प्रिय की गली [4]कर्बला का मैदान

कब सफ़र होगा मुकम्मल आपका,
करता मीर-ए-कारवाँ ही फ़ैसला है।

हम-वतन कहिए रक़ीबों को मगर,
इनसे ही रखना बनाकर फ़ासला है।

सू-ए-मक़्तल जाने वाले जान लें,
जाँ-निसारी[5] सबक भी है मरहला[6] है।
[5]जान देना [6]सोपान

दिन की शब में, शब की दिन में आरज़ू,
आरज़ूओं का अजब-सा सिलसिला है।

सहरा के दीवाने अब कहने लगे,
सब्ज़ा[7] तक **बे-आब**[8] कब फूला-फला है।
[7]घास [8]बिना पानी

वक़्त करवट लेगा 'गौतम' वक़्त पर,
बे-वजह का वक़्त से शिकवा-गिला है।

92: सूखा पनघट, छूछी गागर

सूखा पनघट, छूछी गागर,
आदमी के होश अबतर[1]।
[1]अस्त-व्यस्त

चढ़ गया हाकिम का पारा,
आज फ़ाइल से उलझकर।

सहरा के दीवाने कहते,
पाँव रख लो सिर के ऊपर।

ज़ाइचा देखो उठाकर
बाकी कितने दिन सनीचर।

तिश्ना-लब[2] तो **बे-सदा**[3] हैं,
आब-दीदा[4] देखे मुज़्तर[5]।
[2]प्यासे होंठ [2]खामोश [3]रुआसे [5]बेचैन

अब्र-आलूदा[7] फ़लक हो,
रक़्स-ए-ताऊस[8] जमकर।
[7]बादलों से भरा [8]मोर का नृत्य

हो **अता-ए-अब्र**[9] 'गौतम',
भीगने दे सबको जी-भर।
[9]बादलों का उपहार

93: कुछ नहीं बोलते पर ख़ैर-ख़बर रखते हैं

कुछ नहीं बोलते पर **ख़ैर-ख़बर**[1] रखते हैं,
ग़ैर-जज़्बाती[2] सही सब पे नज़र रखते हैं।

[1]जानकारी [2]भावना-शून्य

उसके कूचे में भीड़ बढ़ रही दीवानों की,
सितमगरी में नहीं कोर-कसर रखते हैं।

वो जिस निगाह में है मस्त-निगाही का भरम,
उसी निगाह में वो **बर्क़-ओ-शरर**[3] रखते हैं।

[3]बिजली और चिंगारियां

दलील-ओ-ज़िरह से सिरदर्द भी हो जाता है,
मुद्दई समझदार पेन-किलर रखते हैं।

मुक़ाबला बहुत दिलचस्प होने वाला है,
हम जिगर रखते हैं वो तीर-ए-नज़र रखते हैं।

सबके बस का नहीं होता है कारोबार-ए-इश्क़ ,
वो नहीं करते हैं जो **फ़िक्र-ए-ज़रर**[4] रखते हैं।

[4]हानि की चिंता

दरिया में डूबने का शौक़ हो पूरा कैसे,
उथले दरिया तो नहीं गहरे भँवर रखते हैं।

शजर की छाँव में लेकर वो तबर[5] बैठे हैं,
शजर अज़ीज़ उन्हें हैं जो समर[6] रखते हैं।

[5]कुल्हाड़ी [6]फल

हिज्र की रात में नींद आती नहीं है 'गौतम',
रात भर अपनी नज़र **सू-ए-सहर**[7] रखते हैं।

[7]सुबह की ओर

94: उनके ख़याल दिल में नक़ब काटते रहे

उनके ख़याल दिल में नक़ब[1] काटते रहे,
करवट बदल-बदल के ही शब काटते रहे।

[1]सेंध काटना

आवाज़-ए-अना[2] ने रोक दी **आवाज़-ए-हक़**[3],
ख़ामोशियों से **शोर-ओ-शग़ब**[4] काटते रहे।

[2]स्वाभिमान की आवाज़ [3]सत्य की आवाज़ [4]हल्ला-गुल्ला

महफ़िल को लूटने लगे जब से **क़सीदा-गो**[5],
नाख़ून सुख़नवर[6] बे-सबब काटते रहे।

[5]चापलूसी भरी कविता करने वाले [6]कवि/साहित्यकार

कुछ रिंद ने सवाल नागवार कर दिया,
नासेह मुट्ठी भींच कर लब काटते रहे।

अंदाज़-ए-महजबीन के हम भी बने मुरीद,
वो हँस के सबका **ग़ैज़-ओ-ग़ज़ब**[7] काटते रहे।

[7]नाराजी/गुस्सा

निकले थे कड़ी धूप में होकर शिकस्ता-पा,
ज़ेर-ए-शजर[8] ठहर के तअब[9] काटते रहे।

[8]पेड़ के नीचे [9]थकान

गो लाजवाब हो गया था रू-ब-रू 'गौतम'
वो मेरी हर एक बात अक़ब[10] काटते रहे।

[10]पीठ पीछे

95: छूटा है क़फ़स से, इसे परवाज़ अता कर

छूटा है क़फ़स[1] से, इसे परवाज़[2] अता कर,
इक बे-ज़बाँ परिंदे को आवाज़ अता कर।
[1]पिंजरा [2]उड़ान

मंज़िल की जुस्तजू में जो घर से निकल रहे,
रस्म-ए-दुआ सही **सर-ए-महाज़**[3] अता कर।
[3]प्रारंभ में

सरहद की बंदिशों को नहीं मानता दरिया,
इंसान को भी बहने की जवाज़[4] अता कर।
[4]अनुमति

हर गुफ़्त-ओ-गू के बाद गर्द दिल से साफ़ हो,
कहने का नया लहज़ा-ओ-अंदाज़ अता कर।

घेरे हैं **मीर-ए-बज़्म**[5] को क्योंकर **क़सीदा-गो**[6],
है **बज़्म-ए-अदब**[7] **अदब-नवाज़**[8] अता कर।
[1]सभा का सिरमौर [6]स्तुति गायक [7]साहित्यिक सभा [8]साहित्य में रूचि लेने वाले

जाएगा कौन कितनी दूर साथ क्या पता,
होगा सफ़र आसान गर **दम-साज़**[9] अता कर।
[9]आत्मीय मित्र

माना के एक भीड़ ने घेरा है सभी को,
जाए जो सबकी ओर वह अग़माज़[10] अता कर।
[10]दृष्टि

शिकवा-गिला एक दूसरे से माना है 'गौतम',
दोनो को साथ **पास-ओ-लिहाज़**[11] अता कर।
[11]शिष्टता और संकोच

96: रात का अंतिम पहर है, अब तो सो जाओ

रात का अंतिम पहर है, अब तो सो जाओ,
ज़ल्द होने को सहर[1] है, अब तो सो जाओ।

[1] सवेरा

रात-भर कोशिश करी है माह[2] छूने की,
बे-जुनूँ[3] होता बहर[4] है, अब तो सो जाओ।

[2] चाँद [3] शांत [4] समुद्र

चंद करवट दूर हैं अंगड़ाईयाँ सबकी,
जागने वाला दहर[5] है, अब तो सो जाओ।

[5] संसार

ख़त्म अब होने को आई क़मर[6] की पारी,
आने वाला अब महर[7] है, अब तो सो जाओ।

[6] चाँद [7] सूर्य

सोने वालों पर नहीं आई क़यामत कुछ,
अब नहीं होनी क़हर है, अब तो सो जाओ।

तुमने किस उम्मीद से तारे गिने 'गौतम',
इश्क़ की ये ही मेहर है, अब तो सो जाओ।

97: सहर में चाँद-सितारों को, डूबना होगा

सहर में चाँद-सितारों को, डूबना होगा,
चढ़ेगा दरिया, किनारों को डूबना होगा।

पकड़ ज़मीन पे मज़बूत नहीं होगी तो,
शिकस्ता-हाल[1] कगारों को डूबना होगा।
[1] हारे हुए (कमजोर)

दिल-ए-बेचैन का इलाज अगर साग़र[2] है,
इसी साग़र में हज़ारों को डूबना होगा।
[2] शराब का प्याला

अगर तूफ़ान समंदर के कान भर देगा,
सैलाब में **रूद-बारों**[3] को डूबना होगा।
[3] पानी से घिरे स्थान

बयाज़-ए-इश्क़[4] में हिसाब **हस्ब-ए-मामूल**[5],
नफ़ा सिफ़र[6] है ख़सारों[7] को डूबना होगा।
[4] इश्क की किताब [5] पहले जैसा [6] शून्य [7] हानि

भीड़ में अलहदा वजूद कहाँ रहता है,
भीड़ के साथ बेदारों[8] को डूबना होगा।
[8] होश वाले

दरिया-ए-वक़्त से की जिसने बग़ावत 'गौतम',
दरिया में बाग़ी बेचारों को डूबना होगा।

98: ज़ेहन में जम गया गर्द-ओ-गुबार साफ़ किया

ज़ेहन में जम गया गर्द-ओ-गुबार साफ़ किया,
सिलसिलेवार फिर दर-ओ-दीवार साफ़ किया।

दस्त से निकला **हिना-दस्त**[1], नहीं **बू-ए-हिना**[2],
दस्त को हालाँकि था बार-बार साफ़ किया।

[1] मेहंदी लगा हाथ [2] मेहंदी की खुश्बू

हो रही आज भी महसूस तपिश बोसे की,
बारहा अश्कों से हमने रुख़्सार साफ़ किया।

साफ़-गोई से कही बात की सफ़ाई में,
बारहा हुस्न से **लफ़्ज़-ए-इज़हार**[3] साफ़ किया।

[3] कहे गए शब्द

कभी-कभार गुफ़्त-ओ-गू भी काम आती है,
नुक़्ता-ए-नज़र[4] यूँ कभी-कभार साफ़ किया।

[4] दृष्टिकोण

शेख़ हमसे बहुत नाराज़ हो गया 'गौतम',
हरम और दैर का जिस दम असरार[5] साफ़ किया।

[6] भेद

99: कोई तिश्ना-लब जब बहकने लगा

कोई तिश्ना-लब जब बहकने लगा,
फिर आँखों से पानी बरसने लगा।

बे-हिस-ओ-तड़प[1] **संग-ए-दर**[2] पर पड़ा,
अचानक से क्यों दिल धड़कने लगा।
[1] निर्जीव [2] दरवाजे का पत्थर (देहरी)

थपककर सुलाया गया खाली पेट,
वो तिफ़्ल[3] नींद में भी सिसकने लगा।
[3] बच्चा

उसे बात कहनी थी दिल खोलकर,
मगर **सर-ब-सज्दा**[4] झिझकने लगा।
[4] सर झुका कर

है **दस्त-ए-दुआ**[5] साथ **हर्फ़-ए-दुआ**[6],
ये अंदाज़-ए-क़ातिल अखरने लगा।
[5] हाथ उठा कर दुआ करना [6] दुआ के शब्द

करी हूर-ओ-जन्नत की बातें तमाम,
तो **शेख़-ए-हरम**[7] अच्छा लगने लगा।
[7] मस्जिद का शेख़

कड़ी धूप में रहगुज़र में कभी,
शजर जब मिला पा ठिठकने लगा।

सुलह के लिए साथ बैठे थे वो,
सफ़ाई पर मुद्दा उलझने लगा।

यही दोस्त से हमको उम्मीद थी,
गिरा कर हमे वो संभलने लगा।

सबक दुनियादारी के मिलते रहे,
तो 'गौतम' भी कुछ-कुछ सुधरने लगा।

100: जब भी तन्हाइयों ने घेरा है

जब भी तन्हाइयों ने घेरा है,
दिल को परछाइयों ने घेरा है।

एक सूरत है घेरे आँखों को,
जिस्म अंगड़ाइयों ने घेरा है।

उसको घेरा मुसाहिबों ने है,
हमको रुस्वाइयों ने घेरा है।

हमने चाहा समेटना सब कुछ,
मुझे पहनाइयों[1] ने घेरा है।

[1] सीमाओं

उलझनें और बढ़ाने के लिए,
अक्सर दानाइयों ने घेरा है।

दिल बहलता नहीं किसी सूरत,
जबसे सच्चाइयों ने घेरा है।

हाल-ए-दिल किस तरह छुपायें हम,
फिर शनासाइयों[2] ने घेरा है।

[2] परिचितों ने

जंच रहा कोई भी नहीं, जब से
उसकी रानाइयों[3] ने घेरा है।

[3] सौन्दर्य

जब गया उसकी गली में 'गौतम',
कज-तमाशाइयों[4] ने घेरा है।

[4] मजा लेने वाले तमाशाई

101: आँख की हद से परे भी फ़लक होना चाहिए

आँख की हद से परे भी फ़लक होना चाहिए,
इन परिंदों का सफ़र वाँ-तलक होना चाहिए।

स्याह ज़ुल्फ़ों से ज़ियादा स्याह है **बे-माह**[1] शब,
हिज्र का रंग स्याह भी गुंजलक[2] होना चाहिए।
[1]बिना चाँद [2]गाढ़ा

आबले फूटे हैं जिस राही के उसके पाँव में,
रंग-ए-ख़ूँ जैसा **रंग-ए-कफ़क**[3] होना चाहिए।
[3]तलुए का रंग

गर मेरे हालात पर आँखें हैं बरसीं अब्र-सी,
रू-ब-रू चेहरा भी उसका धनक[4] होना चाहिए।
[4]इन्द्रधनुष

गर सितमगर हो रहा है आज दरियादिल तो फिर,
मेहरबाँ का यह करम हम-तलक होना चाहिए।

बे-झिझक जब आ जुटे हैं बज़्म में दीवाने सब,
नाला-ओ-फ़रियाद[5] भी बे-झिझक होना चाहिए।
[5]रोना-पीटना

माना पाँचों वक़्त की पढ़ते नमाज़ी हैं नमाज़,
ज़ेहन में उनके भी **ख़ौफ़-ए-मलक**[6] होना चाहिए।
[6]यमदूत

जीभ लेती स्वाद केवल एक चुटकी नमक का,
ख़ून में ता-उम्र सबके नमक होना चाहिए।

इश्क़ में 'गौतम' ज़रूरी होता है आदाब-ए-इश्क़,
इश्क़ में दीवानों को बे-सनक होना चाहिए।

102: आँखें किए थे बंद क्यों, बेदार अगर थे

आँखें किए थे बंद क्यों, बेदार अगर थे,
तुमको बयान देना था, तैयार अगर थे।

बे-वजह भरोसा बहुत करते हो दुआ पर,
ली क्यों नहीं दवा कोई, बीमार अगर थे।

सीते हैं लोग बारहा दामन को फाड़कर,
बे-कशमकश क्यों बैठे थे बेकार अगर थे।

एक आरज़ू-ए-लुत्फ़-ए-दीदार तो होगी,
सफ़ में खड़े थे किसलिए ख़ुद्दार अगर थे।

सूरत से क्यों बेहाल-ओ-बेकरार लग रहे,
मालिक की हर रज़ा में पुर-करार अगर थे।

बैठे रहे क्यों लोग तमाशाई की तरह,
तकरीर-दाँ[1] होशियार-असरदार अगर थे।

[1] भाषण कला का ज्ञाता

लुटने से ज़ियादा है ग़म लूटा हमे जिसने,
अपने से क्यों लगे थे वो अग़यार[2] अगर थे।

[2] अजनबी/अपरिचित

कुछ **एतिमाद-ए-लज़्ज़त-ए-आज़ार**[3] दिखाओ,
आह-ओ-फ़ुगाँ[4] पर **दौलत-ए-पिंदार**[5] अगर थे।।

[3] दुःख में आनंद का भरोसा [4] विलाप [5] गर्व की पूंजी

शर्मिंदगी की बात है चुप किसलिए रहे,
'गौतम' नज़र में मुल्क के गद्दार अगर थे।

103: रोज़ाना उनसे मिलने का रहता है इंतिज़ार

रोज़ाना उनसे मिलने का रहता है इंतिज़ार,
रुकता नहीं है सिलसिला-ए-रंजिश-ओ-तकरार।

बे-लुत्फ़-ओ-लज़्ज़त ही रहीं वस्ल की घड़ियाँ,
आदत सा एक बन गया है हिज्र सोगवार।

हो पाती नहीं गुफ़्त-ओ-गू बे-झिझक बे-पर्दा,
मुँह से नहीं तो आँखों से करते हैं ख़बरदार।

पुर-लुत्फ़ नहीं फिर भी कट रही है ज़िंदगी,
ना आरज़ू करते हैं ना बनते हैं गुनहगार।

ताबीर[1] सारे ख़्वाब हों मुमकिन नहीं माना,
लेकिन हवाई क़िले तो बनते हैं शानदार।

[1] *सच होना*

नाराज़ी में सरकार से शिकवा-गिला किया,
बदले में हमसे इसलिए नाराज़ हैं सरकार।

कब तक चलेगा कारोबार-ए-इश्क़ ये 'गौतम',
ना बेईमान हम हुए ना वो ईमानदार।

104: ज़ाइचा देखकर कल का क़यास करते हैं

ज़ाइचा[1] देखकर कल का क़यास[2] करते हैं,
वक़्त को बूझने का हम प्रयास करते हैं।

[1]कुंडली [2]प्रयास

याद आते हैं जब बे-स्वाद-ओ-कड़ुए लम्हे,
नई उम्मीद से पैदा मिठास करते हैं।

ख़ुशी हो ख़ास तो मय पीते हैं धीरे धीरे,
सदमे में झटके से खाली गिलास करते हैं।

घर की परदेस में शिद्दत से याद आती है,
घर की चौखट का ख़्वाब में आभास करते हैं।

बे-ज़बाँ लोग सुना था पसंद हैं सबको,
अपनी ख़ामोशी के मेयार[3] ख़ास करते हैं।

[3]मानक

वादा-ए-वस्ल का हम करते एतबार नहीं,
वादा-ए-वस्ल तो अक्सर उदास करते हैं।

रास आता नहीं है चैन-ओ-सुकूँ हमको,
कुछ-न-कुछ सोचकर दिल महव-ए-यास[4] करते हैं।

[4]दुःख में डूबना

मुरीद[5] तो नहीं पर करता हूँ पसंद उन्हें,
लोग जो काम बे-झिझक बिंदास करते हैं।

[5]भक्त

सर-ब-सज्दा[6] नहीं रहते हैं आस्तानों[7] पर,
बिना आवाज़ किए हम अरदास करते हैं।

[6]सर झुका हुआ [7]चौखटें

लोग हैरत से देखने हैं क्यों हमको 'गौतम',
हम वही करते हैं जो आम-ओ-ख़ास करते हैं।

105: मेरी तन्हाई वुसअत चाहती है

मेरी तन्हाई वुसअत[1] चाहती है,
मेरी हस्ती क़नाअत[2] चाहती है।
[1]विस्तार/फैलाव [2]सिकुड़ना/सीमित होना

नहीं होती वफ़ादारी सभी से,
वफ़ादारी तो रिफ़अत[3] चाहती है।
[3]ऊँचाई (गौरव)

नहीं ख़ामोश रहना चाहता अब,
मेरी बेदारी[4] जुरअत[5] चाहती है।
[4]होश [5]हिम्मत

नहीं मयख़ाना मेरे काम का है,
अगर साक़ी जमाअत[6] चाहती है।
[6]भीड़

अयादत करने वाले बाज़ आएँ,
थोड़ी राहत तबीअत चाहती है।

चलो आगाह अब यारों को कर दें,
के यारी उनसे वक़अत[7] चाहती है।
[7]सम्मान

मोहब्बत है **अता-ए-ग़ैब**[8] ज़ाहिद[9],
मोहब्बत सबसे बैअत[10] चाहती है।
[8]अदृश्य (ईश्वर) का वरदान [9]प्रवचनकर्ता [10]संकल्प

कफ़न नज़राने में है पेश 'गौतम',
अगरचे मौत ख़िलअत[11] चाहती है।
[11]सामान में दिया गया वस्त्र

106: दर्द-ए-हिज्र जब अश्कों से बयाँ होता है

दर्द-ए-हिज्र[1] जब अश्कों से बयाँ होता है,
रू-ब-रू **हाल-ए-पोशीदा**[2] अयाँ होता है।
[1]वियोग का दुःख [2]छुपा हुआ हाल

शब के सन्नाटे में है **लम्स-ए-हवा**[3] भी नहीं,
ऐसे हालात में सुकून कहाँ होता है।
[3]हवा का आभास

बात छोटी सही लेते हैं लोग दिलचस्पी,
क़िस्सा-गो देखिए किस पर मेहरबाँ होता है।

टोकना ठीक नहीं उसका रक़्स लाज़िम है,
चश्म-ए-ताऊस[4] में गर अब्र-ए-रवाँ होता है।
[4]मोर की आँख

रहती उम्मीद है फिर आग के भड़कने की,
राख के ढेर में जब तलक धुआँ होता है।

आज क़ातिल ने बुलाया है जिसे मक़्तल में,
ख़ुशी का मारा वो **बे-ताब-ओ-तवाँ**[5] होता है।
[5]हाथ-पैर फूलना

हादसे अब नहीं हैरत-ज़दा करते 'गौतम',
हादसा रोज़ कभी याँ कभी वाँ होता है।

107: रिंद कह कर गया ख़ुदा-हाफ़िज़

रिंद कह कर गया ख़ुदा-हाफ़िज़,
गोया मयख़ाने का ख़ुदा-हाफ़िज़।

सबको नासेह ने समझाया है,
दिल बुतों से न लगाना हरगिज़।

हमको दीवाना लग रहा है वो,
सूखे-सूखे से हैं लब-ओ-आरिज़।

लाख कोशिश करे मगर सच पर,
झूठ हो सकता है नहीं क़ाबिज़।

रू[1] मुकम्मल बयान था उसका,
रहा ख़ामोश **बंदा-ए-आजिज़**[2]।

[1] चेहरा [2] परेशान आदमी

वादे पर वादा करते जाते हो,
तौबा तौबा न कीजिए **जिज़-बिज़**[3]।

[3] परेशान करना

क्यों उदू[4] की हो ज़रूरत हमको,
दोस्त ही बन गए हैं मुआरिज़[5]।

[4] दुश्मन [5] विरोधी/प्रतिद्वंदी

जिन्दगी ख़ौफ़ में गुज़ारें क्यों,
बंदे-बंदे का है अल्लाह हाफ़िज़।

वस्ल हो या फ़िराक़ हो 'गौतम',
हाथ जो आए मानिए नाफ़िज़[6]।

[6] स्वीकृत (ऊपर वाले की मर्ज़ी)

108: सबने ही सूरत-ओ-सीरत देखी

सबने ही सूरत-ओ-सीरत देखी,
हमने हर शोख़ की नीयत देखी।

रिंद मयख़ाने को घर कहता है,
जहाँ साक़ी की हुकूमत देखी।

ज़िन्दगी मोल-भाव करती रही,
घटती इंसान की क़ीमत देखी।

झूठ का रंग उतर जाने पर,
झूठ की सबने असलियत देखी।

हर कहानी में हैं किरदार वही,
दोस्ती देखी, अदावत देखी।

कूचा-ए-जानाँ के दीवानों में,
हसरत-ए-दीद-ओ-वहशत[1] देखी।
[1] देखने और पागलपन की इच्छा

क़ुर्बत-ए-यार[2] के मुरीदों में,
मिलती सबको नहीं रहमत देखी।
[2] यार की सोहबत (निकटता)

इश्क़ की शर्त है फ़ुर्सत 'गौतम'
और फ़ुर्सत की है क़िल्लत[3] देखी।
[3] कमी

109: दुआ-गोई में अपने हाथ उठाकर आए

दुआ-गोई[1] में अपने हाथ उठाकर आए,
चराग़ बाल[2] के **बर-आब**[3] बहाकर आए।

[1]दुआ पढ़ना [2]जलाकर [3]पानी की सतह पर

रास्ता घर का भुला बैठे हैं जो परदेसी,
बंद बोतल में पता उनका सिराकर आए।

सुब्ह-दम काम पर जाना बहुत ज़रूरी है,
रात के ख़्वाबों को बिस्तर पे सुलाकर आए।

चुल्लू भर पानी में हम डूबते नहाते क्या,
जब ज़रूरत हुई गंगा में नहाकर आए।

हमको आवाज़ गुलाबों ने दी थी गुलशन से,
ख़ार के डर से हम दामन को बचाकर आए।

दर-ए-मयख़ाना पर करता वो चहल-क़दमी है,
आज नासेह से फिर चेहरा छुपाकर आए।

ज़िन्दगी चार दिन की होती है सबकी 'गौतम',
ज़ाइचा-गर[4] को ज़ाइचा क्यों दिखाकर आए।

[4]कुंडली पढ़ने वाला

110: लफ़्ज़-ए-संजीदा को वो शोख़-बयानी समझे

लफ़्ज़-ए-संजीदा[1] को वो **शोख़-बयानी**[2] समझे,
और जब समझे तो फिर गलत-बयानी समझे।
[1] गंभीर बात [2] हलकी-फुलकी बात

उसकी ज़ुल्फ़ों से पेच-ओ-ख़म हैं कहानी में मेरी,
उफ़! कहानी वो मेरी **तश्त-ए-ज़बानी**[3] समझे।
[3] बेहूदा

सितमगरी का हुनर हू-ब-हू लिखा हमने,
किसी बहाने से वो अपनी कहानी समझे।

मेरी सूरत से वो वाक़िफ़ भी हैं बेज़ार भी हैं,
शायद हर्फ़ों में जज़्ब[4] **दर्द-ए-निहानी**[5] समझे।
[4] संतृप्त [5] छुपा हुआ दर्द

पसंद सबको हैं रूमानी इश्क़ के क़िस्से,
सरफिरा हो कोई तो इश्क़-ए-रूहानी समझे।

सभी के पास हैं कुछ क़िस्से सुनाने के लिए,
अपने क़िस्से को ही सब लोग ला-सानी समझे।

लिए बैठा है अब तस्बीह[6] दस्त में 'गौतम',
हुस्न-ओ-इश्क़ के अफ़साने जवानी समझे।
[6] फेरने वाली माला

111: ज़िन्दगी लगती रही हमको ब-तरतीब नहीं

ज़िन्दगी लगती रही हमको **ब-तरतीब**[1] नहीं,
हाथ में आती कभी **लग़्ज़िश-ए-तरतीब**[2] नहीं।

[1] व्यवस्थित [2] व्यवस्था में कमियाँ

कूचा-ए-इश्क़ में बर्बाद कोई ऐसा नहीं,
जिसकी बर्बादी में हो दस्त-ए-रक़ीब नहीं।

दलील-ओ-ज़िरह-ओ-गवाह से मजबूर है वो,
यूँ भी मुंसिफ़ किसी का होता है हबीब नहीं।

संग-ए-आस्ताँ जानाँ का हो या दैर-ओ-हरम,
फ़क़ीर सारे हैं, अमीर और ग़रीब नहीं।

तिश्ना-लब दरिया से सू-ए-सराब जाते हैं,
और मंज़र ये किसी को लगा अजीब नहीं।

मचा रहे हैं चारों-सम्त सभी हा-ओ-हू ,
शोर था जिसका ये वो शहर-ए-तहज़ीब नहीं।

वक़्त के साथ चलें वक़्त की नसीहत है,
वक़्त को रोकने की है कोई तरकीब नहीं।

ज़िन्दगी ख़ुश-गवार भी नहीं लगती 'गौतम'
और दिल में हमारे **ख़्वाहिश-ओ-तरग़ीब**[3] नहीं।

[3] इच्छाएं और चाह/लालच

112: हैराँ हूँ, तारी सकता है

हैराँ हूँ, तारी सकता[1] है,
ऐसा कैसे हो सकता है।

[1]अचम्भित

कैसे हम अंदाज़ा करते,
किसके अंदर क्या पकता है।

दिल आवारा दिन ढलने पर,
क्यों मयख़ाने में रुकता है।

सब्र-तलब आशिक़ दीवाना,
क्यों जल्दी जाता उकता है।

अश्क-रेज़[2] आँखों के अंदर,
न जाने क्या-क्या फुँकता है।

[2]आँसू बहाती

मंज़िल तक पहुँचेगा कैसे,
चार क़दम पर जो थकता है।

ध्यान दिया जाए तो बेहतर,
ज़ेर-ए-बहस अगर नुक़्ता है।

अब तो हर बाज़ार में देखो,
इंसाँ ही सस्ता बिकता है।

बुरा वक़्त आने पर अक्सर,
सर सबके आगे झुकता है।

गाँव शहर में जब आता है,
याँ तकता है वाँ तकता है।

सूद मूल से ज़्यादा है जब,
ऐसा क़र्ज़ नहीं चुकता है।

हर चैनल पर देखो एंकर,
क्या कहता है, क्या ढकता है।
बात सुनेगा कौन किसी की,
जिसको भी देखो वक्ता है।

नए रंग की ग़ज़ल है 'गौतम',
नए रंग का यह मक़्ता है।

113: वीरानगी है शब में, है इज़्तिराब दिल में

वीरानगी है शब में, है इज़्तिराब[1] दिल में,
ख़ामोशियाँ हवा में, है इल्तिहाब[2] दिल में।

[1]बेचैनी [2]उत्तेजना

ना वक़्त का भरोसा, ना बख़्त[3] का यकीं है,
जान-ए-सुकून[4] होता, रहते जनाब दिल में।

[3]भाग्य [4] दिल की शांति

हम सख़्त धूप मे भी, सहरा को नाप आते,
गर आप साथ रहते, बनकर सहाब[5] दिल में।

[5]बादल

हम होते ना बे-पर्दा, हम करते ना बे-पर्दा,
रखते तेरे सितम का सारा हिसाब दिल में।

तुम रास्ते भी चुनते, तुम मंज़िलें भी चुनते,
हमराह अगर चुनते, रखते निसाब[6] दिल में।

[6]कार्यक्रम

एक भीड़ है ना-काफ़ी, बस चार यार काफ़ी,
रखिए संभाल कर अब ऐसे अहबाब दिल में।

बे-बात की अदावत, हर बात पर शिकायत,
बर-लब दुआ रहे और अदब-आदाब दिल में।

ना **फ़िक्र-ए-अज़ल**[7] है, ना **फ़िक्र-ए-अजल**[8] है,
बे-फ़िक्र ही 'गौतम' है, रखता है शाब[9] दिल में।

[7]आदि की चिंता [8]अंत (मृत्यु) की चिंता [9]जवानी

114: ख़लिश जावेदाँ है और साथ में तलवों में ख़ारिश है

ख़लिश[1] जावेदाँ[2] है और साथ में तलवों में ख़ारिश[3] है,
दर-ओ-दीवार से बाहर निकलने की सिफ़ारिश है।

[1]बेचैनी [2]अंतहीन [3]खुजली

सुब्ह-दम सब्ज़ा था गीला, मेरा दामन भी था गीला,
कोई है रात-भर रोया, नहीं यह फ़स्ल-ए-बारिश है।

न गुंजाइश है बचने की, न दिल में आरज़ू इसकी,
मेरी गर्दन पे तेग-ए-यार की अब आज यूरिश[4] है।

[4]हमला

बहुत दिन से हूँ मैं ऊबा, ग़म-ए-तन्हाई में डूबा,
चलो फिर घूम आयें, कूचा-ए-जानाँ में शोरिश[5] है।

[5]हंगामा

इलाज-ए-अस्ल तो हर बहस का है सबकी ख़ामोशी,
लबों को सी नहीं पाता, ज़बाँ में जिसके ख़ारिश है।

बहुत ज़्यादा की हसरत तो नहीं दिल में कभी रखते,
कभी दीदार हो जाए फ़क़त इतनी गुज़ारिश है।

बहुत उम्मीद लेकर आज महफ़िल में गया 'गौतम',
सुना वो देखेंगे दीवानों की क्या-क्या निगारिश[6] है।

[6]लेखन/विवरण

115: सज्दे में भी ख़याल-ए-जानाँ नहीं गया

सज्दे में भी **ख़याल-ए-जानाँ**[1] नहीं गया,
हैरत की बात है मेरा ईमाँ नहीं गया।

[1] प्रिय का ध्यान

पुख़्ता बहुत है यूँ तो एतिबार-ए-ख़ुदा,
दिल से कभी भी **फ़िक्र-ए-ज़ियाँ**[2] नहीं गया।

[2] हानि की चिंता

समझा दिया है जाने क्या नासेह ने उसको,
फिर चारागर के पास नीम-जाँ नहीं गया।

आँखों को जलाता रहा आँखों में उतरकर,
अश्कों में जज़्ब हो गया धुआँ नहीं गया।

राहों में भटकते रहे वो **राह-दाँ**[3] जिनके,
दिल से **ख़याल-ए-ज़ुल्फ़-ए-पेचाँ**[4] नहीं गया।

[3] रास्ता जानने वाले [4] घुंघराले बालों का ध्यान

आया है कू-ए-यार को कहकर ख़ुदा-हाफ़िज़,
दीवाने का **अंदाज़-ए-नाज़ाँ**[5] नहीं गया।

[5] घमंड प्रिय का

मरने की दुआ माँगता रहता था हर घड़ी,
मरने के वक़्त शादाँ[6]-ओ-फ़रहाँ[7] नहीं गया।

[6] प्रसन्न [7] मस्त

आएगा बिन बुलाए ये उम्मीद नहीं है,
वह सर-फिरा हरम में बे-अज़ाँ नहीं गया।

बातें तो उसने गौर से सबकी सुनी 'गौतम',
फिर पास होश-मंदों के नादाँ नहीं गया।

116: आया है आज डाक से फिर नामा-ए-आँगन

आया है आज डाक से फिर नामा-ए-आँगन,
दीवार-ओ-दर हैं माँग रहे रंग-ओ-रोग़न।

बादल लगे हैं देने फिर से कानों में दस्तक,
इस साल फिर से टपकेगा हर कमरे का छाजन।

घुटनों के दर्द से कराहने लगी हैं अब,
अम्मा पे न इस बार पड़े भारी ये सीलन।

चूड़ी नियम से तुलसी को देती रही पानी ,
देहरी पे लगी आँख खोजती रही साजन।

झूले भी नहीं सोहते न सोहती कजरी,
हर बार बरस जाता है आँखों में ही सावन।

बेज़ार हो गए हैं अब सूरत से भी अपनी,
मुद्दत से पड़ा ताक पर उल्टा हुआ दर्पन।

परदेस में घर याद नहीं आता क्या 'गौतम',
क्या दे सवाल का जवाब भीगता दामन।

117: हम उसे करते क्यों सलाम नहीं

हम उसे करते क्यों सलाम नहीं,
क्यों वो करता है राम-राम नहीं।

साथ रहते हैं, बात होती नहीं
किसलिए कोई हम-कलाम नहीं।

चार-सू शोर से ये ज़ाहिर है,
शहर मे लोग कम-कलाम नहीं।

बैठकर मुद्दों को सुलझा लेते,
हम नहीं, तुम भी ला-कलाम नहीं।

लोग हैं बे-शुमार फिर इनमें
दूसरा क्यों अबुल-कलाम नहीं।

रहे तहजीब यह गंगा-जमुनी,
ख़तरे में हिंद-ओ-इस्लाम नहीं।

ख़ाक-ज़ादे भी हम, शह-ज़ादे हम,
किसी का कोई भी ग़ुलाम नहीं।

तेरी ग़ैरत में मेरी ग़ैरत हो,
अगर ग़ैरत करी नीलाम नहीं।

ख़ौफ़ दिल में रहे हमसाया[1] का,
इससे बढ़कर कोई आलाम[2] नहीं।

[1] पड़ोसी [2] मुसिबत/दुःख

पास[3] सब में हो हिंद का 'गौतम',
है ज़रूरी कोई एलाम[4] नहीं।

[3] सम्मान [4] घोषणापत्र

118: सोते-सोते बहुत बड़बड़ाने लगे

सोते-सोते बहुत बड़बड़ाने लगे,
पर-कटे पंछी हैं फड़फड़ाने लगे।

ये असर **इज़्ज़-अफ़ज़ाई**[1] का देखिए,
लोग बे-पर की ज़्यादा उड़ाने लगे।
[7]सम्मान देना

रिंद मय का भरम इस तरह रख रहे,
सामने साक़ी के लड़खड़ाने लगे।

पीठ पीछे की बातें नहीं जानता,
लोग अब सामने मुँह चिढ़ाने लगे।

काम आए तमाशाई मक़्तल[2] में सब,
हौसला तालियों से बढ़ाने लगे।
[2]वध स्थल

ख़ौफ़-ए-जाँ था नहीं, मौत आई तो फिर,
ज़िन्दगी के लिए गिड़गिड़ाने लगे।

कल का दिन तो इन्हीं नौजवानों का है,
अपने उस्तादों को हैं पढ़ाने लगे।

नीम-बेहोशी[3] में हम रहे मौज में,
होके बेदार[4] फिर गड़बड़ाने लगे।
[3]अर्ध-मूर्छित [4]जागना (होश आना)

कर्ब-ए-तन्हाई[5] में कुछ ख़लल न पड़े,
हम मुँडेरों से कौआ उड़ाने लगे।
[5]सुबह का एकांत

इतनी तारीख़ है मुद्दई माँगता,

अब तो मुंसिफ़ भी हैं चिड़चिड़ाने लगे।

लग रहा ये शहर हमको दीवानों का,
ओले गिरते ही सब सर मुँडाने लगे।

अब्र जाते कभी सू-ए-सहरा नहीं,
दरिया को देखकर गड़गड़ाने लगे।
कल कहा इश्क़ में वो है अंधा हुआ,
आज फिर से नज़र हैं लड़ाने लगे।

हमको उम्मीद थी आज ठहरेंगे वो,
मेरे मेहमान तो हड़बड़ाने लगे।

लग रहे आज संजीदा हाकिम हमें,
हुक्का वो आज फिर गुड़गुड़ाने लगे।

जो नहीं आते 'गौतम' कभी वक़्त पर,
ख़्वाब में रेल-सा धड़धड़ाने लगे।

119: ज़ुल्फ़-ए-यार को सुलझाने की

ज़ुल्फ़-ए-यार को सुलझाने की,
ज़िद करी उलझनें बढ़ाने की।

इश्क़ की राह के दीवाने हैं,
उम्र है सीखने-सिखाने की।

जिसने ठोकर पे ज़माना रक्खा,
बात सुनता नहीं ज़माने की।

आस्ताँ पर पड़े हैं सजदे में,
जुस्तजू क्यों करें ठिकाने की।

वादा हम गांठ बाँध लेते हैं,
उनकी आदत है भूल जाने की।

शेख़ मय-ख़ाने में आए हो तो,
बात कर पीने की पिलाने की।

मौत फिर आना कभी फ़ुर्सत से,
कहाँ फ़ुर्सत है ज़हर खाने की।

शुक्रिया आने का, मगर 'गौतम',
बात थी बे-नक़ाब आने की।

120: सैलाब है दरिया में, ग़ज़ब का बहाव है

सैलाब है दरिया में, ग़ज़ब का बहाव है,
है जोश मगर पास में काग़ज़ की नाव है।

मनमौजी अब्र से ये गुज़ारिश करी जाए,
सहरा में देख आए कहाँ जल-जमाव है।

लगती है आदमी सी हमें फितरत-ए-दरिया,
अपने ही किनारों पे डालता दबाव है।

सोता नहीं है आजकल वो गहरी नींद में,
आया शहर की ज़द में सुना उसका गाँव है।

यह ज़िन्दगी के रास्ते आसान नहीं हैं,
इन रास्तों पे रहती सदा धूप-छाँव है।

दीवाना नहीं इश्क़ का, है वक़्त का मारा,
सीने में गहरा दर्द ज़ेहन में तनाव है।

बहते हैं लोग वक़्त के धारे के साथ-साथ,
मजबूरी भी है और यही चल-चलाव है।

आते हैं गरजते हैं बरसते भी हैं 'गौतम',
माहौल बता देता है आया चुनाव है।

121: ज़बाँ पे दिल की बात आई नहीं

ज़बाँ पे दिल की बात आई नहीं,
और कुछ दी गई सफ़ाई नहीं।

लोग दरयाफ़्त करने निकले हैं,
क्या कहीं होती है सुनवाई नहीं।

सबको देखा संभल के चलते हुए,
कहीं कीचड़ भी नहीं काई नहीं।

कोई तक़रीर दे गया वाइज़,
बात हमको समझ में आई नहीं।

सबको महसूस हो रही है तपिश,
धुआँ कहीं पड़ा दिखाई नहीं।

या-ख़ुदा ख़ैर हो दीवानों की,
उसके चेहरे पे है रुखाई नहीं।

गुफ़्त-ओ-गू उसने की नहीं हमसे,
बात हमने भी कुछ बढ़ाई नहीं।

लोग सी-कर लबों को बैठे हैं,
इसलिए होती है लड़ाई नहीं।

यार लेते नहीं ख़बर मेरी,
और हम देते हैं दुहाई नहीं।

ग़म किसी बात का नहीं 'गौतम',
ऐसे दावे में है सच्चाई नहीं।

122: अच्छा होता अगर मिलते जनाब फ़ुर्सत से

अच्छा होता अगर मिलते जनाब फ़ुर्सत से,
ग़म-ए-फ़ुर्कत[1] का वो लेते हिसाब फ़ुर्सत से।
[1]जुदाई का कष्ट

सूख जाते हैं शजर[2] धूप के निकलते ही,
भीगने देते एक दिन सहाब[3] फ़ुर्सत से।
[2]पेड़ [3]बादल

महर[4] के उठने पर होती है रौशनी दिन की,
कभी आता नहीं है इंक़लाब फ़ुर्सत से।
[4]सूरज

उठा तो सकते हैं हम आसमान को सर पर,
एक मौका हो अगर दस्तियाब[5] फ़ुर्सत से।
[5]हाथ आना

चारागर को है बहुत फ़िक्र **अहल-ए-दुनिया**[6] की,
यानी दीवाने होंगे शिफ़ायाब[7] फ़ुर्सत से।
[6]दुनिया वालों की [7]सेहतमंद

अभी पायाब[8] है सर्याब[9] तो हो जाने दो,
दरिया से वादा है होंगे ग़र्क़ाब[10] फ़ुर्सत से।
[8]उथला (घुटनों तक) [9]गहरा (सर तक) [10]डूबना

घेर रक्खा है ग़म-ए-रोज़गार ने इस दम,
साक़ी जाने दो पियेंगे शराब फ़ुर्सत से।

वक़्त कम होने पर सुनते नहीं सवालों को,
जवाब देते हैं वो लाजवाब फ़ुर्सत से।

अभी गुल-दान में सजा दें इन गुलाबों को,
यक़ीं है लेंगे वो बू-ए-गुलाब फ़ुर्सत से।

मिलने का दिल है तो पहले पता कर लो 'गौतम',
किस समय रहते हैं आली-जनाब फ़ुर्सत से।

123 क़दम ठहर गए साँसों का सफ़र जारी है

क़दम ठहर गए साँसों का सफ़र जारी है,
तेज़ रफ़्तार से यादों का सफ़र जारी है।

हमको तन्हाई का एहसास नहीं होता है,
तेरे ख़यालों से बातों का सफ़र जारी है।

वो शब-ए-ग़म वो तल्ख़ इंतिज़ार का आलम,
अभी भी हिज्र की रातों का सफ़र जारी है।

ख़त्म होने को चला चाँद-सितारों का सफ़र,
अभी भी इश्क़ के मारों का सफ़र जारी है।

साथ चलते रहे गुमनाम हमसफ़र की तरह,
नेक दो-चार इरादों का सफ़र जारी है।

बारहा टीसने लगते हैं बे-वजह अक्सर,
भर चुके ज़ख़्म, बेचारों का सफ़र जारी है।

तुम्ही नहीं हो अकेले **शिकस्ता-पाँव**[1] यहाँ
तुम्हारे जैसे हज़ारों का सफ़र जारी है।

[1] थके पाँव

बहर[2] की प्यास बुझाए नहीं बुझती 'गौतम',
अज़ल[3] से दरिया के धारों का सफ़र जारी है।

[2] समुद्र [3] अनादि काल से

124: खाली नहीं है घर अभी ठहरा हुआ हूँ मैं

खाली नहीं है घर अभी ठहरा हुआ हूँ मैं,
देखो किसी के साथ ही बिखरा हुआ हूँ मैं।

उठता नहीं सवाल किसी हार-जीत का,
तन्हा बचा बिसात का मोहरा हुआ हूँ मैं।

दिखता तो हूँ **सराब-सा**[1] मैं दूर से लेकिन,
अब तिश्ना-लबों के लिए सहरा[2] हुआ हूँ मैं।
[1]मृगमरीचिका जैसा [2]रेगिस्तान

आईने में पहचान नहीं पाया मैं जिसको,
हैरान करने वाला वो चेहरा हुआ हूँ मैं।

आती नहीं अज़ान की आवाज़ कान तक,
तन्हाईयों के शोर से बहरा हुआ हूँ मैं।

दर और दरीचों पे लगा दी हैं साँकलें,
पाबंदी धूप पर है गो ठिठुरा हुआ हूँ मैं।

दर पर अभी टंगी हुई एक नेमप्लेट हूँ,
गोया के सबके वास्ते फहरा हुआ हूँ मैं।

कुव्वत[3] न आरज़ू है **सर-ए-सज्दा**[4] हो 'गौतम',
यादों के आस्ताने[5] पर दोहरा हुआ हूँ मैं।
[3]सामर्थ्य [4]सर झुकाना [5]देहरी

125: रू-ब-रू चेहरा बे-नक़ाब किया

रू-ब-रू चेहरा बे-नक़ाब किया,
सादा-दिल[1] आपने ख़राब किया।
[1] सरल-सीधा

मेरे सवाल पर ख़ामोश रहे,
इसतरह हमको लाजवाब किया।

गर अयादत[2] के लिए आए थे,
क्यों रक़ीबों से फिर ख़िताब[3] किया।
[2] हाल-चाल पूछना [3] संबोधन/नज़र डालना

पूछ कर मेरा तआरुफ़[4] मुझसे,
मुझे शर्मिन्दा क्यों जनाब किया।
[4] परिचय

गिला करने पे रूठ कर क्योंकर,
गिला-मंदों को आब-आब किया।

लोग काँटों की तरह चुभने लगे,
पेश हमने जिसे गुलाब किया।

चश्म-नम उसको पोछते देखा,
हमने आहों को **असर-याब**[5] किया।
[5] प्रभावकारी

देखा 'गौतम' को तिरछी नज़रों से,
और फिर दिल को इज़्तिराब[6] किया।
[6] बेचैन

126: एक चिंगारी से क्या कुछ नहीं जल सकता है

एक चिंगारी से क्या कुछ नहीं जल सकता है,
एक काँटे से तो काँटा भी निकल सकता है।

सिर्फ बच्चे ही बहलते नहीं हैं बातों से,
एक उम्मीद से दीवाना बहल सकता है।

शिकस्ता-पाँव पर भी लोग जिस्म ढोते हैं,
वक़्त पर आदमी तो सिर के बल चल सकता है।

खून जमते हुए देखा है नसों में हमने,
सुना था हमने ये आँखों से उबल सकता है।

दिल करे आपका तो ये भी तसव्वुर[1] कर लें,
सहाब[2] ज़िद करे तो महर[3] निगल सकता है।
[1] कल्पना [2] बादल [3] सूरज

ज़मीं पे पाँव जमा कर सँभल-सँभल के चले,
सुना है दौड़ने वाला तो फिसल सकता है।

मोम और बर्फ़ की औक़ात कुछ नहीं 'गौतम',
धूप हो तेज तो इंसान पिघल सकता है।

127: कोई भी रिश्ता बे-ख़ुलूस न हो

कोई भी रिश्ता **बे-ख़ुलूस**[1] न हो,
दोस्त बेहतर है चापलूस न हो।
[1]कपटता भरा

बात कोई भी रहे **ज़ेर-ए-बहस**[2],
दास्तान-ए-दिल-ए-मायूस न हो।
[2]बहस के अंतर्गत

सहाब[3] **बे-शबाब**[4] है, जब तक,
नज़र में रक़्स[5]-ए-ताऊस[6] न हो।
[3]बादल [4]घना नहीं [5]नृत्य [6]मोर

रोज़-ए-मय्यत[7] न बुलाना उसको,
साथ दीवानों का जुलूस न हो।
[7]दफ़न करने वाला दिन

भीड़ को किसलिए देखे कोई,
जिसमें दीवाना **बिल-ख़ुसूस**[8] न हो।
[8]विशेष

तेग़-ए-तेज़ लिए क़ातिल है,
दर्द शायद हमें महसूस न हो।

सँभल के अजनबी से बात करें,
किसी रक़ीब का जासूस न हो।

क्या पता हम-क़दम जो साथ में है,
अजनबी हो कोई, मानूस[9] न हो।
[9]मित्र/परिचित

घर में चुपचाप ही रहिए 'गौतम',
अगर **पयाम-ए-मख़्सूस**[10] न हो।

10 विशेष आमंत्रण/अनुरोध

128: नाव जब छोड़ के नाख़ुदा उतर जाते हैं

नाव जब छोड़ के नाख़ुदा[1] उतर जाते हैं,
सवार धार के संग **सू-ए-बहर**[2] जाते हैं।

[1] मल्लाह [2] समुद्र की ओर

आदमी रंग बदलता है फ़ितरतन अपने,
बड़ी मुश्किल से मगर ऐब-ओ-हुनर जाते हैं।

मंज़िल-ओ-मरहलों से पहले से वाक़िफ़ हैं जो,
सफ़र में ऐसे राहदाँ बे-फ़िकर जाते हैं।

दलील-ओ-जिरह का मुंसिफ़ पे क्या असर होगा,
मुद्दई के अगर गवाह मुकर जाते हैं।

लोग बे-वजह आँधियों से गिला करते हैं,
ज़र्द पत्ते शजर से वैसे भी झर जाते हैं।

सियासी आदमी मौका-परस्त होते हैं,
वादा करते हैं इधर का और उधर जाते हैं।

राब्ता हमसे नहीं रखता है वह शेख़-ए-हरम,
क्या पता हरम से निकल के किधर जाते हैं।

सामने सबके पूछते हैं तआरुफ़ 'गौतम',
शोख़ के ऐसे ही अंदाज़ अखर जाते हैं

129: थोड़ा आपस में सरोकार रहे

थोड़ा आपस में सरोकार रहे,
आदमी है तो क्यों बेज़ार रहे।

काम आती नहीं मसीहाई,
ख़ुद मसीहा अगर बीमार रहे।

तौबा! उम्मीद-ए-ना-उम्मीदी,
जानते-बूझते मिस्मार[1] रहे।

[1] *तबाह*

लेके आए नहीं राहत की ख़बर,
सनसनीखेज सब अख़बार रहे।

बात करने से बात बढ़ती है,
बे-ज़बाँ लोग समझदार रहे।

ख़्वाब को ख़्वाब मानकर देखा,
रात भर नींद में बेदार[2] रहे।

[2] *होशमंद*

कोई सौदा नहीं पटा हमसे,
खड़े हम भी सर-ए-बाज़ार रहे।

बज़्म में थे कई **क़सीदा-ख़्वाँ**[3],
जो सुख़नवर गए, बेकार रहे।

[3] *बड़ाई करने वाले*

उनसे दुनिया की बात क्या करते,
जो **असीर-ए-दर-ओ-दीवार**[4] रहे।

[4] *घर में बंद*

ग़ैर से बे-ख़बर-रहे 'गौतम',

और साये से ख़बरदार रहे।

130: चारागर नेक-दुआएँ भी दे रहे हैं हमें

चारागर नेक-दुआएँ भी दे रहे हैं हमें,
दवा के साथ ग़िज़ाएँ[1] भी दे रहे हैं हमें।

[1]स्वास्थ्यप्रद भोजन

किया गया है अता हिज्र[2] का **कोह-ए-ज़ुलमत**[3],
रुख़-ए-रौशन[4] की ज़ियाएँ[5] भी दे रहे हैं हमें।

[2] वियोग [3]पहाड़ जैसा अँधेरा [4]दमकता चेहरा [5]रौशनी

बंद उसने किए हैं दर-ओ-दरीचे हम पर,
और चुपके से सदाएँ[6] भी दे रहे हैं हमें।

[6]पुकार

जिसने अंदाज़-ए-वफ़ाओं से नवाज़ा था,
लुत्फ़-अंदोज़[7] ज़फ़ाएँ भी दे रहे हैं हमें।

[7]प्रसन्नता भरी

नाम मेरे वो लिख रहे हैं सारे रंज-ओ-अलम,
अपने हिस्से की ख़लाएँ[8] भी दे रहे हैं हमें।

[8]शुन्य

हमको गुस्ताख़ बनाते रहे अदाओं से,
और अब **अर्ज़-ए-ख़ताएँ**[9] भी दे रहे हैं हमें।

[9]त्रुटियों की सूची

ख़ुदा के नाम का पैगाम शेख़ ने भेजा,
हरम से रोज़ निदाएँ[10] भी दे रहे हैं हमें।

[10]प्रार्थना (नमाज़) के लिए आह्वान

कासा-ए-दस्त-ए-दुआ अता किया हमको,
बड़ी हैरत है अनाएँ[11] भी दे रहे हैं हमें।

[11]घमंड

दुआ दी लम्बी उमर की मेरे अहबाबों[12] ने,

दुआ के साथ सज़ाएँ भी दे रहे हैं हमें।

[12] दोस्त

उसकी हसरत है उसे भूल न जाए 'गौतम',
वो सितमगर हैं बलाएँ भी दे रहे हैं हमें।

131 रश्क पहले अक्स से करने लगे

रश्क पहले अक्स से करने लगे,
दोस्ती फिर अक्स से करने लगे।

रफ़्ता रफ़्ता दोस्ती बढ़ती गई,
बात हरदम अक्स से करने लगे।

नज़र आ जाए कमी गर अक्स में
आईना-शिकनी[1] सनम करने लगे।
[1] दर्पण को तोड़ना

मशवरा मिलने लगा है अक्स से,
और ज़्यादा देखिए सजने लगे।

आईने से जब मोहब्बत हो गई,
गर्द पर अब ग़ौर हैं करने लगे।

राज़ अपने ख़ुद पे ज़ाहिर जब हुए,
आईने से शोख़ हैं डरने लगे।

हम रक़ीबों में उन्हें क्यों न गिनें,
अपनी सूरत पर हैं वो मरने लगे।

एक नज़र 'गौतम' पे शायद आ पड़े,
हम छुपा कर आईना धरने लगे।

132: ज़िन्दगी है या झमेला

ज़िन्दगी है या झमेला,
भीड़ है, इंसाँ अकेला।

ज़ेहन में सूरत हज़ारों,
जाँ अकेली, दिल अकेला।

कोशिशें तो की गईं हैं,
वो न बहला, मैं न बहला।

जिसकी कुछ क़ीमत नहीं है,
मैं वही सिक्का अधेला।

साँस पर काबू नहीं है,
पाँव है रोके हठीला

टिकट आरक्षित है सबका,
ज़ल्दी में है जिसने ठेला।

फ़ायदा समझा रहा है,
नीम पर चढ़कर करेला।

निकले हैं घर से नहाकर,
पैरहन को करने मैला।

ढो रहा है जाने क्या-क्या,
आदमी है या है ठेला।

किस जगह बैठोगे 'गौतम',
चार-सू सामान फैला।

133: हुस्न पुर-आन-ओ-अदा देखा

हुस्न पुर-आन[1]-ओ-अदा[2] देखा,
उसका अपना ही क़ायदा[3] देखा।

[1]गौरव [2]लालित्य [3]नियम

कूचा-ए- जानाँ में दीवाने बढ़े,
आशिक़ाँ को बे-फ़ायदा देखा।

भीड़ में हालाँकि खड़ा था वो,
भीड़ से उसको अलहदा देखा।

पढ़ के आईन बताएँ आलिम,
उसने हमसे है क्या जुदा देखा।

दैर है ना ये हरम है कोई,
हमने रिंदों का मय-कदा देखा।

संग पूजो या सनम को पूजो,
हर जगह शान-ए-ख़ुदा देखा।

कृष्ण की तरह मिल सुदामा से,
कृष्ण ने कब था ओहदा देखा।

कासा-ए-दस्त है खाली सबका,
माँगता शाह-ओ-गदा[4] देखा।

[4]भिखारी

करता सबसे वो मोहब्बत 'गौतम' ,
शेख़ बे-वजह अरबदा[5] देखा।

[5]झगड़ने वाला

134: उसके अपने ही शग़ल अपने ही मसाइल हैं

उसके अपने ही शग़ल[1] अपने ही मसाइल[2] हैं,
मुद्दे रखते हैं ज़ेर-ए-बहस जो ला-ताइल[3] हैं।

[1]कार्य [2]समस्याएँ [3]अनुचित नहीं

नुक़्ते से नुक़्ता जोड़ कर कमाल करते हैं,
बात उलझाने में माहिर हैं, लोग क़ाइल हैं।

जब कभी बोलते हैं ख़ौफ़-ज़दा करते हैं,
लोग हैं मानते वो सबकी रखते फ़ाइल हैं।

निशाना-बाज़ी में सुनते हैं शोख़ अव्वल हैं,
पास है तीर-ए-नज़र, तानों की मिसाइल हैं।

वो संगदिल हैं, सितमगर हैं, बे-मुरव्वत हैं,
वो बे-लिहाज़-ओ-हया लड़ते फ्री-स्टाइल हैं।

अपने लोगों को भी देते नहीं सारे नम्बर,
एक से ज़्यादा पास रखते जो मोबाइल हैं।

गुरूर-ए-जानाँ से ज़ाहिर ये राज़ होता है,
कूचा-ए- जानाँ में जो भी हैं खड़े साइल[4] हैं।

[4]भिखारी

यह हुनर उससे सीखना है ज़रूरी 'गौतम',
सबको लगता रहा वो उसकी ओर माइल[5] हैं।

[5]आकृष्ट

135: बीच तूफ़ान में वो जाएगा लेकर कश्ती

बीच तूफ़ान में वो जाएगा लेकर कश्ती,
ज़िद्द है आज डुबोएगा वो ग़म-ए-हस्ती।

तेज़ आँथी से चंद पेड़ उखड़ जाते हैं,
कैसा तूफ़ाँ था ले गया उखाड़ कर बस्ती।

बड़ी ख़ामोशी से सफ़ में खड़े रहे आशिक़,
कूचा-ए-यार की अच्छी लगी बंदोबस्ती।

दर-ब-दर घूमते फ़क़ीर ने ख़बर दी है,
बढ़ती महँगाई से लोगों में बढ़ी तंग-दस्ती।

रिंद दामन छुड़ा के आ गया मय-ख़ाने में,
दैर-ओ-हरम उससे करते थे ज़बरदस्ती।

नफ़ा-नुक़्सान का अंदाज़ा करें अहल-ए-दहर,
मौत बदले में ज़िन्दगी के लग रही सस्ती।

ज़रूर रात भर ख़्वाबों के पीछे भागे हैं,
सुब्ह-दम उठ के वो महसूस कर रही सुस्ती।

ज़र नहीं पास हो तो गहरी नींद आती है,
रहे **बे-फ़िक्र-ए-नक़ब**[1] ख़ैर से है अस्ती।

[1] चोरी से निश्चिंत [2] अस्तित्व

लोग ख़ूगर[3] मसाइलों के हैं हलकान न हो,
यार के कूचे तक जाकर करो मटर-गश्ती।

[3] अभ्यस्त

सबकी आँखों में खटकता है, लाज़मी है ये,
मौज में रहता है करता है रोज़ाना मस्ती।

तुम्हें लोगों से बहस करनी नहीं थी 'गौतम',
देख लो आज नहीं साथ कोई हम-दस्ती[4]।

4 हाथ में हाथ (साथ)

136: अक़्स अब तो आईना हमको है दिखलाने लगा

अक़्स अब तो आईना हमको है दिखलाने लगा,
हमको जिसको भूलना था और याद आने लगा।

चाहते थे चारागर आकर दवा दे या दुआ,
इश्क़ से परहेज़ पर वह राय फ़रमाने लगा।

आलिमों को मामला सुलझाना था मिल-बैठ के,
चीखने चिल्लाने से माहौल गरमाने लगा।

झील में बर-आब[1] बिखरी चाँदनी से पूछिए,
ख़ुश-नज़र जो भी कमल था कैसे कुम्हलाने लगा।

[1] जल की सतह

तिफ़्ल[2] आया बज़्म में जो थाम कर उँगली मेरी,
बज़्म के हमको अदब-आदाब समझाने लगा।

[2] बच्चा

कशमकश कोई नहीं तो सो नहीं पाता है वह,
गाँठ ख़ुद दिल में लगा कर उसको सुलझाने लगा।

सीधे-सादे रास्तों पर सफ़र में है क्या मज़ा,
राह-दाँ[3] यह मानकर है ख़ुद को भटकाने लगा।

[3] रस्ते से परिचित

राब्ता[4] 'गौतम' नहीं रखता है ऐसे दोस्त से,
दफ़अ'तन[5] गर सामने आया तो कतराने लगा।

[4] सम्पर्क [5] अचानक

137 शिकायतों का वो पुलिंदा है

शिकायतों का वो पुलिंदा है,
बहुत हैराँ हूँ अभी ज़िंदा है।

आह होठों पे आ गई होगी,
हमने देखा उसे शर्मिंदा है।

फ़लक की ओर देखता ही नहीं,
क़फ़स में क़ैद जो परिंदा है।

अगरचे ला-मकान वो भी है,
इसी शहर का वो बाशिंदा है।

ख़याल उसका रख रहे हैं सब,
कल की **तहरीर-ए-आइन्दा**[1] है।

[1] भविष्य का लेख (रुपरेखा)

पास उसके नहीं है खोने को,
चेहरे से लग रहा जोइंदा[2] है।

[2] खोजने में व्यस्त

बज़्म में हा-ओ-हू नहीं करता,
किसकदर **मर्द-ए-पाइंदा**[3] है।

[3] अनुशासित

नई उम्मीद कीजिए 'गौतम',
अगर **हयात-ए-आइंदा**[4] है।

[4] अगला जीवन

138: सफ़ीना नाख़ुदा लेकर चला किनारे पर

सफ़ीना नाख़ुदा लेकर चला किनारे पर,
धार दरिया की थी तूफ़ान के इजारे[1] पर।

[1] नियंत्रण

साथ देखे गए हैं बैठे आलिम-ओ-फ़ाज़िल,
देखिए एक राय होंगे किस शुमारे[2] पर।

[2] मुद्दा

बीच आँगन में उसके देखी है दीवार खड़ी,
बात वो हमसे कर रहा था भाई-चारे पर।

उनसे उम्मीद थी बेबाक तब्सिरा[3] की हमें,
अटक गए किताब के किसी सिपारे[4] पर।

[3] टिपण्णी/सार-संक्षेप [2] अध्याय

पहले माहौल बनाया चराग़ गुल[5] कर के,
चाँद-तारों से हुई बात फिर अँधियारे पर।

[5] बुझाना

वो तजरबात की दौलत छुपा के रखता है,
किसी से चर्चा नहीं करता है ख़सारे[6] पर।

[6] हानि

मुद्दे तक़रीर में दोहराए गए बोसीदा[7],
तालियाँ लोगों ने पीटी थीं नए नारे पर।

[7] पुराने/बासी

गर्म मुद्दा है तो ना दीजिए हवा 'गौतम',
राख जम जायेगी फिर देखना अँगारे पर।

139: तन्हाई में उसने था दिल-ओ-जाँ को टटोला

तन्हाई में उसने था दिल-ओ-जाँ को टटोला,
अपने ही हर सवाल को फिर टाला-मटोला।

एक हमसफ़र के साथ था पुर-लुत्फ़ हर सफ़र,
हालाँकि था तकलीफ़देह पा[1] में फफोला।

[1] पाँव

शिद्दत[2] की धूप में भी बे-दस्तार[3] ही रहा,
आदत तपिश[3] की उसको है, सीने में है शोला।

[2] तेजी [3] बिना पगड़ी [4] ताप/गरमी

मुद्दे तो बोलने के लिए बे-शुमार हैं,
वो जान-बूझ कर कभी कुछ भी नहीं बोला।

बे-बाँह की कमीज पहनता है ये कह कर,
ना साँप को पालेगा ना पालेगा संपोला।

दिन में भी ख़्वाब देखता है आँख मूंद-कर,
कुछ देर को बनाता है दिल उड़न-खटोला।

अब तो बची उम्मीद है केवल सहाब[5] से,
तिश्ना-लबों को पानी नहीं मिल रहा कोला[6]।

[5] बादल [6] कोका-कोला

वह आदमी इकहरा है तौलेंगे बाद में,
पहले वजन शिकायतों का ही गया तोला।

मानूस[7] लग रहा था गो[8] अग्यार[9] था 'गौतम',
पहचान उसकी काँधे पे मटमैला सा झोला।

[7] जाना-पहचाना [8] यद्यपि [9] अपरचित

140: थका-थका सा लगा सुब्ह नींद से उठकर

थका-थका सा लगा सुब्ह नींद से उठकर,
किया है उसने रात में कोई तवील[1] सफ़र।
[1]लम्बा

कुछ एक लोग बंद आँख किए दिखते हैं,
वो आस-पास के हालात पे रखते हैं नज़र।

एक दिन ऊबकर बीमार उठ के बैठ गया,
चारागर कहता है देखो मेरी दवा का असर।

शाम मय-ख़ाने में वाइज़ को देखा था जाते,
क्या पता सुबह तलक उसने मचाया हो ग़दर।

न तो झगड़े की न सुलह की कोई गुंजाइश,
देखता है वो इधर और देखता वो उधर।

सबका **अंदाज़-ए-ख़सारा**[2] जुदा होता है,
सबका **अंदाज़-ए-नफ़ा**[3] तो इश्क़ में है सिफ़र।
[2]हानि का अनुमान [2]लाभ का अनुमान
वक़्त ही **मीर-ए-सफ़र**[4] है सबका दुनिया में,
तय वही करता है जाएगा कौन कब-ओ-किधर।
[4]यात्रा का सरदार

निकल के घर से लौट कर नहीं आया 'गौतम',
लोग अख़बारों से ही लेंगे उसकी खोज-ख़बर।

141: राह पे या तो बे-ठिकाना है

राह पे या तो बे-ठिकाना है,
या जुनूनी है या दीवाना है।

जिस्म के नीचे है ज़मीन बिछी,
फ़लक का सर पे शामियाना है।

किसी का इंतिज़ार है शायद,
नींद न आना तो बहाना है।

सवाब या जवाब की ख़ातिर,
जबीं के नीचे आस्ताना है।

चाँद-तारों की निगहबानी में,
चैन से सोया तो सयाना है।

मिलती तारीख़-पर-तारीख़ रही,
गोया मुंसिफ़ से कुछ याराना है।

क्या हुआ याद करते रात गई,
दिन भी इस तरह ही बिताना है।

ज़ख़्म यारों ने दिया है 'गौतम',
क़ुबूल कीजिए शुकराना है।

142: रहरव-ए-राह-ए-इश्क़ चल आहिस्ता आहिस्ता

रहरव-ए-राह-ए-इश्क़[1] चल आहिस्ता आहिस्ता,
चौरस[2] नहीं ये राह चल आहिस्ता आहिस्ता।

[1] प्यार की राह पर चलने वाले [2] समतल

इसमें है समझदारी रक़ीबों से हो यारी,
फिर सबको करें बे-दख़ल आहिस्ता आहिस्ता।

कुछ देर ना-मुराद हसरतें सताएंगी,
जायेंगी हसरतें निकल आहिस्ता आहिस्ता।

साक़ी से मिले जाम साथ नज़र-ए-इनायत,
होगा बहुत नशा संभल आहिस्ता आहिस्ता।

आशिक़ पे भारी होती ही हैं हिज्र की रातें,
अफ़सुर्दगी[3] से फिर निकल आहिस्ता आहिस्ता।

[3] दुःख की स्थिति

रुख़ से नक़ाब एक दिन सरकाया जाएगा,
सब देखेंगे खिलता कंवल आहिस्ता आहिस्ता।

हो **सब्र-तलब**[4] थाम कर दिल बैठो बज़्म में,
धड़के तो धड़कने दो दिल आहिस्ता आहिस्ता।

[4] धैर्य चाहना

साँसों के साथ जारी रहेगा सफ़र 'गौतम',
मंज़िल के वास्ते मचल आहिस्ता आहिस्ता।

143: ख़ुश्बू की तरह हाथ वो आया कभी नहीं

ख़ुश्बू की तरह हाथ वो आया कभी नहीं,
जाता ख़याल उसका ख़ुदाया कभी नहीं।

पुर-लुत्फ़ दर्द-ए-ज़ख़्म है लगने लगा हमें,
तीर-ए-नज़र से ख़ुद को बचाया कभी नहीं।

उसकी गली से हम नहीं उठ कर हरम[1] गए,
बा-ख़बर[2] शेख़ ने भी बुलाया कभी नहीं।
[1]मस्जिद [2]जानकार

हमने तो रूठने की अदा सीखी है उससे,
अफ़सोस है कि उसने मनाया कभी नहीं।

उसकी गली में ही कटी है उम्र-ए-तमाम,
लेकर उठेंगे **उम्र-ए-बक़ाया**[3] कभी नहीं।
[3]शेष उम्र

हम कर नहीं पाए कभी भी **अर्ज़-ए-तलब**[4],
हमने ख़ुदी[5] को अपनी भुलाया कभी नहीं।
[4]जरूरतों के लिए प्रार्थना [5]स्वाभिमान

हम सुनते रहे ग़ौर से बेकार की बातें,
नासेह का दिल हमने दुखाया कभी नहीं।

गो सर-ब-सज्दा रहते हैं हम शोख़ के आगे,
मानेंगे ख़ुद को उसकी रिआया[6] कभी नहीं।
[6]प्रजा

हम शिकवा-ओ-गिला नहीं करते हैं आदतन,
ऐसा नहीं के उसने सताया कभी नहीं।

महफ़िल में ग़ैर की कभी जाता नहीं 'गौतम',

ये सच है कि ग़ैरों ने बुलाया कभी नहीं।

144: बर-आब अक़्स-ए-माह दिखा झील में, लेकिन

बर-आब[1] **अक़्स-ए-माह**[2] दिखा झील में, लेकिन,
वो **माह-रू**[3] नज़र में था **तख़ईल**[4] में, लेकिन।
[1]पानी की सतह [2]चाँद की प्रतिबिम्ब [3]चाँद-सा चेहरा [4]कल्पना

मुंसिफ़ समझना चाहता था मामला मेरा,
उलझा रहा वकील की दलील में, लेकिन।

अपनी ज़बान से बयान देने थे आए,
खोया हर एक लफ़्ज़ **क़ाल-ओ-क़ील**[5] में, लेकिन।
[5]शोर

एक भीड़ साथ आई थी पिछले पड़ाव तक,
ठहरे हैं तन्हा **दश्त-ए-बे-नख़ील**[6] में, लेकिन।
[6]बिना नखलिस्तान का रेगिस्तान

आए थे मेरे साथ कुछ ख़याल-ओ-ख़्वाब भी,
ख़ामोशियाँ ही साथ हैं अकील[7] में, लेकिन।
[7]एकाकीपन

सोचा था कल हरम[8] में हाज़िरी लगायेंगे,
उलझे हैं ज़िन्दगी के मसाईल[9] में, लेकिन।
[8]मस्जिद [9]समस्याएं

सर करने के लिए मेरी मंज़िल नज़र में थी,
उलझे रहे **ताख़ील-ओ-ताजील**[10] में, लेकिन।
[10]झिझक और जल्दबाजी

कोशिश वो कर रहा था मुझे पढ़ने की 'गौतम',
पोशीदा[11] शिकन[12] सारी हैं जबीन[13] में, लेकिन।
[11]छुपा हुआ [12]चिंता की लकीरें [13]मस्तक

145: अख़बार में दीवाने बना लेंगे सुर्ख़ियाँ

अख़बार में दीवाने बना लेंगे सुर्ख़ियाँ,
फाड़ेंगे पैरहन को दिखायेंगे शोख़ियाँ।

चाहा था हमने बज़्म में आयें कढ़े[1] हुए,
निकले खरीदने के लिए लोग कंघियाँ।

[1] सुलझे हुए

तक़रीर-दाँ[2] के हुनर के सारे हुए मुरीद,
सबने बजाई तालियों के साथ सीटियाँ।

[2] भाषण कला में दक्ष

करता दहर[3] को जो नज़र-अंदाज़ नहीं है,
उसके कलाम में नज़र आती हैं तल्ख़ियाँ[4]।

[3] दुनिया [4] कड़ुवाहट

मालूम किसी को नहीं मजबूरियाँ उसकी,
बाज़ार में जो बैठा है **बे-फ़िक्र-ए-ज़ियाँ**[5]।

[5] हानि की चिंता से दूर

देखा है पहली बार एक राय सभी को,
फबती नहीं हैं कोठियों के साथ झुग्गियाँ।

अच्छाइयों की गिनती किसी ने करी नहीं,
सब लोगों ने गिनाई दूसरों की ग़लतियाँ।

इंसाफ़ मे कुछ देर है अंधेर नहीं है,
सुन कर लगाने आ गए हैं लोग अर्ज़ियाँ।

हल्ला हुआ ख़राब ज़माने की हवा है,
हर समझदार बंद कर रहा है खिड़कियाँ।

झंडे बहुत बड़े हैं डंडियाँ बहुत छोटी,
दस्त-ए-अलम-बरदार ने माँगी हैं लाठियाँ।

नाज़ुक बहुत हैं ख़्वाब काँच की तरह 'गौतम',
भर देते हैं आँखों में टूटकर ये किर्चियाँ[6]।

[6]कांच के टुकड़े

146: दस्त फैलाए हुए हर तरफ़ फ़क़ीर मिले

दस्त फैलाए हुए हर तरफ़ फ़क़ीर मिले,
देखना है किसे **ख़ैरात-ओ-तौक़ीर**[1] मिले।
[1]दान और प्रतिष्ठा

अपनी तक़दीर को कोसा है बैठकर उसने,
चाहता था के उसे शाह सी तक़दीर मिले।

क़सीदा-गो[2] हमें महफ़िल में नज़र आते हैं,
हमसुख़न के कलाम भी **पय-ए-तशहीर**[3] मिले।
[2]तारीफ़ में कविता लिखना [3]आत्म-विज्ञापन

तलाश कर रहे थे भीड़ में नए चेहरे,
मगर मिले जो वो लकीर के फ़क़ीर मिले।

ये कू-ए-इश्क़ है ये बाइस-ए-सुकून नहीं,
वस्ल में, हिज्र में, दीदार में तफ़कीर[4] मिले।
[4]व्यग्रता

ना हथकड़ी दिखी ना पाँव में ज़ंजीर कोई,
कूचा-ए-जानाँ में बस ज़ुल्फ़ के असीर मिले।

कलाम कैसे और किसलिए करे 'गौतम',
लबों पे हर समय गर **नुक़्ता-ए-हक़ीर**[5] मिले।
[5]निंदनीय मुद्दे

147: सजदे के वास्ते हमें तस्वीर तो दे दो

सजदे के वास्ते हमें तस्वीर तो दे दो,
तन्हाई के लिए हमें तदबीर तो दे दो।

एक दर्द-ए-ला-इलाज दिए जा रहे हो गर,
आँखों को चंद ख़्वाबों की जागीर तो दे दो।

भर पाए नहीं वक़्त ज़ख़्म कर अता ऐसे,
रख लेंगे सनद की तरह तौक़ीर[1] तो दे दो।

[1] सम्मान

तिश्ना-लबों[2] के नाम पे एक **जाम-ए-मुरव्वत**[3],
या ग़र्क़ जिसमें हों वो **आब-गीर**[4] तो दे दो।

[2] प्यासे/सूखे होंठ [3] मेहरबानी का प्याला [4] तालाब/झील

कर लेंगे क़त्ल ख़ुद को तेरा नाम न लेंगे,
तुम अपने हाथ से हमें शमशीर[5] तो दे दो।

[5] तलवार

अफ़साने में न ज़िक्र है न नाम कहीं पर,
बर-सर-ए-हाशिया[6] **दम-ए-तहरीर**[7] तो दे दो।

[6] पेज में छोड़े गए मार्जिन पर [7] लिखते समय

इस मोड़ पर अजल[8] तलक बैठा रहे 'गौतम',
वादे की शक्ल में सही, ज़ंजीर तो दे दो।

[8] अंतिम समय तक (मृत्यु)

148: दोनो को ही क़िस्मत से बराबर से गिला है

दोनो को ही क़िस्मत से बराबर से गिला है,
यह पहली बार है दिल-ओ-दिमाग़ मिला है।

इक ख़ुशनुमा परिंदे ने ऐलान किया है,
जैसे हो माह अब्र में ज़ुल्फ़ों में जिला[1] है।

[1] रौशनी

चलता जो रेंगकर है वो ठोकर से क्यों डरे,
सर की सलामती में महज घुटना छिला है।

गो है अदा-ए-हुस्न शमा का सहर तलक,
परवानों के लिए शमा **अज़ीज़-ए-दिला**[2] है।

[2] हर दिल को प्रिय

ज़ेर-ए-बहस नहीं रहा बुनियाद का मुद्दा,
तामीर[3] किया जा रहा हवाई-क़िला है।

[3] खाका तैयार करना

औकात कुछ नहीं किसी की वक़्त के आगे,
तन कर खड़ा दरख़्त भी तूफ़ाँ में हिला है।

दीवाना अपना मान लिया उसने है 'गौतम',
दीवानेपन का अस्ल में ये **अज्र-ओ-सिला**[4] है।

[4] हर्जाना/मुआवजा और पुरस्कार

149: सामने सबके मेरा ज़िक्र नहीं करते हैं

सामने सबके मेरा ज़िक्र नहीं करते हैं,
ऐसा लगता है मेरी फ़िक्र नहीं करते हैं।

एक एहसास-ए-इज़्तिराब छेड़ता तो है,
शोख़ का ज़िक्र दम-ए-ज़िक्र नहीं करते हैं।

सामने उसके मसाइल हैं ज़माने भर के,
मेरे लिए वो बज़्म-ए-फ़िक्र नहीं करते हैं।

हमसे नाराज़ बहुत दैर-ओ-हरम होंगे,
ख़याल-ए-दीन दम-ए-फ़िक्र नहीं करते हैं।

गर शब-ए-हिज्र के ख़याल से घबरायेंगे,
तो मय-ओ-जाम भी बे-फ़िक्र नहीं करते हैं।

लाख मायूस ज़िन्दगी ने कर दिया लेकिन,
मौत की बात अहल-ए-फ़िक्र नहीं करते हैं।

लोग सूरत से तो बा-फ़िक्र लग रहे थे हमें,
किसी अग़्यार को हम-फ़िक्र नहीं करते हैं।

हम रक़ीबों को उदू मानते नहीं 'गौतम',
अगरचे पेश वो ख़ुश-फ़िक्र नहीं करते हैं।

150: किया था आने का वादा जनाब आए नहीं

किया था आने का वादा जनाब आए नहीं,
जगे थे इंतिज़ार-कश तो ख़्वाब आए नहीं।

तेज़ तूफ़ान में जो जड़ से उखड़ जाते हैं,
उन दरख़्तों पे फिर **गुल-ए-शादाब**[1] आए नहीं।

[1]नए फूल

एक उम्मीद से छत पर नज़र गड़ाए रहे,
माह[2] को देखने पर माहताब[3] आए नहीं।

[2]चाँद [3]चाँद (जैसा महबूब)

हुक्म देकर उसे कुछ रंज तो हुआ होगा,
गली में फिर कभी ख़ाना-ख़राब आए नहीं।

यक़ीन करिए चाहकर भी ये नहीं होगा,
के सुबह लौटकर ये आफ़ताब आए नहीं।

लगा के दे रहे थे पानी भी बिला-नाग़ा,
बबूल बढ़ते रहे पर गुलाब आए नहीं।

हमने देखे हैं बे-शुमार **अश्क-बार**[4] वहाँ,
बात हैरत की है देखो सैलाब आए नहीं।

[4] आँसू बहाने वाले

उसकी महफ़िल से देखकर है आ रहा 'गौतम',
मुसाहिबों को अदब-ओ-आदाब आए नहीं।

151: ज़मीं पर वह खड़ा सर पर उठाकर आसमाँ है

ज़मीं पर वह खड़ा सर पर उठाकर आसमाँ है,
यक़ीनन फिर नज़र को हो रहा वहम-ओ-गुमाँ है।

लगा है जाना-पहचाना सफ़र भी, मरहले[1] भी,
मिला है हर क़दम पर जो मेरा **पा-ए-निशाँ** है।

[1] सोपान/पड़ाव [2] पदचिन्ह

ये दिन भी आज का कल जैसा बीत जाना था,
सहर से शाम तक जो गुज़रा **बोसीदा-बयाँ**[3] है।

[3] बासी कहानी

हरम[4] से, **कूचा-ए-जानाँ**[5] से कतराने लगा हूँ,
ज़ेहन मे आजकल अब **फ़िक्र-ए-सूद-ओ-ज़ियाँ**[6] है।

[4] मस्जिद [5] प्रिय का स्थान [6] लाभ-हानि की चिंता

वही है **दास्तान-ए-शब**[7] वही है **ज़ुल्मत-ए-दिल**[8],
वही लौ कंपकंपाती छोड़ती शब भर धुआँ है।

[7] रात की कहानी [8] ह्रदय का अंधकार

नहीं बाकी है **सोज़-ए-इश्क़**[9] 'गौतम' आशिक़ों में,
बची अब हुस्न में **शोख़ी-ओ-बेबाकी**[10] कहाँ है।

[9] प्यार का उन्माद [10] शरारत और हिम्मत

152: है कितने दिन ये ठौर-ठिकाना पता नहीं

है कितने दिन ये ठौर-ठिकाना पता नहीं,
उठ कर यहाँ से है कहाँ जाना पता नहीं।

किश्तों में वक़्त काट रहा है मेरा वजूद,
बाकी है और कितना चुकाना पता नहीं।

घुटनों को मोड़कर बदन दोहरा किया गया,
सर और होगा कितना झुकाना पता नहीं।

अफ़सोस जता कर चला गया तबीब[1] है,
किसको कहाँ है नब्ज़ दिखाना पता नहीं।

[1] चिकित्सक/हकीम

ऐसे भी क़ैद-ए-ज़ुल्फ़ मिले कू-ए-इश्क़ में,
कब किस तरह बना वो यगाना[2] पता नहीं।

[2] विशेष

दैर-ओ-हरम के बीच बैठा देखा है हरदम,
ग़ाफ़िल है कोई या है सयाना पता नहीं।

नासेह को कल देखा पता पूछ रहा था,
करता है क्यों तलाश-ए-मयख़ाना पता नहीं।

कुछ ख़ास हुनर सीखना लगता है ज़रूरी,
बेदार[2] को है कैसे जगाना पता नहीं।

[2] होश में

सीधी सी बात पर मेरी क्यों देते तवज्ज़ोह,
बनता है किस तरह से फ़साना पता नहीं।

लगता नहीं वो इस दहर[3] का आदमी 'गौतम',
कहता है उसे अपना बेगाना पता नहीं।

3संसार

153: बशर की आह में कुछ तो असर नज़र आए

बशर[1] की आह में कुछ तो असर नज़र आए,
ज़ुल्मत-ए-शब[2] के बाद तो सहर नज़र आए।
[1]इंसान [2]अँधेरी रात

मिले तो हाल-ए-सफ़र नहीं पूछा हमने,
वो पसीने से हमें तर-ब-तर नज़र आए।

इश्क़ की आग में जलने में मज़ा आएगा,
उधर भी सीने में कोई शरर[2] नज़र आए।
[2]चिंगारी

मुझे यक़ीं नहीं जो सोचा है हो जाएगा,
इधर जो हाल है वैसा उधर नज़र आए।

हबीब[3] हैं, रक़ीब[4] हैं, उदू[5] हैं घेरे हुए,
हमें इस भीड़ में इक मोतबर[6] नज़र आए।
[3]दोस्त, [4]प्रतिद्वंदी [5]शत्रु [6]भरोसे वाला

रास्ते सारे शहर के गए उस कूचे तक,
जो जाये दिल तलक वो रहगुज़र नज़र आए।

नब्ज़ बीमार-ए-इश्क़ की पकड़ में आई नहीं,
फिर उसके बाद कहाँ चारागर नज़र आए।

दुआ लबों से नहीं दिल से दीजिए 'गौतम',
कभी तो कोई दुआ पुर-असर नज़र आए।

154: जमा कर पैर चलने वाले भी देखा है फिसले हैं

जमा कर पैर चलने वाले भी देखा है फिसले हैं,
ये **कू-ए-इश्क़**[1] है बचकर सयाने याँ से निकले हैं।

[1] प्यार की गली

समझना है अगर, जाती बहस है दूर तक कितनी,
तो चल कर बात छेड़ें रिंद से पीकर जो उबले[2] हैं।

[2] बहके हुए

ये ज़िद छोड़ो, हथेली पर नहीं सरसों जमा सकते,
बची जुम्बिश[3] न हाथों में तो क्यों अरमान मचले हैं।

[3] हरकत

ज़रूरी तो नहीं सब **आतिशे-दरिया**[4] में ही डूबें,
शग़ल[5] पूरा वहाँ कर लें जहाँ पर नाले उथले हैं।

[4] आग की नदी [5] मजा

अगर इजहारे-दिल करना है तो फिर खुल के ही करिए,
जो बातें फुसफुसा कर होती हैं उनमे ही घपले हैं।

किसी बस्ती तलक याँ से भी पगडंडी गई होगी,
अभी तो राज-पथ लगता है आलीशान बंगले हैं।

नहीं दुश्वार होगा इनको बहलाना मना लेना,
वो **बे-दस्तार**[6] भी हैं पैरहन[7] भी मैले-कुचले हैं।

[6] बिना पगड़ी [7] परिधान

यक़ीं करिए मेरा हर दौर में वो **सुर्ख़-रू**[8] होंगे,
लबों पे उनके हर मौके के लायक ख़ास जुमले हैं।

[8] सफल

नया यह दौर है, इसका चलन भी फ़र्क़ है 'गौतम',
शहर की फ़िक्र में क़ाज़ी नहीं अब होते दुबले हैं।

155: कभी कभी अवाक करता है

कभी कभी अवाक करता है,
काम वो ख़तरनाक करता है।

बैठकर तन्हा वो तन्हाई से,
गुफ़्तोगू तो बेबाक करता है।

सर से पा-तलक रहा ख़ाकिस्तर[1],
ख़ुदी[2] भी सर-ए-ख़ाक[3] करता है।
[1]धूल में [2]स्वाभिमान [3]धूल के नीचे

जुनून-ओ-अज़्म[4] में कभी दामन,
कभी वो सीना चाक करता है।
[4]बहुत पागलपन

वक़्त से हार मान लेता है,
जान लेकिन हलाक करता है।

कहता रहता है **बा-ए-बिस्मिल्लाह**[5],
गोया हर काम पाक करता है।
[5]अल्लाह के नाम पर

छोड़ आया है कूचा-ए-जानाँ,
बस कभी ताक-झाँक करता है।

आदतन बोलता नहीं 'गौतम',
सलाम **पुर-तपाक**[6] करता है।
[6]फ़ौरन

156: ज़िन्दगी जीना उहापोह में है

ज़िन्दगी जीना उहापोह में है,
कभी तन्हा कभी अम्बोह[1] में है।
[1] भीड़

ख़ैर कब तक रहे ख़ुदा जाने,
शिकार **चश्म-ए-तवज्ज़ोह**[2] में है।
[2] ध्यान से देखती आँख

सुना है कारवाँ में रहज़न[3] हैं,
राह-रौ[4] लग रहा गिरोह में है।
[3] लुटेरे [4] सहयात्री

जीत कर भी तो हार जाना है,
ख़ून अपना अगर विद्रोह में है।

बारहा घर को पलटकर देखा,
जाने वाला अभी भी मोह में है।

सू-ए-मयख़ाना जा रहा है वो,
कुछ हुआ है बहुत अंदोह[5] में है।
[5] रंज में

जो भी आता है अयादत के लिए,
मझे लगता है किसी टोह में है।

बला-ए-कोह[6] ज़िन्दगी है अगर,
देखा जाए जो **पस-ए-कोह**[7] में है।
[6] पहाड़ जैसी मुसीबत [7] पहाड़ के पीछे

बे-सरोकार ही रहा 'गौतम',
ऐसे जीता है जैसे खोह में है।

157: साथ में सरकश हवा के एक चिंगारी तो हो

साथ में सरकश[1] हवा के एक चिंगारी तो हो,
आग लफ़्ज़ों से लगा सकते हैं तैयारी तो हो।

[1] अवज्ञाकारी

आपकी तक़रीर पे ताली बजा सकते हैं सब,
एक दिन लेकिन सभी से **गर्म-ग़ुफ़्तारी**[2] तो हो।

[2] दिल से बात

सर-ब-सज्दा[3] रहने में हमको कहाँ एतराज है,
अपने हिस्से में ज़रा सी **फ़ैज़-ए-बारी**[4] तो हो।

[3] झुका हुआ सर [4] अल्लाह की दया

एक बुत के वास्ते ता-उम्र हम काफ़िर हुए,
और अब ये ज़िद्द है मुझ में **निगूँ-सारी**[5] तो हो।

[5] लज्जा से झुका सर

दास्तान-ए-दर्दे-दिल कहने में आता है मज़ा,
सुनने वाले की तरफ से चद हुंकारी तो हो।

ग़ौर से लोगों की बातें सुनने का है क़ाइदा,
बात का मतलब समझने की समझदारी तो हो।

आह-ओ-फ़रियाद 'गौतम' इश्क़ में करता नहीं,
आदमी को आदमी कहता है, ख़ुद्दारी तो हो।

158: सबको सैलाब में आख़िर नाख़ुदा याद आया

सबको सैलाब में आख़िर नाख़ुदा याद आया,
सनम-परस्ती[1] में काफ़िर[2] को ख़ुदा याद आया।

[1]प्रिय की पूजा [2]साकार उपासक

हरम से लौट कर देखा बहुत उदास था वो,
सजदे में फिर से **दर-ए-शोख़-कदा**[3] याद आया।

[3]चंचल प्रिय के घर का दरवाजा

भुला दिया है ग़म-ए-रोज़गार में ख़ुद को,
वो एक ख़्वाब मगर यदा-कदा याद आया।

आदतन शिकवा-गिला करने जा रहे थे हम,
दफ़अ'तन[4] जो नसीब में है बदा याद आया।

[4]अचानक

फिर से आने का था वादा किया एहसान किया,
बार-ए-एहसान[5] ये सीने पे लदा याद आया।

[5]एहसान का बोझ

भर गया है हमारी पीठ पर ज़ख़्म-ए-ख़ंजर,
टीसने लगता है जिस-दम **कज-अदा**[6] याद आया।

[6]कपटी/घात करने वाला

सुना है मय की सिफ़त[7] अच्छी नहीं होती है,
ग़म-ज़दा लोगों को लेकिन मय-कदा याद आया।

[7]गुण/प्रभाव

या-ख़ुदा[8], या-ख़ुदा दीवाने कह रहे थे उधर,
ख़ुदा-क़सम[9] **तमाशा-बीं**[10] को ख़ुदा याद आया।

[8]हे भगवान् [9]भगवान् की सौगंध [10]तमाशा देखने वाला

इश्क़ का नाम अब कभी नहीं लेता 'गौतम'

इश्क़ के नाम पर एक ख़ौफ़ज़दा याद आया।

159: लबों पे हास-ओ-परिहास रहा

लबों पे हास-ओ-परिहास रहा,
शब-ए-तन्हाई[1] में उदास रहा।
[1] अकेली रात

एक मुद्दत हुई दीदार हुए,
मगर वो दिल के आस-पास रहा।

पूछते हैं वो तआरुफ़[2] हमसे,
कभी उसका था **ख़ास-उल-ख़ास**[3] रहा।
[2] परिचय [3] सबसे प्रमुख

क्यों उसे कू-ए-यार मानें हम,
जिसमें एक राह-ए-निकास रहा।

हमको भी उससे है उम्मीद बहुत
रहा बे-हाल पर पुर-आस रहा।

तल्ख़ हैं मेरे तजरबात मगर,
दोस्तों पर बना विश्वास रहा।

ज़िन्दगी का सबक मिला जिससे,
वो वाक़िआ[4] था बहुत ख़ास रहा।
[4] घटना

दुआ-सलाम से कतराता है,
एक दीवाना **महव-ए-यास**[5] रहा।
[6] दुःख में डूबा

सफ़र में जो है **बे-सर-ओ-सामाँ**[7],
वही रह-ज़न[8] से **बे-हिरास**[9] रहा।
[7] बिना सामान [8] लुटेरा [9] नही मुक्त

गाँव शायद ही कल दिखे 'गौतम',
तेज़-रफ़्तार गर विकास रहा।

160: जन्नत का फल है लोग इसे कहते आम हैं

जन्नत का फल है लोग इसे कहते आम हैं,
हर-दिल-अज़ीज़[1] है सभी इसके ग़ुलाम हैं।

[1]सबका प्रिय

लंगड़ा[2] है बनारस का पर जाता है दूर तक,
सर पे इसे उठाए हुए ख़ास-ओ-आम हैं।

[2]आम की एक नस्ल

कलमी[3] है दशहरी[4] ये ख़ास मलिहाबाद का,
इसके मुरीद तो इसे करते सलाम हैं।

[3]कलम से तैयार पेड़ [4] आम की एक नस्ल

साक़ी बहुत हैरान, परेशान, ख़फ़ा है,
चौसा[5] को रिंद चूस कर रख देते जाम हैं।

[5] आम की एक नस्ल

तोतापुरी या रसपुरी, हापुस या सिंधुरा[6],
सारे के सारे आम क़ाबिल-ए-ईनाम हैं।

[6] आम की नस्लें

अमरस[7] बना के रखते हैं इसको संभालकर,
जब आम नहीं हों तो लेते इससे काम हैं।

[7]सुखाया हुआ आम का रस

होता है पुर-मिठास ला-जवाब इस-क़दर,
बाकी फलों पे लोग लगाते विराम हैं।

एक खाट हो और बाल्टी भर भीगे देसी आम,
अमराइयाँ फिर गर्मियों में पहलगाम हैं।

मोहताज है अब आम की एक फाँक का 'गौतम' ,
करते हैं स्वाद याद फिर करते कलाम हैं।

161: हमने अपना बयाँ कहा होता

हमने अपना बयाँ कहा होता,
ज़बाँ पे सबके क़हक़हा होता।

बोलने का अगर मौका देते,
बे-ज़बाँ ने भी कुछ कहा होता।

रू-ब-रू बैठते कभी आकर,
ग़ौर से सुनते जो कहा होता।

हाल-ए-दिल पूछा नहीं अच्छा किया,
दर्द फिर और मुंतहा[1] होता।

[1] अधिक गहरा

सवार सर पे न वाइज़ होता,
हमने उसको ख़ुदा कहा होता।

जो भी है वो है सिर्फ़ होने से,
ख़ुदी[2] न होती, न तन्हा होता।

[2] स्वाभिमान

बे-असर तो नहीं है तीर-ए-नज़र
और क्यों पास अस्लहा[3] होता।

[3] हथियार

पस-ए-हिजाब न अगर होते,
कोई हंगामा बारहा होता।

दफ़्न जो हो गए गुमनामी में,
कहाँ उनका है फ़ातिहा[4] होता।

[4] शांति पाठ

याद हमको वो कर रहे होंगे,

कुछ नहीं है तो क्यों शुबहा होता।

एक मैं ही नहीं सब कहते हैं,
अच्छा ही होता कम-कहा होता।

आदतन रहते हैं ख़फ़ा 'गौतम',
और क्या ज़्यादा सानहा[5] होता।

[5] हादसा

162: नहीं मिलते हैं दो किनारे हैं

नहीं मिलते हैं दो किनारे हैं,
दरिया बहते इसी सहारे हैं।

इश्क़ में लोग स्वाद लेते हैं,
अगरचे अश्क होते खारे हैं।

शब-ए-फ़िराक़ के सभी लम्हे,
हमने तन्हा कहाँ गुज़ारे हैं।

ज़िन्दगी होती नहीं ला-फ़ानी[1],
किसलिए करते इस्तिख़ारे[2] हैं।

[1] अमर [2] शुभ-अशुभ की जिज्ञाशा

हिज्र में अपना ग़म नहीं हमको,
बहुत उदास चाँद-तारे हैं।

सुब्ह-दम निकले लौटने के लिए,
और कहते रहे बंजारे हैं।

राख जैसे बुझे से चेहरे हैं,
दिल में जलते हुए अंगारे हैं।

मिल गए तो दुआ-सलाम किया,

निभाए जाते भाई-चारे हैं।

साथ जाते हैं लोग चार क़दम,
कूच के जब बजे नक़्क़ारे हैं।

काम कोई अटक गया होगा,
बाद मुद्दत के वो पधारे हैं।

पार एक रोज़ वो भी जायेंगे,
अभी बैठे जो इस किनारे हैं।

ज़बाँ पे लफ़्ज़ तल्ख़ हैं लेकिन,
नज़र में अलहदा इशारे हैं।

हाथ खाली हैं हमारे दोनों,
चाँद के पास सब सितारे हैं।

वक़्त ने ज़ख़्म सुखाए 'गौतम',
हमने नाखून से निखारे हैं।

163: कहा शोख़ से था दुआ दीजिए

कहा शोख़[1] से था दुआ दीजिए,
कहा शोख़ ने मुद्दआ[2] दीजिए।
[1]चंचल प्रिय [2]उद्देश्य

नहीं है सितम से शिकायत कोई,
ज़रा मोहलत-ओ-कुआ[3] दीजिए।
[3]सामर्थ्य

करें याद क्या हादसे जो हुए,
रहे याद ख़ुश-वाक़िआ[4] दीजिए।
[4]सुखद घटना

नहीं ज़ुल्मत-ए-शब[5] से कोई गिला,
बस उम्मीद की एक शुआ[6] दीजिए।
[5]कली रात [6]किरण

अगर तेरी शोहरत के बाइस हुए,
मेरे नाम कुछ इद्दआ[7] दीजिए।
[7]आरोप

हुआ जो हुआ ग़म न करिए कोई
अजी ख़ाक में जो हुआ दीजिए।

नहीं चारागर की ज़रूरत कोई,
मेरे दस्त से दस्त छुआ दीजिए।

फ़क़ीराना 'गौतम' की फ़ितरत हुई,
मरे तो कफ़न गेरुआ दीजिए।

164: दास्ताँ मुख़्तसर सुनानी थी

दास्ताँ मुख़्तसर[1] सुनानी थी,
तवील-तर[2] हुई, नादानी थी।

[1] छोटी/संक्षेप [2] लम्बी से लम्बी

ग़ौर से सुनते सुनते सोए हैं,
बंद आँखें थीं, नींद आनी थी।

किसलिए एतिबार हम करते,
उसके वादे में आना-कानी थी।

हासिल-ए-कुन[3] है दाग-ए-रुस्वाई,
मिली बरा-ए-मेहरबानी थी।

[3] हस्तगत

बात रूमानी थी या रूहानी,
दे रही सिर्फ़ ख़ुश-गुमानी थी।

मिले मानूस[4] अजनबी की तरह,
नहीं हमको हुई हैरानी थी।

[4] जाना-पहचाना

तर्क-ए-दोस्ती नहीं की थी,
दोस्ती हमको आज़मानी थी।

कह दिया कुछ किसी दीवाने ने,
लिए अफ़्कार[5] हर पेशानी थी।

[5] चिंता की रेखाएँ

इश्क़ जब तक नहीं हुआ 'गौतम',
बड़ी आसान ज़िंदगानी थी।

165: बहुत बा-ख़बर है, वो बेदार है

बहुत बा-ख़बर है, वो बेदार[1] है,
सुबह रोज़ पढ़ता वो अख़बार है।

[1] होश

फ़िकर में उसे सारा दिन देखिए,
फ़क़त वो ही तन्हा ज़िम्मेदार है।

भरोसा वो ख़ुद पे भी करता नहीं,
अगरचे वही सबका मुख़्तार[2] है।

[2] अधिकार संपन्न

जुदा उसकी पहचान है भीड़ में,
जुदा उसका अंदाज़-ओ-अफ़कार[3] है।

[3] तरीका और चिंतन

उसे ख़ौफ़ अपनों से होने लगा,
नहीं साथ उसके कोई यार है।

तवज्जोह[4] नहीं चारागर दे रहे,
किया इश्क़ ने उसको बीमार है।

[4] ध्यान

मुझे मेरा साया सा वो लग रहा,
वो लाचार भी है वो मिस्मार[5] है।

[5] तबाह हाल

बुलाए बिना जाता 'गौतम' नहीं,
अभी उसके कूचे में कुछ वक़ार[6] है।

[6] सम्मान

166: हमारा नाम गुमशुदा में दर्ज हो जाए

हमारा नाम गुमशुदा में दर्ज हो जाए,
हमारी ख़ैर-ख़बर एक फ़र्ज़ हो जाए।

ज़िंदगी सर्फ़-ए-बेजा[1] गई ख़सारे[2] में,
देर से ही सही थोड़ा ख़ुद-ग़र्ज़ हो जाए।

[1] व्यर्थ व्यय [2] हानि

बे-वजह वो नहीं अब हाज़िरी लगाते हैं,
चाहता हूँ मैं फिर मिलने की ग़र्ज़ हो जाए।

चारागर लेके हमें जा रहा कू-ए-जानाँ,
आरज़ू उसकी है तस्दीक़-ए-मर्ज़[3] हो जाए।

[3] रोग का पता

मिला अगर तो मेरा हाल-चाल पूछ लिया,
क्यों यही दोस्ती का तौर-ओ-तर्ज़ हो जाए।

ये तमन्ना है अगरचे कोई उम्मीद नहीं,
मेरा कलाम उस ज़बाँ से अर्ज़ हो जाए।

कशमकश जीने की लिए है ज़रूरी 'गौतम',
ज़िंदगी क़ैद है तो क़ैद-ए-फ़र्ज़[4] हो जाए।

[4] बंदी (जीवन) का कर्तव्य

167: दर्द बढ़ता रहा हफ़्ता-हफ़्ता

दर्द बढ़ता रहा हफ़्ता-हफ़्ता,
साँस चलती रही रफ़्ता-रफ़्ता।

देख अंदाज़-ए-बेरुख़ी सबकी,
रह गई दिल की बात ना-गुफ़्ता[1]।

[1]अनकही

कर लिया एतबार वादे पर,
और फिर हो गया दिल आशुफ़्ता[2]।

[2]दुखी

कभी मंज़िल की बात करते नहीं,
सफ़र में हैं मिले सफ़र-गिरफ़्ता[3]।

[3]यात्रा में व्यस्त

बेख़बर दरिया को मालूम नहीं,
बह गया कितना आब-ए-रफ़्ता[4]।

[4]बह गया पानी

दिल लगा मेरा दश्त-ओ-सहरा में,
अपने जैसे ही मिले वारफ़्ता[5]।

[5]आत्मविस्मृत

रहिए ख़ामोश उसकी महफ़िल में,
रखिए हर बात को दिल में ख़ुफ़्ता[6]।

[6]छिपा हुआ

आतिश-ए-इश्क़[7] है बला देखो,
कितना बेचैन है जिगर-तुफ़्ता[8]।

[7]प्यार की आग [8]फुंका दिल

किसलिए जाते सू-ए-मयख़ाना,
ख़याल-ओ-ख़्वाबों में हैं ख़ुद-रफ़्ता[9]।

[9]मस्त/डूबा हुआ

लौटकर आते नहीं हैं 'गौतम',
याद बस आते हैं अहद-ए-रफ़्ता[10]।

[10]गुजरा हुआ समय

168: गर एतिमाद से इल्ज़ाम लगाया जाए

गर एतिमाद[1] से इल्ज़ाम लगाया जाए,
ये इल्तिजा है सर-ए-आम लगाया जाए।

[1]भरोसा

जवाब दे गए होश-ओ-हवास आलिम[2] के,
तो एक बार अक़्ल-ए-ख़ाम[3] लगाया जाए।

[2]विद्वान [3]सामान्य ज्ञान

ख़लल[4] न डाले कोई नाला[5] नींद में उसकी,
ब-हर-मक़ाम[6] ये अहकाम[7] लगाया जाए।

[4]बाधा [5]चीख/रोना [6]हर स्थान पर [7]निर्देश

हिसाब-ए-सफ़र बीच राह में नहीं वाजिब,
हिसाब यह शब-ए-क़याम[8] लगाया जाए।

[8]रुकने की रात

बुलंद हौसला लेकर हैं तह-ए-बाम[9] खड़े,
कमंद-ए-ज़ुल्फ़[10] को अज़-बाम[11] लगाया जाए।

[9]मुंडेर के नीचे [11]बालों की रस्सी (लम्बे बाल) [11]मुंडेर से

दहर[12] बाज़ार है हर चीज़ यहाँ मिलती है,
शर्त बस ये है सही दाम लगाया जाए।

[12]संसार

माना अंदाज वक़्त का नहीं आसाँ 'गौतम',
फिर से अंदाज़ा-ए-इल्हाम[13] लगाया जाए।

[13]ऊपर वाले की इच्छा का अनुमान

169: फिर से कोई तोहमत डाली जाएगी

फिर से कोई तोहमत डाली जाएगी,
दुआ हमारी कब तक खाली जाएगी।

आज सभी के दिल में ये उत्सुकता है,
किसके दिल की ख़ाम-ख़याली[1] जाएगी।
[1]गलत अनुमान

सुनकर सब ज़रदार[2] बहुत बेचैन हुए,
जल्द मुफ़लिसों[3] की कँगाली जाएगी।
[2]धनी [3]निर्धन

भीड़ जा रही है फिर सू-ए-मय-ख़ाना,
बुझी तबीअत वहाँ संभाली जाएगी।

बे-हिजाब दीदार चाहने वालों की
पहले नीयत देखी-भाली जाएगी।

दीवाने बा-ख़ुशी और बदहाल हुए,
सुना किसी की बात न टाली जाएगी।

सब को शब भर नींद बराबर से आए,
क्या इसकी तरकीब निकाली जाएगी।

सफ़ में ख़ामोशी भी है, सरगोशी भी,
नज़र कहाँ आक़ा-ए-आली[4] जाएगी।
[4]बड़े व्यक्ति की दृष्टि

170: सिर पे सूरज ढोते-ढोते दिन गया

सिर पे सूरज ढोते-ढोते दिन गया,
अनमना ही सू-ए-घर[1] साकिन[2] गया।
[1]घर की ओर [2]रहने वाला

उँगलियों की पोर पे गिनते हुए,
बे-वजह बाज़ार वो हर-दिन गया।

शाम को लौटा बिना दीदार के,
कू-ए-जानाँ[3] हर सुबह लेकिन गया।
[3]प्रिय की गली

या-ख़ुदा उसको भी सोने दीजिए,
अल-सहर[4] बेचारा मोअज़्ज़िन[5] गया।
[4]बहुत सुबह [5]अज़ान देने वाला

वस्ल की चिंता न फ़िक्र-ए-हिज्र की,
रात भर वह जानिब-ए-बातिन[6] गया।
[6]अपने अंदर देखना

रात फिर बीती बदलते करवटें,
फिर यूँही हंगामा-हा-ए-दिन[7] गया।
[7]दिन का शोर

ग़म नहीं है उसके जाने का मगर,
बिन बताए किसलिए मोहसिन[8] गया।
[8]उपकार करने वाला

हाथ दो खाली रहे 'गौतम' तेरे,
सोचिए कब कैसे साल-ओ-सिन[9] गया।
[9]समय और उम्र

171: मानूस तक शहर में मुझे अजनबी लगा

मानूस[1] तक शहर में मुझे अजनबी लगा,
हैराँ हूँ अजनबी क्यों नहीं अजनबी लगा।

1 परिचित

दैर-ओ-हरम पे बात वो करने लगा मुझसे,
ख़ामोश जब तलक था नहीं मज़हबी लगा।

नासेह पीछे पीछे था मय-ख़ाने तक आया,
कमबख़्त हमें बे-वजह हम-मशरबी[2] लगा।

2 साथ पीने वाला

सहरा[3] में एक सराब[4] की ख़ातिर भटक रहा,
दीवाना वो पुर-अज़्मत-ए-तिश्ना-लबी[5] लगा।

3 रेगिस्तान 4 मृगमरीचिका 5 प्यास से गर्वान्वित

मुद्दत के बाद आया अयादत के बहाने,
फ़ुर्सत से यार बैठा हुआ मतलबी लगा।

बीमार-ए-इश्क़ को मिली नसीहत-ए-बेजा,
उसको तबीब जो भी मिला मौलबी लगा।

हमने कलाम अपना सुनाया नहीं उसे,
संजीदा थे हम वो हमें ख़ंदा-लबी[6] लगा।

6 हंसोड़

हम उसकी बारगाह[7] में कुछ कह नहीं पाए,
अंदाज़-ए-गुफ़्त-ओ-गू[8] वहाँ का साहबी लगा।

7 दरबार (महफ़िल) 8 बात करने का तरीका

करते रहे रक़ीब से वो ग़ुफ़्त-ओ-गू 'गौतम',
अंदाज़ उसका मिलने पर था मरहबी[9] लगा।

9 स्वागत करता हुआ

172: लाख चाहा नहीं आदत जाती

लाख चाहा नहीं आदत जाती,
नहीं दीवाने की वहशत[1] जाती।

[1]पागलपन

बात आई समझ में दिल देकर,
इश्क़ में सिर्फ़ है लागत जाती।

ज़िक्र क़ातिल का नहीं करते हैं,
उसके चेहरे की है रंगत जाती।

मौत का लेते हम एहसान अगर,
ज़िंदगी जाती पर वक़अत[2] जाती।

[2]प्रतिष्ठा

गिला-गुज़ार[3] हो गए होते,
हाथ से सबकी रफ़ाक़त[4] जाती।

[3]शिकायत करने वाला [4]दोस्ती

कूचा-ए-जानाँ[5] से हरम[6] जाता,
सनम-परस्त[7] की इज़्ज़त जाती।

[5]प्रिय के घर से [6]मस्जिद [7]प्रिय की पूजा करने वाला

आके मक़्तल[8] में दोस्त क़ातिल से
कभी मांगी नहीं मोहलत जाती।

[8]वध-स्थल

कशमकश गर नहीं कोई होती,
उम्र जो जाती बे-लज़्ज़त जाती।

रू-ब-रू होते वो अगर 'गौतम',
जान क्यों मेरी ब-दिक़्क़त जाती।

173: एक लम्हा उम्र-भर ठहरा रहा

एक लम्हा उम्र-भर ठहरा रहा,
चंद यादों का लगा पहरा रहा।

क्या निहाँ है इज़्तिराब-ए-बहर[1] में,
बारहा साहिल से है टकरा रहा।
[1]समुद्र की बेचैनी में

गुफ़्तुगू मुमकिन नहीं होती कभी,
गर ज़बाँ पर ज़ोर-ए-फ़िक़रा[2] रहा।
[2]कटाक्ष का जोर

रू-ब-रू आने का वादा कर दिया,
जान पर दीवानों की ख़तरा रहा।

भर गया दिल कू-ए-जानाँ से कभी,
सैर करने के लिए सहरा रहा।

रिंद से मिलने गया नासेह क्यों,
लौट कर आया तो मुँह उतरा रहा।

उसके दिल में है बची उम्मीद कुछ,
आस्ताँ[3] पर यार के दोहरा रहा।
[3]ड्योढ़ी

सज गया तो पलकों पे मोती हुआ,
बह गया तो आब का क़तरा रहा।

हो गया फ़रज़ी तो 'गौतम' देखिए,
किस क़दर वह प्यादा है इतरा रहा

174: तमाशे कम नहीं हुए हैं न तमाशाई

तमाशे कम नहीं हुए हैं न तमाशाई,
बात होती है मगर होती नहीं गहराई।

मुझे मालूम नहीं होगा क्या तामीर[1] यहाँ,
खड़ी दीवार मिली, थी जहाँ भरनी खाई।

[1] *निर्माण की योजना*

वो शख़्स वादे पर करता है एतबार नहीं,
अगरचे रात भर है आँख नहीं झपकाई।

सबको आगाह संभलने के लिए करता था,
फिसलते देखा उसे थी नहीं जहाँ काई।

वक़्त-ए-दीदार भी पस-ए-हिजाब रहते हैं,
इश्क़ में हुस्न की देखी है हमने आक़ाई[2]।

[2] *मन-मर्जी*

याद करते ख़ुदा को देखा है दीवानों को,
काम नासेह का करता है बुत-ए-हरजाई।

लगाम आरज़ू-ओ-ख़्वाहिशों पे रखनी है,
सबक़ रोज़ाना सिखाती है यही मंहगाई।

हम नहीं दोस्तों से करते कभी शिकवा-गिला,
कभी ज़ुल्मत[3] में नहीं साथ देती परछाई।

[3] *अँधेरा*

जिसे मरने की भी फ़ुर्सत नहीं होती 'गौतम',
ऐसे मसरूफ़[4] से तो ज़िंदगी है बाज़-आई[5]।

[4] *व्यस्त* [5] *तंग आना*

175: बिना धुआँ किए सुलगता है

बिना धुआँ किए सुलगता है,
हवा मिले तो दिल दहकता है।

वक़्त गुज़रा हुआ नहीं आता,
वक़्त पर एक दिन बदलता है।

सुब्ह-दम निकल गया है सूरज,
आज देखें कहाँ पहुँचता है।

छाँव में जिसकी लोग बैठेंगे,
धूप में वो शजर झुलसता है।

बैठ जाता है गर उफन कर खूँ,
रगों में किसलिए उबलता है।

बर्क़[1] करती है काम लम्हे में।
अब्र क्यों देर तक गरजता है।

[1] *आसमानी बिजली*

कोई मजबूरी तो रही होगी,
वादा कर के अगर मुकरता है।

मुद्दा सुलझाने थे बैठे आलिम,
और ज़्यादा गया उलझता है।

दिन मे आराम कुछ हुआ 'गौतम',
दर्द फिर रात में उभरता है।

176: ख़फ़ा को और न ख़फ़ा करिए

ख़फ़ा को और न ख़फ़ा करिए,
मु'आमला रफ़ा'-दफ़ा' करिए।

आईना पोंछ कर है देख लिया,
ज़रा चेहरे को भी सफ़ा करिए।

ज़बान मुँह में सभी रखते हैं,
गुफ़्तुगू में ज़रा वक़्फ़ा[1] करिए।
[1]ठहराव (बोलते हुए रुकना)

जान जाए तो कू-ए-जानाँ में,
मक़ाम[2] इश्क़ में अरफ़ा[3] करिए।
[2]स्थान [3]ऊँचा

इश्क़ है इश्क़ कोई सौदा नहीं,
जिसमें उम्मीद-ए-नफ़ा करिए।

उससे दीवानों की गुज़ारिश है,
कम नहीं जोश-ए-जफ़ा[4] करिए।
[4]सताने का जूनून

मेहर[5] की दिल में आरज़ू है तो,
पेश पहले कोई तोहफ़ा करिए।
[5]कृपा

इश्क़ का मरज़ लग गया है तो,
नहीं उम्मीद-ए-शफ़ा[6] करिए।
[6]उपचार की कामना

ये सियासत ने सिखाया 'गौतम',
वादा तो करिए मत वफ़ा करिए।

177: लग रहा एक ख़्वाब देखा है

लग रहा एक ख़्वाब देखा है,
रू-ब-रू बे-नक़ाब देखा है।

यक़ीन तिश्ना-लबी[1] का करते,
चश्म लेकिन पुर-आब[2] देखा है
[1]प्यास [2]पानी से भरा

क्या वो होता है परेशान कभी,
क्या किसी ने जनाब देखा है।

दर-ओ-दीवार किसलिए देखें,
हमने ख़ाना-ख़राब[3] देखा है।
[3]बे-घर

सू-ए-मयख़ाना जाने वाले को,
हमने भी इज़्तिराब[4] देखा है।
[4]बेचैन

फिर किसी ने किया गिला शायद,
फिर उसे पुर-इताब[5] देखा है।
[5]गुस्से में

ये है महफ़िल या बारगाह[6] कोई,
बहुत अदब-आदाब देखा है।
[6]दरबार/अदालत

याद आता नहीं हमें 'गौतम',
कब उसे ला-जवाब[7] देखा है।
[7]निरुत्तर

178: अगर दीवाना हो जाए तो वीरानों में रहता है

अगर दीवाना हो जाए तो वीरानों में रहता है,
पहेली जैसा हो जाने पे अफ़सानों में रहता है।

सुनाई देती है आवाज़ रोने की मुझे हर शब,
मेरे अन्दर है कोई जो अज़ा-ख़ानों[1] में रहता है।
[1]शोक-गृह

मैं हूँ काफ़िर बरा-ए-मेहरबानी कोई समझा दे,
ख़ुदा है अलहदा कैसे जो बुतख़ानों में रहता है।

मोहब्बत ख़ास होगी रिंदों से नासेह को शायद,
वह उनके साथ सारी रात मयख़ानों में रहता है।

शिकायत हो गई है मेरे ही दिल को कोई मुझसे,
मुझे वो अनसुना करता है, बेगानों में रहता है।

बहारों में भी अब कोई चमन में गुल नहीं मिलता,
वो गमले में या जूड़े में या गुलदानों में रहता है।

कभी भी एक का होकर नहीं रहता कोई 'गौतम',
वजूद-ए-फ़र्द[2] इन्साँ का कई ख़ानों[3] में रहता है।
[2]अस्तित्व [3]हिस्सों में

179: दिल ने फिर आज बग़ावत की है

दिल ने फिर आज बग़ावत की है,
यार से मिलने की चाहत की है।

साथ नासेह को बिठाए है,
रिंद ने हद्द-ए-मुरव्वत[1] की है।
[1] *अत्यधिक मेहरबानी*

तबीब[2] जाने दे कू-ए-जानाँ,
ठीक तूने अगर सेहत की है।
[2] *चिकित्सक*

मुझे आवाज़ दी है मक़्तल[3] से,
मेरे क़ातिल ने इनायत की है।
[3] *वध-स्थल*

याद आया मेरा अदू[4] मुझको,
यार से फ़ैज़-ए-सोहबत[5] की है।
[4] *शत्रु* [5] *संगत का आनंद*

आरज़ू है वो देखकर जाए,
एक आशिक़ की जो हालत की है।

मिलने-जुलने का बहाना होगा,
सोचकर हमने अदावत[6] की है।
[6] *दुश्मनी*

ग़म नहीं क्यों मुझे दीवाना कहा,
बात उसने मेरी बाबत की है।

वह इसे शिकवा समझ लेते हैं,
बात हमने करी शोहरत की है।

निकल गए बिना सलाम किए,
मेरी हस्ती यूँ बे-इज़्ज़त की है।

मौत से है बची उम्मीद हमें,
ज़िंदगी ने बड़ी आफ़त की है।

साँस जाने को हो, वो आने को,
उस घड़ी ने बड़ी दिक़्क़त की है।

वक़्त-ए-हिज्र सोने वालों की,
उसने दुनिया से शिकायत की है।

उसको गिनता नहीं हूँ यारों में,
तौलकर जिसने दोस्ती की है।

लोग अब जानते हैं 'गौतम' को,
इश्क़ ने पूरी ये हसरत की है।

180: बे-हौसला तो हाथ की लकीर को देखें

बे-हौसला तो हाथ की लकीर को देखें,
पुर-हौसला हैं गर नई तदबीर को देखें।

बस सब्र करें काम निकल आने दें कोई,
फिर तल्ख़-ज़बाँ[1] में शहद-ओ-खीर को देखें।
[1] कड़वी बोली

अब आज की तस्वीर पर न तब्सिरा[2] करे,
कल की बनाई जा रही तस्वीर को देखें।
[2] टिप्पणी

माहौल बहुत सर्द वो होने नहीं देगा,
आतिश-नवा[3] है गर्मी-ए-तक़रीर[4] को देखें।
[3] आग भरी आवाज़ वाला [4] भाषण की गर्मी

ख़ुश हो रहे हैं लोग सभी ख़्वाब देखकर,
उनसे न कहें ख़्वाबों की ताबीर[5] को देखें।
[5] स्वप्न-फल

महफ़िल में गुफ़्तुगू हुई दीवाने को लेकर,
उसको अता करी गई तौक़ीर[6] को देखें।
[6] सम्मान

आते वो कैसे समय से बैठे थे मुसाहिब[7],
नाराज़ न हों बाइस-ए-ताख़ीर[8] को देखें।
[7] चापलूस [8] विलम्ब का कारण

गर्दन न जाने आज उतारी गई किसकी,
आलूदा-लहू[9] आब-ए-शमशीर[10] को देखें।
[9] रक्त से सनी [10] तलवार की धार

देखें उन्हें जो कह रहे यह दौर है बेहतर,

या उनके साथ बैठे गिरह-गीर[11] को देखें।

[11]असहमत

'गौतम' रहा एहसान सरसरी निगाह का,
क्यों ग़ौर से वो नुक़्ता-ए-हक़ीर[12] को देखें।

[12]एक छोटी सी वस्तु

181: फ़साना-गो सही लेकिन हूँ बे-लगाम नहीं

फ़साना-गो[1] सही लेकिन हूँ बे-लगाम नहीं,
किसी का ज़िक्र फ़साने में है पर नाम नहीं।

[1]कहानी सुनाने/लिखने वाला

हमारे सामने आने से जो कतराते हैं,
मिले जो दफ़अ'तन[2] करते दुआ-सलाम नहीं।

[2]अचानक

मैं आदतन चला जाता हूँ कू-ए-जानाँ में,
नज़र उठाता नहीं करता हूँ क़याम नहीं।

कोई भी आता नहीं छेड़ने तन्हाई में,
बहुत आराम है, दिल को मगर आराम नहीं।

किसी के काम नहीं आए आलिम-ओ-फ़ाज़िल[3],
बहुत ज़हीन हैं पर पास अक़्ल-ए-ख़ाम[4] नहीं।

[3]विद्वान/ज्ञानी [4]सामान्य ज्ञान

उसकी मंज़िल मेरी मंज़िल नहीं हो सकती है,
चले जो साथ हमारे गाम-दर-गाम[5] नहीं।

[5]कदम कदम मिलकर चलना

मैं अकेला ही नहीं एक भीड़ का हिस्सा,
मैं अकेला ही हूँ इस शहर में गुमनाम नहीं।

साथ रखते नहीं तस्वीर किसी की 'गौतम',
हमारे दिल में किसी तरह का औहाम[6] नहीं।

[6]अंध-विश्वास

182: इरादे जो किए थे उन पे अमल कर लेते

इरादे जो किए थे उन पे अमल कर लेते,
जो ख़्वाब देखे थे वो सारे दख़ल कर लेते।

ये लग रहा है रुक भी सकता था जाने वाला,
उसे गर रोकने की हम ही पहल कर लेते।

फिसलने देते नहीं वक़्त को कल हाथों से,
बिगड़ता काम नहीं पूरा ही कल कर लेते।

हम समझ पाए नहीं मौके की नज़ाकत को,
वगरना आप की तरह दल-बदल कर लेते।

मीर-ए-सफ़र[1] पे होता न भरोसा हमको,
तमाम रहज़नों को क्यों हम-बग़ल कर लेते।
[1] पथ प्रदर्शक

मेरी ख़ुद्दारी[2] अगर रोकती नहीं हमको,
सुर्ख़रू[3] लोगों की फिर हम भी नक़ल कर लेते।
[2] स्वाभिमान [3] सफल

कू-ए-जानाँ में अगर जाते शान-ओ-शौकत से,
यक़ीन है हमारा दिल वो मचल कर लेते।

उसे फ़ुर्सत नहीं है बात को समझने की,
सलाह लेने वाले सोच-सँभल कर लेते।

कोई उम्मीद नहीं करते हम क़यामत से,
हिसाब अपना अगर रोज़-ए-अजल[4] कर लेते।
[4] मृत्यु का दिन

ग़ौर से सबके तजरबात देखते 'गौतम',
इश्क़ न करते कोई और शग़ल[5] कर लेते।

5 *काम/गतिविधि*

183: हर दिन है क़यामत और हर रात क़यामत

हर दिन है क़यामत और हर रात क़यामत,
लगता नहीं है होगा जुदा रोज़-ए-क़यामत।

बीमार चारागर से माँगता है यह दुआ,
यह दर्द-ए-इश्क़ हो मेरा ता-उम्र सलामत।

दरयाफ़्त कर रहे हैं रक़ीबों से मेरा हाल,
उसको हमारी फ़िक्र बहुत है, ज़हे-क़िस्मत[1]।
[1] मेर सौभाग्य

करता हमें भी ग़म-ज़दा है हाल-ए-सिकंदर,
खाली था दस्त आँखों में था आब-ए-नदामत[2]।
[2] आँसू

दीदार दिया करते हैं अब गाहे-ब-गाहे[3],
लाज़िम[4] है साथ में रहे दीवानों का बहुमत।
[3] कभी-कभी [4] आवश्यक

बस चार क़दम दूर तक दें साथ आख़िरी,
कुल चार यार हैं बहुत लेने को ये ज़हमत[5]।
[5] जिम्मेदारी

कहते हैं लोग रहते हैं महफ़ूज़ भीड़ में,
तन्हा निकलने वालों पर ही आती है शामत।

ज़रदार[6] की औकात समझ आ गई 'गौतम',
मुफ़लिस[7] ने रोटियों की लगाई सही क़ीमत।
[6] धनी [7] निर्धन

184: बहस हुई थी ज़ोर-दार, धार-दार नहीं

बहस हुई थी ज़ोर-दार, धार-दार नहीं,
एक हंगामा हुआ वो भी असरदार नहीं।

बोलने के लिए बेताब तो हर आलिम था,
बात सुनने को दूसरे की था तैयार नहीं।

तमाशबीन एक राय थे इस बारे में,
भला हुआ, थी किसी हाथ में तलवार नहीं।

तर्ज़-ए-गुफ़्तुगू से हो गया ज़ाहिर सबको,
बोलने वाले हक़ीक़त से ख़बरदार नहीं।

ग़ौर से बात को सुनने की है फ़ुर्सत किसको,
और ऐसा भी नहीं है, कोई बेकार नहीं।

पेश हमने किए सुबूत बे-गुनाही के,
जिरह वो करने लगा कौन गुनहगार नहीं।

हम भी कतराते हैं जाने से आज-कल 'गौतम',
उसकी महफ़िल में कोई जाता समझदार नहीं।